के हंके हक्काय। केक चावहिसि धत्ते ॥
के पाइक्ल बर बांन। खग्ग भारी उठि नट्ठे ॥
के असवार करार। हीन कादूर है नट्ठे ॥
के गए मुक्कि पाइक्ल म्रगय। धीर छंटि तक्कार परन ॥
दिष्षयौ संग लंगावत्ती। बियौ न कोइ धीरज धरन ॥ छं ॥ ५ ॥

सिंह का महा क्रुद्ध होना।

सुनिव सूर बर हक्क। धक्क बज्जी चावद्दिसि ॥
नरन सद्द कानन प्रसद्द। सिंघ किन्नो सु क्रोध ग्रसि ॥
बीरा रसु बिफ्फुरिय। पुंछि सिर झारि झपट्टिय ॥
दीप नयन प्रज्जरिय। संग दिसि लगें लपट्टिय ॥
बल अतुल तोल तोरंत पय। बुल्यौ मन सद्दह गुहिर ॥
फटिय धरकि मानहु गगन। सिस सनेह संगन बहन ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ आपेटक दरसे सकल। सिसु सिंघनी बिच सिंघ ॥
स्वान देषि मुहु रव करत। ओलंघे नरसिंघ ॥ छं० ॥ ७ ॥

सिंह पर तीर का निशाना चूकना, पृथ्वीराज का तलवार से सिंह को मारना।

कवित्त ॥ सबै सेन अवसांन। मुक्कि लग्गौ बर तामस ॥
तब पंचानन हक्कि। धक्कि चहुआनां पामिस ॥
लै कमांन बिय बांन। षंचि नंष्यौ बिय चुक्यौ ॥
समर सिंघ सब सथ्थ। नथ्थ चावट्टिसि हुंक्यौ ॥
डंमरिय उहकि विज्जुल लहकि। षग कढ्ढौ सोमेसजा ॥
चंप्यौ नरिंद अवसान तकि। षंडो डारिय हथ्थना ॥ छं० ॥ ८ ॥
चंपि स्वामि बिफ्फुरिय। लोह संजुरि नग मुक्यौ ॥
लोहा लंगर राइ। बीर अवसान न चुक्यौ ॥
स्वामि सथ्थ परिबथ्थ। हंत धर बर उभ्भारे ॥
रुधिर अंग अंभ्भारिय। सिंघ मारिय अभ्भारे ॥
बन राय बीर बन चित्त हुव। सूर स्वामि श्रंमं सुरषि ॥

घर भंग बीर तब बज्जय । सबर जोर जम हक्कंति ॥ छं० ॥ ९ ॥

दूहा ॥ लंगे लोह उचाइ करि । अरु चावहिसि चाहि ॥
हथ्य आइ कर तीन दृढ । बर कमान कर साहि ॥ छं० ॥ १० ॥

कवित्त ॥ द्रढ कमान मुट्ठिय प्रमान । गह्यौ तकि तीन जोर कर ॥
बरकि बरकि बेगाल । चितन चंचल सु बोलि गुर ॥
गुंजि गरज भूभांन । अंग देवत्त रत्त जुध ॥
नचि निबेस तजि बाल । सिंघ सम बीर इक्क हुध ॥
आषेट तजिय चल्लिय सुभर । बिबिध सिंघ दिष्षन दिसा ॥
सम बीर बीर एकत भए । तहां दिष्यौ सोमेस जा ॥ छं० ॥ ११ ॥
षेध लग्गि छुटि बीर । सुबर दिषि बीर चष्ट क्रम ॥
सोमेसुर सुअ्र सूर । लयौ पर तैाजिम रचितम ॥
मुष्टि दिष्टि मरदां मरद । मिल्ले पंचानन सूरं ॥
पिता जात बेबंध । द्रव्य अधो अध पूरं ॥
चय भाग तक्किय सिंघह सुहय । तुला तुल लंगी चक्यौ ॥
उप्पमा चंद सुनि सुपन ज्यौं । सुबर बीर देषी दक्यौ ॥ छं ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की धूम धाम का वर्णन, पृथ्वीराज का एक पेड़ की छाया में अपने सरदारों के साथ बैठना ।

छंद पद्धरी ॥ आषेट रमत प्रथिराज रंग । गिरवर उतंग उद्यांन दंग ॥
उत्तंग तरुन छाया अकास । अंनेक पंषि कीडहिं हुलास ॥
सुब्बा सराष कुहे सुगंध । तहां भमत भौर बहु बास अंध ॥
फल फूल भार नमि लगी साष। नासा सुगंध रस जिह चाष ॥ छं० ॥ १३ ॥
पन्नग प्रचंड फूंकर फिरंत । देषंत नरह ते करत अंत ॥
अंनेक जीव तहां करत केलि । बट बिटपि छांह अवलंबि बेलि ॥
इक घाट विकट जंगल दुआर । तहा बीर रूष पिथ्थल कुंआर ॥
वामंग अंग चामंड राय । जुक्के न छुटि सौ काल घाइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
दाषिनि दिसा कन्हा सुजोध । सम अन्न सत्त सम नाहि क्रोध ॥
लोषांन छिहु बैठो प्रचंड । अंमार मोरी गम देन दंड ॥

बर संमस उर चंपि । नेत्र आकुलि सचिन्नौ ।
आचिज्ज देषि प्रथिराज तब । पक्काव्यौ पासर सघर ॥
धावर सु कन्ह चहुआन कौ । बोलि बीर चढ्यिग सघर ॥ छं० ॥ ३० ॥
मघर कघर करिवार । भार जिन जुद्ध कन्ह बर ॥
नरनाहां बर गढ । गाह गिर दीह दुमन धर ॥
मति जोतिग सहदेव । सगुन आगम गम जांनै ॥
प्रबल सिंघासन मारि । उथपि थप्प थिर थांनै ।
बिर दैत दमित आजांन भुग्र । उर किंवार वर बज्र जुग्र ॥
कुह न किमह जै क्रोध तजि । दुग्र मह्यिष निवारै भुजनि दुग्र ॥ छं० ॥ ३१ ।

पृथ्वीराज का इस सर्प की देवी के शकुन का फल पूछना ।

छंदपद्धरी ॥ आयौ सुमघर मघरन नरेस । जिहि सुनत चढि भगि जात देस ॥
उम्भिद अंग उत्तंग कंध । घर बाहु वज्र आरि धर असंध ॥
बेहथ अनाइय हथ्थ जाहि । पग दौरि बियन बर रख्यौ गाहि ॥
मह्यिषी सु उभय पय टांसि जाइ । कलहंत क्रोध दिष्षथ बलाइ ॥ छं० ॥ ३२ ।
रष्यन सु निजरि सब अग्ग पच्छ । चुक्कवै चोट हनि तुच्छ तच्छ ॥
छल छेद भेद नस करन राव । पर भूमि अप्प हस भरै दाव ॥
दुग्र सहस मघर जिन संग जोध । कमनैत काल अनमी अबोध ॥
बहु व्रषभ गाय मह्यिषीन तुंग । छेली छयल्ल गडरन्न पुंग ॥ छं० ॥ ३३ ॥
घुंमत मथांन जिन घरन घोर । आगम असाढ जनु घटा सोर ॥
बेपार दुग्ध जिन घरन षर्चे । अनभंग बुद्धि जिन समर चर्चे ॥
बिरदैत एक बांने न धार । चमरैन एक छूक नवल नार ॥
सिर बचै बिदर पग पच्छ देन । द्रिग समर देषि सिर लगत गैन ॥ छं० ॥ ३४ ॥
गुज्जर अहीर असि जानि दोइ । तिन लीह लोपि सक्कै न कोइ ॥
चाचिग षजूर कुंम्मार आइ । करियै हुकंम सिर त्यौं चढाइ
बुल्ले सुबैन चहुआंन राउ । कहि सगुन सर्प देवी प्रभाउ ॥ छं० ॥ ३५ ॥

ब्राह्मणों का फल बतलाना कि बिना युद्ध पृथ्वी से आपको बहुत धन मिलेगा ।

दूहा ॥ मघर कघर गति बैन कहि । ज्यों बुल्लै दुजबैन ॥
घरी एक सन्हौ रहै । तौ लभ्भै न्रप चैन ॥ छं० ॥ ३६ ॥

कुंडलिया ॥ मंने संभरि बार सुनि । इह अपुब्ब गति इच्छ ॥
मभ्भ्क रुदन घरि इक्क मैं । आवै भूमि रु लच्छि ॥
आवै भूमि रु लच्छि । पंषि माता इह सारी ॥
दल जित्ते पुरसांन । कित्ति जग ज्यों विसतारी ॥
इन सगुननि चहुआंन । तुच्छ दुष अतिचि अभन्नौ ॥
विन जुड्ड इह लग्ग । द्रव्य निकसै आभन्नौ ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ कुटिल दिष्ट तिन चिन्ह करि । कही मद्दर इक बात ॥
सो ब्रह्मा नन जांनई । बात भविष्यत घात ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पृथ्वीराज का देखना कि सर्प आधा बिल में है और आधा बाहर, उसके फन पर मणि के ऐसी देवी चारो ओर नाचती है और राजा पर प्रसन्नता दिखलाती है ।

कवित्त ॥ संभलि पिथ्थ कुमार । व्योम दिष्यौ स्रप सारिय ॥
अद्धौ बंबी मध्य । अद्ध उँचै अधिकारिय ॥
ता फनि ऊपर मनि प्रमांन । देवि चावद्दिसि नंचै ॥
दिष्यो इक्क मन मंडि । राज दिषि सगुनह संचै ॥
आवै न पच्छ तथ्थह निजरि । न्रपति हियं अत्यंत सुष ॥
जंपयौ मद्दर धावर धनू । सगुन बीर जांनै सरुष ॥ छं० ॥ ३९ ॥

देवी का इतने में उड़कर आम की डार पर बैठना और साग गिराना, पृथ्वीराज का बड़ा शकुन मानना ।

दूहा ॥ इतें देवि उडि बैठि अँब । चंच गिराइय साग ॥
दौरि मद्दिर तब चष्य किय । लै नरिंद तुअ भाग ॥ छं० ॥ ४० ॥

सर्प सर्पिनी का मिलना और वहां से दूसरी जगह उड़जाना ।

सर्प आंनि सर्पिनि मिलिय । भषु दीनौ तिन षाइ ॥
निय आसन थल छंडि कै । अन्न स्थल उड़ि जाइ ॥ छं० ॥ ४१ ॥
इह अचिज्ज पिष्षिय सकल । चाचिग पुछि फिरि बत्त ॥
तुम जांनो सब फल सगुन । मद्दर कद्दर मत तत्त ॥ छं० ॥ ४२ ॥

इस शुभ शकुन का फल वर्णन ।

छंद पद्धरी ॥ तत बत्त मद्धर तिन कही बत्त । या सगुन लाभ वरन्यौ न जत्त ॥
दिन तुच्छ मद्धि धन लाभ होइ । ता पच्छ कंक दुअ राह जोइ ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तुम जैत होइ भग्गो पलांन । धन जुद्ध लाभ लब्भै बखांन ॥
इह लगन महूरत इसो देव । पल भूमि अप्पि तो करै सेव ॥ छं० ॥ ४४ ॥
संसार कित्ति चहु चक्क होइ । बंदै सुवाह बल दीन दोइ ॥
सागुन्य सगुन फल कहे जब्ब । प्रमुदित्त मन चहुआंन तब्ब ॥ छं० ॥ ४५ ॥
जिम मेह मोर आनंद होइ । राका रयनि आनंद तोइ ॥
रिति राइ पाइ तरु फलत फूल । जिम सिद्ध सेव हिय हरत सूल ॥ छं० ॥ ४६ ॥
जिम मंत्र सक्ति साधक लहंत । रस धात रसाइन लहि चहंत ॥
जिम इष्ट लाभ आराध वंत । प्रमदा मुदित जिम आइ कंति ॥ छं० ॥ ४७ ॥
तिम भयौ सुष्ष प्रथिराज अंग । बजि पंच सब्द बाजै सुरंग ॥ ४८ ॥

शिकार बंद कर के बन में पृथ्वीराज का डेरा डालना ।

दूहा ॥ पंच सबद बाजिच बजि । तजि म्रगया चहुआंन ॥
कानन मध्य सु उत्तरिय । किन्नौ कुअर मिलांन ॥ छं० ॥ ४९ ॥

डेरों की शोभा, बिछौने पलंग आदि की तयारी वर्णन, पृथ्वीराज का शिकार की बातें करना, सरदारों का सत्कार करना, सब का ठंढा होना, भोजन की तयारी ।

छंद नाराचा ॥ कह्यौ मिलांन राजयं । बरंनि कब्बि राजयं ॥
फिरंग सू फनक्कसी । जरद्दु जंज रक्कसी ॥ छं० ॥ ५० ॥
सुवंन वंस राज्जतं । उभे सुमझ्झ मझ्झतं ॥
फिरंन सूर लग्गतं । अजब्ब जेव जग्गतं ॥ छं० ॥ ५१ ॥
गिरिद्द डोरि रेसमं । सुपंच रंगयं भ्रमं ।
तने तानव तंबुअं । करे सुपद्धरं भुअं ॥ छं० ५२ ॥
बिछाइ कैदुली चयं । धरे प्रजंक वीचयं ॥
सवारि सेज पथ्थरं । सुगंध फूल विथ्थरं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
गरम्म रूम तोसयं । ढक पलंग पोसयं ॥
कनंक मै सिंघासनं । अकादितं सुवासनं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

धरे सुपिट्ठ तक्किए । अतक्ष संत ढक्किए ॥
अगें अवन्नि अंगनं । सिका करै छिरकनं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
कुंमकुमा गुलावयं । सुनेक छंटि आवयं ॥
तषां सु बैठि पिथ्थयं । करै अषेट कथ्थयं ॥ छं० ॥ ५६ ॥
अनेक भंति चंदयं । पढै बिरद्द छंदयं ॥
सामंत सब्ब नम्मियं । मिलांन अप्प क्रम्मियं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सें हथ्थ चाहुआनयं । दए कपूर पानयं ॥
षवास पास वानयं । हजूर उभ्भ आनयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥
बिरष्ष बद्द जंबुअं । षिरन्न जद्द अंबुअं ॥
गयंद बंधि अंदुअं । झरंत मद्द बिंदुअं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
करंत केलि सारसी । मलष्ष ते महारसी ॥
बिरद्द नेंक बोलते । पलक्क चष्ष षोलतें ॥ छं० ॥ ६० ॥
महावतं पुकारतें । हठं न लै अहारतें ॥
पियंत नीर षों गरें । गरज्ज नभ्भ ज्यों गरें ॥ छं० ॥ ६१ ॥
कपोल लोल हल्लते । चबेल सुंड झल्लते ॥
गिलोल चोट लग्गतें । बिरष्ष ओट भग्गतें ॥ छं० ॥ ६२ ॥
दिपंत दंत.उज्जलं । पहार पंति कज्जलं ॥
ढुरद्द हद्द बेसके । दियें गनेस भेस के ॥ छं० ॥ ६३ ॥
सुपीलवान उभ्भयं । चरष्षि गड्डु षुभ्भयं ॥
करे तुरंग काइजं । भरें अमंन बाइजं ॥ छं० ॥ ६४ ॥
मिटै डरं पसीनयं । पलान दूरि कीनयं ॥
न्हवाइ नष्ष सिष्षयं । अक्कादि कंध रष्षयं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
रतव्व.दै प्रहासयं । करे चपन्न घासयं ॥
ता पच्छ जाइ साहनी । अरांम पंड बाभनी ॥ छं० ॥ ६६ ॥
कहूं करं भलारयं । भरी रषन्न भारयं ॥
अनूचरं उतारयं । संभारि ढार ढारयं ॥ छं० ॥ ६७ ॥
हुलास सेन उप्पजै । भोज्जंन भष्ष निप्पजैं ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सब लोगों के साथ पृथ्वीराज का भोजन करना।

दूहा ॥ करि मिलांन मध्यांन हुच। त्रिपति भोज हुच भंति ॥
एकन मिलि आहार हुच। रही न मन कछु चंति ॥ छं० ॥ ६९ ॥

संध्या होने पर सब लोग घर लौटे।

मादक में नउ द्दीप किय। बढ्ढि सुगंधन तार ॥
निसि आगम बहुरे ग्रहन। जित नित भूपन भार ॥ छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का घर पहुंच कर भूमि देवी (पृथ्वी) को स्वप्न में देखना।

चढि करि संभरि वार चलि। ग्रेह सपन्नौ जाइ ॥
अंधारी दारुन निसा। भू सुपनंतर आइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥

भूमि देवी के रूप सौन्दर्य का वर्णन।

कवित्त ॥ पीत बसन आरुहिय। रत्त तिलकावलि मंडिय ॥
छूटिय चंचल चाल। अलक गुंथिय सिर छंडिय ॥
सीस फूल मनिबंध। पास नग सेत रत्त बिच ॥
मनों कनक साषा प्रचंड। गहै काली उप्पंम रुच ॥
मनो सोम सहायक राह सोइ। कोटि भांन सोभा गही ॥
अदभूत द्रव्य ससि अहि गह्यौ। साष सुरंग भनावही ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज का पूछना कि तुम कौन हो और इस समय यहां क्यों आई हो।

दूहा० ॥ सुरंग त्रिया सोमो नृपति। वचन सुपन कहि लाल ॥
का तूं सुंदरि किन बरन। क्यों ऊभी इहि काल ॥ छं० ॥ ७३ ॥

भूमि देवी का कहना कि मैं वीरभोग्या हूं, मेरे लिये सुर असुर सब शंकित रहते हैं पर जो सच्चा वीर मिले तो मैं बहुत रस प्रवती हूं।

कवित्त ॥ बीर भाेग बसुमती। बीर भोगी वर चाहैं ॥
चाहै भाइ कटाच्छ। बीर बीरां मन साहैं ॥

बीरां थी पद्धरी। बिना बीरां बर बंकिय ॥
हुं दिव्य नारी एह। सुरां असुरांनह संकिय ॥
मिष्टांन पांन बहु भोग रस। रस सुगंध बीरन द्रश्री ॥
अनभंग बीर जोवित्त बरि। रस अनेक निहचै अश्री ॥ छं० ॥ ७४ ॥

गाथा ॥ पंक जमय नीवामं। सुपनंतर राज दिठ्ठायं ॥
जानिज्जै रति अंगं। कामं उक्काह दीपयं मालं ॥ छं० ॥ ७५ ॥

राजा का विचार में मग्न होना।

कवित्त ॥ मन लग्गौ बिसमित्त बिचार। राज चिंता उप्पंनिय ॥
भोमि बयन मन मझ्झ। सु कर बर गहि कर लिन्निय ॥
सुभ लच्छिन उत्तंग। अंग अंग गुन पिन्निय ॥
ता समांन छबि बांम। आंन करतार न किन्निय ॥
मानीक बंस दानव कुलह। भोमि चरन्न निवास करि ॥
जै जया सबद सुरपुर भयौ। करै केलि कलि इंद्र सर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज से भूमि का कहना कि षट्टू बन में अगनित धन है।

दूहा० ॥ कहै भूमि प्रथिराज सों। स्तुति दै करि मन सुद्धि ॥
बसै द्रव्य अगनित सगुन। षट्टू पुर बन मद्धि ॥ छं० ॥ ७७ ॥

अजयपाल चक्रवर्ती राजा द्वापर में था, उसने वहां असंख्य धन रक्खा है ॥

कवित्त ॥ अजैपाल चक्कवै। द्रुग्ग अजमेर द्वापरह ॥
तिहि बानिक पुर सिद्ध। लिषिय संजीत अपारह ॥
हेम कोटि दस हून। इन देवर धर मंझह ॥
घरी आइ इक पहर। देव देवी तत सुझ्झह ॥
असांन काल एजादि बह। तहं पत्तौ दुज राज बर ॥
अप्पी असीस मंगी लछिय। कांम कह्यौ दुजराज नर ॥ छं० ॥ ७८ ॥
इक्कासंहस अपि द्रव्य। फेरि बिप्रह अप्रमानं ॥
सुनी सलकि बर बिप्प। दई सुमषा बर थांनं ॥
फिरि पत्तौ तहां राज। दियौ तब स्राप दुज्जबर ॥

अप्प भयौ सुइ राज । रच्चै धन रष्षि गड्यौ धर ॥
सो मति द्रव्य तिहि थांन रषि । तास सोइ राजन करै ॥
पायौ न कोइ पैच्चै न को । यों अरत्त अर्जुन फिरै ॥ छं० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ को गड्डै पायौनि को । को विलसै करि भेव ॥
माया काया मध्य दिन । ज्यों विषया बल देव ॥ छं० ॥ ८० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके भूमिस्वपन नाम सप्तदशो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १७ ॥

अथ दिल्ली दान प्रस्ताव लिष्यते ॥

(अट्ठारहवां समय ।)

अनंगपाल के दूत का कैमास के हाथ में पत्र देना ।

दूहा ॥ दिय पत्री कैमास कर । अनँगपाल कहि दूत ॥
बर बंची सामंत सत । त्रिमत अष्यर नूत ॥ छं० ॥ १ ॥

पत्र में अनंगपाल का अपनी बेटी के बेटे पृथ्वीराज को लिखना कि मैं बूढ़ा हुआ, बद्रिकाश्रम जाता हूं, मेरा जो कुछ है सब तुम्हें समर्पण करता हूं ।

साटक ॥ स्वस्ति श्री अजमेर द्रोन दुरगे । राजाधिपो राजनं ॥
पुत्री पुत्र पवित्र पथ्थ अधनं । पित्री सर्व तावनं ॥
मा इच्छा इत्र विद्व तप्प सरनं । बद्री निवर्तं तनं ॥
आभूमं पुर ग्रांम हय गय समं । संकल्पितं त्वार्थयं ॥ छं० ॥ २ ॥

पत्र पढ़कर सब का बिचार करना कि क्या करना चाहिए ।

दूहा ॥ बंचि पत्र कैमास कर । न्टप सामंत समंत ॥
आइ दूत दिल्ली पुरह । सुबर बिचारहु मंत ॥ छं० ॥ ३ ॥

कोई कहता है कि दिल्ली चलना चाहिए, कोई कहता है पहिले पृथा कुंआरि का व्याह रावल समरसिंह के साथ करना चाहिए ।

चौपाई ॥ इक कहै दिल्लिय चल्लि राजं । मातुल बोलि तुमं प्रथिराजं ॥
इक्क कहै भगिनी परनाइय । समर सिंघ चित्रंग सुराइय ॥ छं० ॥ ४ ॥

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर नरिंद । चित्र चित्रंग देव दुति ॥
तिन सगपन संमुहौ । राज जानंत राज गति ॥
कै दिल्ली दिसि चल्लहि । बाल सेंवर अधिकारिय ॥
सोमेसर पितु सतें । करिय जिन बोल सुभारिय ॥

आवै न मंत विय बंध हत। अनँगपाल संमुह चलिय ॥
ता पच्छ प्रथा आगम सु प्रथ। देवमत्त व्याहं पुलिय ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा सोमेश्वर सब सामंतो को एकत्र कर परामर्श करता है कि क्या कर्तव्य है, पुंडीर राय ने सलाह दी कि आता हुआ राज्य न छोड़ना चाहिए।

सिन सामंत ह नृप्प। बैठि सब सथ्थय मंतर ॥
कैमासह चामंड। राय रामह बड गुज्जर ॥
चाहुलि राय हमीर। सलष पांमार जैत सम ॥
कह्यौ राज हम मात। तात अप्पी ढिल्ली नम ॥
पुंडीर राइ इम उच्चरै। करौ सकल आदर सुघर ॥
उप्पाइ अनंत मिह लिज्जियै। आदि ध्रंम अंमर असुर ॥ छं० ॥ ६ ॥

चंद बरदाई का मत पूछना।

चौपाई ॥ सब भट पुच्छि पुच्छि कवि चंदह। तुम बरदाइ लहौ बुधि कंदह ॥
किम अप्पै पितमात धरंनिय। सब बिरतंत कहौ मन करनिय ॥ छं० ॥ ७ ॥

चंद ने ध्यान कर के देवी का आह्वान किया और देवी की आज्ञा से कहा।

तब बरदाइ सुद्ध मन कीनौ। सुमरिय सकति ध्यांन मन लीनैन ॥
देवी आइ कह्यौ बर तंतं। सो अष्षै प्रथिराज सुमंतं ॥ छं० ॥ ८ ॥

व्यास ने जो भविष्यत बानी कही थी वह सुनाकर चंद का कहना कि आप का राज्य खूब तपैगा।

कवित्त ॥ पुब्ब कथा बरतंत। कहो व्यासह ज्यों चंदह ॥
सही भविष्यित बात। सुनी सो होइ नरिंदह ॥
तोंअर बद्री जाइ। पथ समप्पै चहुआंनं ॥
तपै तेज रवि जेम। कहों सरसें परवानं ॥
इह मत्त सत्त मन्नौ मनह। अह पुब्बह मंची सपुन ॥
सामंत सित्त धर ध्रंम रत। सों पुब्बहु सबहु अपुन ॥ छं० ॥ ९ ॥

दूत से पृथ्वीराज का पूछना कि नाना (?) को वैराग्य क्यों हुआ।

दूहा ॥ दूत हजूर बुलाइ करि। पुच्छत पिथ्थ कुंआर ॥
क्यों मातुल हुअ धर अरत। सो कहो सत्त विचार ॥ छं० ॥ १० ॥

दूत का अनंगपाल की प्रशंसा।

गाथा ॥ दिल्ली अनंग नरिंदं। दंदं दहन दुज्जनं दलनायं ॥
त्रिगुन तेज सुअंगं। पुहमी इंदं पहुमी सरनायं ॥ छं० ॥ ११ ॥

अनंगपाल का प्रताप कथन।

दूहा ॥ बंक न्रपति इक अंक लो। मिटत करभ्भर पांन ॥
इम इच्छै अवनी अटल। सचु न सुनियै कांन ॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ गज गज्जत दरबार। घुरत दमंम बहु धुअ ॥
बज्जत हय षुर तार। गाल गुज्जत सु डंट मव ॥
तंत तान झंझार। भमर गुंजार बास रस ॥
मुकट बंध राजान। लीन सेवंत हुकंम बस ॥
यों अवनि इंद्र तूअर तपै। कँपै रोर मौजन मनह ॥
चव बरन सरन सुष्षह रसहि। दुष्षन[1] किहिं दिष्षिय तनह ॥ छं० ॥ १३ ॥

अनंगपाल के राज्य में दिल्ली की शोभा वर्णन।

अनँगपाल तोंअर सुढाल। सोज वासंत दिल्लीय वर ॥
धर सुढार कालिंद पार। अठ्ठार व्रंन थर ॥
वर विहार प्रक्कार। विपन वाटिका बिराजिय ॥
ग्रिह उतांन वतांन। गोष जाली उच साजिय ॥
सब लोक असोक अनंद में। अप्प अप्प रह उह्लरिय ॥
जाजंन जाप अद्धा परवि। होम धोम ध्रु विथ्थुरिय ॥ छं० ॥ १४ ॥

अनंगपाल का वृद्धावस्था में सपना देखना कि सब तोंअर लोग दक्षिण दिशा को जा रहे हैं।

अति तोंअर परिवार। हद्ध बहु रिद्ध अनूपं ॥
ध्रंम क्रंम बहु रीति। चलै सब लोक सु कूपं ॥

(१)-मो०-दुषन।

बीर सेन सुत बीर । पाल बहु काल धरंभिय ॥
मन लग्गौ वैराग । करन क्रत ऊंच करम्भिय ॥
निसि मध्य सुपन पिष्षियै दुरय । सब तूंअर दच्छिन चलै ॥
आरत्त माल कंठह कुसुम । दूरि मग्ग षोनी मिलै ॥ छं० ॥ १५ ॥

स्वप्न से जागकर अनंगपाल का हरि स्मरण करना ।

अनँगपाल पहु सुपन । देषि अप्पन चल चित्तह ॥
हरि हरि हरि हरि चवै । इष्ट फुनि भून विहत्तह ॥
निसा जांम इक सेष । अप्प सुपनौ फुनि पिष्षिय ॥
अप्प तरुनि सम उट्ठि । तिथ्थ थानक तप दिष्षिय ॥
इह लष्षि चित्त चंमक्कि न्टपति । पांनी पाय अँदोलि अप ॥
नरसिंघ नाम जंपिय पृथुक । सुत पुन नहीं पवित्त वप ॥ छं० ॥ १६ ॥

दो घड़ी रात रहे स्वप्न देखा कि एक सिंह जमुनाजी के किनारे आया है, दूसरा उस पार से तैरकर आया, दोनों सिंह आमने सामने बैठ गए और प्रेमालाप करने लगे, इतने में नींद खुल गई, सबेरा हो गया ।

घटिय उभै निसि सेष । ताम सुपनौ फुनि पिष्षहि ॥
तट कालिंदी तीर । सिंघ क्रीडन दिव दिष्षहि ॥
ताम समै इक सिंघ । पार उत्तरि जल आयौ ॥
उभै स्यंघ सों मिल्या । नेह क्रीड़ा दरसायौ ॥
बैठो सुसिंघ हथ मंडि करि । बैठि सनंमुष सिंघ हुअ ॥
जग्गायौ बीर सिंघह सुतन । ताम सुपिष्षौ प्रात हुअ ॥ छं० ॥ १७ ॥

अनंगपाल का व्यास जगजोति को बुला कर स्वप्न का प्रश्न करना ।

तब तूंअर चित चक्रत । उट्ठि एकंत मंत हुअ ॥
हरि जोतिह जग जोति । बोलि दैवग्य तथ्य दुअ ॥
दिय आसंन तमोर । बचन आभासि भाव दिय ॥
कहौ सुपन विरतंत । आदि अंत कारंन तिय ।
संभलें सुपन मन दुज दुमन । देषि राज बुल्यौ न हसि ॥

छित करौं सब छंडौ दुमय । सब त्रिम्मान सुकाल बसि ॥ छं० ॥ १८ ॥

ब्यास ने ध्यान करके कहा कि दिल्ली में चौहान का राज्य होगा जैसे सिंह आया था, सो तुम भला चाहो तो अब तप करके स्वर्ग का रास्ता लो ।

तब दैवग्य विचारि । एक एकन मुष लोकिय ॥
सब गंठी त्रिम्मान । एक कारन चित दे किय ॥
कहैं सुनो सुत बीर । दिल्लि चहुआन निवासं ॥
ज्यौं दिष्यौ तुम सिंघ । मिल्लै तुंअर सम तासं ॥
तप सद्धि तुमह सद्धौ सरग । जो दृष्यौ उड्डुन अपन ॥
तुंअर विनास अग्गह अतुल । सब भविस्य कारन सुपन ॥ छं० ॥ १९ ॥

इस भविष्यबानी को सोचकर विचार करना कि दिल्ली का राज्य अपने दैाहित्र चैाहान को देना चाहिए ।

दूहा ॥ सबैं भविस्य बिचार मन । पुच्छि पुच्छ चहुआंन ।
तिहि अप्पों दिल्लिय सुदत । पसरै कित्ति प्रमांन ॥ छं० ॥ २० ॥

अनंगपाल का मन में यही निश्चय करलेना कि पृथ्वीराज को राज्य देकर बनबास करना चाहिए ।

कवित्त ॥ बालप्पन पन ज्ञांन । गनह त्रिद्धप्पन आयो ।
एक समे एकंत । चित्त परब्रह्म लगायो ॥
पुच्छ होइ संसार । भूमि रष्षै षल षंडै ॥
बढै बंस विसतार । कित्ति दसहूं दिसि मंडै ॥
अब करैां जोग जंगम जुगति । भुगति मुगति मंगो धरिय ॥
पुत्तीय पुत्त अप्पों पुहमि । इम चिंतन मन में धरिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

अनंगपाल का मंत्रियों को बुलाकर मत पूछना ।

छं० पद्धरी ॥ बोलेति मंत मंती प्रमांन । स्वामित्त भत्त जे अंग जांनि ॥
रामह सुराज चिंतै सदाय । धुर ध्रंम्म रूप बांनी बदाइ ॥ छं० ॥ २२ ॥
एकंत महल राजन बयठ्ठ । गुदराइ बोलि दरवांन नट्ठ ॥

संसार विरत मन दिष्षि राज। चीकह कुंभ जल बूंद भाज॥ छं०॥ २३॥
अग्यांन चित्त ज्यों दिट्ठ ग्यांन। लोभीय चित्त ज्यों धरि न ध्यांन॥
कुलटा सुनेंन नहिं लज्ज जेम। कपटीय मनह नहि प्रेम नेम॥ छं०॥ २४॥
बांनिक बनिज नहि प्रीति अंग। दिष्यौ सराज इन परि बिरंग॥
बुल्ले सु बिनय करि बैंन एव। ककु दुचित अज्ज मन लगत देव॥ छं०॥२५॥
प्रति बात कहिय अब हमहिं ईस। बिन पुच सचु संसार दीस॥
नृप वंस अंस जो पुच होइ। अवनीय अप्प रष्षेति सोइ॥ छं०॥ २६॥
पुची सपुच चहुआंन पिष्ष। तिन देउं राज मो सरन तिष्ष॥
मंचीन मंत तब कहिय राज। चव जुगनि जुगति जे भूमि काज॥छं०॥२७॥
जिहि जियत जीय धर रमै ओर। तिहि नृप नहीं कहि लोक ठौर॥
जनमंत पुब्ब जिन तप्प होय। करि कष्ट कष्ट तप भूमि जोइ॥ छं०॥ २८॥
धर पाइ राइ धर भ्रंम बढ्ढि। धर भ्रंम क्रम सुरलोक चढ्ढि॥
जो गंग जुगति कल कठिन कांम। कहु धंगधार बिश्रांम ठांम॥छं०॥२९॥
हम सीष मांनि अनंगेस राइ। भूमिय सु तजै सुष कित्त जाइ॥
मंचीन राज तब कहीय बत्त। मानों कि बैर गहि गुंग गत्त॥ छं०॥ ३०॥

मंत्रियों का मत देना कि राज्य बड़ी कठिनता से होता है इसे न छोड़ना चाहिए।

अरिल्ल॥ ते मंची जंपिय नृप बत्ते। किहि गुन राज भूमि अनुरत्ते॥
गत्ति अगत्ति जिन धर पर अष्षी। तिहि धरपति धर कबंहु न रष्षी॥ छं०॥३१॥

कवित्त॥ जो धरपति धर छंडि। भम्यौ नल राय हेत चिय॥
जो धरपति धर छंडि। तौ राम रष्षी न सीयत्तिय॥
जो धरपति छंडि। भमिय सुत पंड पंड बन॥
धर कारन बिक्रंम। कियौ कग्गामिष भष्षन॥
धर मंडि न छंडि अनंग नृप। तिष्थ भमब राजिंद तन॥
धर काज राज धर षंडियै। चिंत न दिष्षहि राज मन॥ छं०॥ ३२॥

मंत्रियों की बात न मानकर अनंगपाल का अजमेर पत्र भेजना।

अरिल्ल॥ कहिय मंच नह मनिय राय। लिषि कागद अजमेर पठाय॥

सुनि बत्ती नृप भर किल कानं । राका चंद उदधि परमानं ॥ छं० ॥३३॥

कवि चंद का मत सुनकर पृथ्वीराज का दिल्ली जाना निश्चय करना ।

दूहा ॥ सुनिय राज कवि चंद कथ । उर आनंद अपार ॥
पित मातुल मिहन नृपति । कियो सुगवन विचार ॥ छं० ॥ ३४ ॥

कैमास का भी यही मत होना ।

थपिय मत्त कैमास सोइ । धरनि धरत्तिय नथ्थ ॥
चढ़ि चहुआन सुसंचरिग । पुर दिल्लीय सँपत्त ॥ छं० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ सुनहि राज तुअर नरेस । एक बर बुद्धि विचारिय ॥
एक बनिक पाचार । सु वय अंगज तिह सारिय ॥
नाहि बाल वय नन्द । सील हत दुल्लभ लीनैा ॥
क्रम काल मन छुल्यौ । चित्त मति संत उपन्नैा ॥
अनंगेस राज तोंअर प्रगट । उद्द सुमत्ति जिन लेइ उर ॥
मम भूमि मुक्कि राज्यंद सुनि । भ्रंत धुरा रष्षै न धर ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत ने आकर समाचार दिया, पृथ्वीराज का धूम धाम से दिल्ली की ओर यात्रा करना ।

दूहा ॥ कही दूत सारी विवरि । आदि अन्त जो बत्त ॥
चढि चहुआंन सु संचरिय । जुग्गिनि पुर लै वत्त ॥ छं० ॥ ३७ ॥

चैापाई ॥ लै सम सूर चल्यौ चहुआंनं । जगत सूर देव प्रति मांनं ॥
सगुन सकल संमुष बनि आए । गयो राज दिल्ली समचाए ॥ छं० ॥ ३८ ॥
गयो राज दिल्ली परिमानं । मिले सूर अनंगेस निधानं ॥
देषि भूमि दिसि थांन प्रमानं । राजा सुष बल्यौ चहुआंनं ॥ छं० ॥ ३९ ॥

अनंगपाल ने दैाहित्र से मिलकर बड़ा उत्सव किया और अच्छा दिन दिखला कर दिल्ली का राज्य लिख दिया ।

दूहा ॥ मातुल पित भिंट्यो सु पहु । मिलि अति उच्छव कीन ॥
बासुर सुर रवि इंद बल । लिषि दिल्ली पुर दीन ॥ छं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज के राज्याभिषेक का वर्णन।

छंद उधोर ॥ पयो धर पाइ पाइय अंत। दस जुग मत रस गुरंत ॥
भाषंत चंद छंद उधोर। प्रति पग कवी पन्नग जोर॥ छं० ॥ ४१ ॥
लिषि वर घटी महूरत मत्त। दुज घन वेद विद्यस सत्त॥
आसन हेम पट्ट सुढार। मानिक मुत्ति दुत्ति उजार॥ छं० ॥ ४२ ॥
मंडित कलस विप्र विनोद। राजन अतिहि मानिय[1] मोद॥
धुनि वर विप्र मंडत वेउ। मानतो सकल साजत तेउ॥ छं० ॥ ४३ ॥
बज्जहि बहुल बज्जन भार। गांनहि मांन ग्रांम सुतार॥
नचि त्रिय पाच भरह सुभाव। गांनहि सिंघ विक्रम साव॥ छं० ॥ ४४ ॥
सज्जित सघन सिंदुर दंति। छत्र सु पुहप सोभत पंति॥
धवलें चढिय निरषति नारि। गौषन रंभ सुराजकुं आरि॥ छं० ॥ ४५ ॥
दमकत दसन हंस विराज। मानहु तडित अभ्भ अग्राज॥
वसनह रसमि रज्जित कोर। सजि सित सघन वासव जोर॥ छं० ॥ ४६ ॥
राजत श्रवन रवनि ताटंक। राका मनहु सोभ मयंक॥
सोभत लाल कुंडल कंति। मनु बुध इंद इंद मिलंत॥ छं० ॥ ४७ ॥
चढि सु पहु सोहत दंति। मनों इंद्र ऐरापंति॥
मंडत विप्र वेद सुवेद। जग्यहि जपति भेदहि भेद॥ छं० ॥ ४८ ॥
पट्टहि पुत्ति पुत्त अरोहि। विंजन न्टप्प चामर सोह॥
मंडत मुकुट उत्त सुमंग। रचि बहु धात मौल सुरंग॥ छं० ॥ ४९ ॥
दुति कलस करिय तास। मारिच कोटि इंद उप्तास॥
धुअ सम मंडि छत्र अजेर। मनों हरि बाल बिंब सुमेर॥ छं० ॥ ५० ॥
तिलकह जटित रंजित भाल। भ्भल हल करहि दीप उजाल॥
चरचहि मुत्ति कुंदन थाल। पूरति सुपहु पूजति बाल॥ छं० ॥ ५१ ॥
चरचति सुकर अनंगपाल। सोहति कंठ मोतिन माल[2]॥
दुज वर चवै असिष वेद। मांनति गांन तन सु अषेद॥ छं० ॥ ५२ ॥

(१) मो०--मानत।
(२) मो०--भाल।

चय गय चय दिल्लिय देस। समप्पहि पुत्ती पुत नरेस॥
षोडस दांन पूरन मांन। अप्पे बिप्र धेन सुआंन॥ छं० ॥ ५३॥
थप्प बिप्र गेव सुग्यांन। ग्रहन सुमप्प तप्पिय थांन॥
बद्रिय नाथ धरिय सु ध्यांन। ....॥ छं० ॥ ५४॥
तजि ग्रह मोह माया जाल। सज्जिय जोग बंचिय काल॥
रचिय बांन प्रस्थह रूप। क्रमि रह तप्प तप्पित भूप॥ छं० ॥ ५५॥
चय गय तहनि द्रव्य सुदेस। तिन वर तजिय राज नरेस॥
संवत ईस तीस रु अट्ठ। चलि न्रप हेम गहि कर कट्ठ॥ छं० ॥ ५६॥

कवित्त॥ एकादस संवतह। अट्ठ अग्ग हति तीस भनि॥
प्रथि सुरति तहां हेम। सुद्ध मगसिर सुमास गनि॥
सेत पष्य पंचमीय। सकल वासर गुर पूरन॥
सुदि मृगसिर सम इंद। जोग सहहि सिध चूरन॥
पहु अनँगपाल अप्पिय पहुमि। पुत्तिय पुत्त पवित्त मन॥
छंडयौ सुमोह सुष तन तहनि। पति बद्री सज्जे सरन॥ छं० ॥ ५७॥

शुभ लग्न दिखा कर बड़ी तयारी और विधि के साथ अनंगपाल का पृथ्वीराज को पाट बैठाकर अपने हाथ से राज्य तिलक करना।

छंद पद्धरी॥ सुभ लगन दीन दिल्लिय नरिंद। तुम करहु राज जनु पहुमि इंद॥
सुनि श्रवन सह आनंद अंग[1]। राका रयन जनु दधि तरंग॥छं०॥५८॥
बुल्लाइ फेरि दुज वर प्रमांन। थपि लगन मगन अंमृत समांन॥
जिन वचन व्यास मिट्टै न कोइ। स रजह कइंत सुष सिद्ध होइ॥छं०॥५९॥
मंडप्प मंडि सुतधार बांनि। रचि व्याह कृस्न रुकमनि मानि॥
उच्छव अनंत बाजंत बाज। जिन घुमर घोर रव गयन लाज॥छं०॥६०॥
न्रत्यंत नृत्य पातर प्रवीन। तिन रप्प अंग मुनि मन अधीन॥
सब नगर उड्डि गुड्डी अनंत। कैलास विपन बांनिक बसंत॥छं०॥६१॥
आरास सुब्रन बनिकाह कोह। देषंत नैंन मुनि मगन मोह॥
बहुरंग ब्रंन चित्रित अवास। साला सुरंग गौषन उजास॥ छं०॥६२॥

(१) मो-कंद।

अंगन अनंग दिषि रहत भूलि। चिगुन निवास सुरवास फूलि॥
जारिजम पट्ट जरकस जराव। अवनीस दिष्षि जकि धरत पाव॥ छं०॥ ६३॥
कुट्टंत तार सहजह सुरंग। अंगीन अंग भय भमत अंध॥
मव ग्रही वास सुर वास साज। तहां बैठि आनि अनगेस राज॥ छं०॥ ६४॥
बुल्लाय सब्ब अप भर समान। द्रिगपाल जोर तन तेज भान॥
लघु बेस तरुन के वृद्ध वीर। काछ वाच साच रजंग श्रीर॥ छं०॥ ६५॥
इंद्रीन मोह जिन अंग भंग। संग्राम रंग जनु कप्पि पंग॥
मच्छर हुलास जिन अंग सोह। चित जरत उट्ठि सिर समय कोह॥ छं०॥ ६६॥
नव रस विलास निय नारि रंग। अनिवरत रंग भीषम प्रसंग॥
षग दान मान परिमान जोइ। कवि कहै ग्रंन जो आनि होइ॥ छं०॥ ६७॥
कुल रीति नीति हिंदुन राह। दारुन्न दसह दुभ्भर दुवाह॥
अस बैठि भूप सब सभा आनि। सुर इंद्र कोटि तेतीस जानि॥ छं०॥ ६८॥
तहां धरिय सिंघासन कनक कंति। जिन हीर लाल पीरोज पंति॥
मानिक्क चूनि मनिमुत्ति भंति। चकचोंध दिट्ठ बुधि भूलि जंति॥ छं०॥ ६९॥
नृपान लषित पुष्पह उपाइ। तहां बैठि भूप कुल सुद्ध आइ॥
आसन्न असु तहां धोरय आंन। सुरजंपि तत्थ जै जया बांन॥ छं०॥ ७०॥
प्रथिराज बोलि बैठाय पाउ। धुनि करत बेद तहां विप्र ठाठ॥
बिय कंध पच्छ बिय चमर ढार। रजि रूप जांनि अश्विनि कुमार॥ छं०॥ ७१॥
धरि कनक दंड सिर छच सोस। सिर चंद कंति कैलास ईस॥
गायंत गांन कामिनि उतुंग। कलयंठ कंठ सुर करत भंग॥ छं०॥ ७२॥
मुसकत हसंत औंडत अलोल। सहजत कटाच्छ छंडत सलोल॥
रस भरिय एक आलसय अंग। मुनि देषि अंग मति होत पंग॥ छं०॥ ७३॥
इक अलसि फेरि अंउति अज्ञोल। छंडंत असित सित श्रवन कोर॥
अंगन अवास सालानि चूरि। जालीन गौष भरि रहै पूरि॥ छं०॥ ७४॥
बंदीन ठाठ बिरदह बुलंत। नव रस विलास रसना तुलंत॥
सधि लगन मुहूरत दुज प्रवीन। अनगेस राज तब तिलक कीन॥ छं०॥ ७५॥
बजि सबद पंच बाजे बजंत। तिन होर घोर दरिया लजंत॥
जित तित्त अत्ति उच्छव रजंत। बरषाह पाइ जनु जग गजंत॥ छं०॥ ७६॥

दिल्ली के सब सर्दारों का आकर पृथ्वीराज को जुहार करना।

छं० भुजंगी ॥ तहां बैठयं राज दिल्ली प्रमानं । सिरं आतपत्रं सु दीनो निषानं ॥
बजै दुंदुभी भीत[1] आकास थानं । .... ॥ छं० ॥ ७७ ॥
मिले आइ सब लोइ ते सूर बीरं । जिनै आदरं राइ दीनौ सरीरं ॥
झनक्केति ताजी किनक्कै करीनं । महामत्त दीसै सुमत्ती सुभीनं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
दूहा ॥ करि जुहार भट सुभट थट[2] । प्रजा महाजन आइ ॥
सब काहू मन यों भयौ । ज्यों जलचर जल पाइ ॥ छं० ॥ ७९ ॥

बड़ी तयारी के साथ सजकर पृथ्वीराज की सवारी निकलना।

सत हथ्थी दस सित तुरस । मानक मुत्तिय लाल ॥
सवा लष्ष सोव्रन महुर । गनै और को माल ॥ छं० ॥ ८० ॥
चढन जोग हथ्थी नवें । मंगवायौ मदमंत ॥
जनु घन बद्दल पवन बसि । बग पंकति ता दंत ॥ छं० ॥ ८१ ॥
जो रावर जंजीर बसि । पवन न पावै जान ॥
अग्ग मंडि डारै प्रबल । साथर अजा समान ॥ छं० ॥ ८२ ॥
छंद पद्धरी ॥ आरुढ इंद्र सम गज गरूर । ज्वालाति जोति जनु किरन सूर ॥
जरकस जराव औकार मंडि । सुरराज विपन सोभात षंडि ॥ छं० ॥ ८३ ॥
रेसम रास नारी बनाइ । घुघ्घर घमंक कंचन जराइ ॥
आरुढ राज आसन अनंद । सुर पुफ्फ विष्टि दुअ दीन बंदि ॥ छं० ॥ ८४ ॥
लंगरी राव पच्छैं अरोह । कर कनक दंड सिर छत्र सोह ॥
बिय बांह चमर दुर गाह धारि । रवि चंद किरनि जनु सिर पसारि ॥ छं० ॥ ८५ ॥
तिन पच्छ पंति दंतीन साजि । सामंत सूर सब चढ़े गाजि ॥
तिन पच्छ तुरी तत्ते निवानि । वर पवन रूढ मन भए जानि ॥ छं० ॥ ८६ ॥
छत्तीस बज्ज बज्जे सु बाज । विरदैत बिरदै चंद राज ॥
अवधारि मंध्य बाजार बीच । केसरि कपूर तहँ अगर कीच ॥ छं० ॥ ८७ ॥
जित तित गिरंत जारीन फूल । छबि छज्जै छैल नवला अभूल ॥
मन मगन मुक्त अष्षित उछार । जलजात मनों बसि ओस झार ॥ छं० ॥ ८८ ॥

---

(१) मो०–घोस ।
(२) कृ० को० ए०–भट सुभट सब ।

सब परज अरज प्रभु करन रह । इक भूमि ग्रेह थिर राज देह ॥
नर नारि निरषि मनु मुदित मोह । लगि चंद सूर चिरजीव होह ॥छं०॥८९॥
षट दरस दरसि आसिष्य देत । प्रथिराज बंदि सिर झेलि लेत ॥
फिरि राज आइ अंदर अवास । जहं रहत मुग्ध मध्या सुवास ॥छं०॥९०॥
सनमान कीन रनिवास राइ । जस मन्नि सत्त सत सिद्ध पाइ ॥ छं० ॥ ९१ ॥

पृथ्वीराज का रनिवास में आना, रानियों का मंगलाचार करना ।

दूहा ॥अन्य न्टपति गन सुंदरिन । मधि अंगन रनिवास ॥
दिष्षत छबि छक्की सकल । मिल त्यंजन[1] दिन नास ॥ छं० ॥ ९२ ॥
कनक किउ कुंदेरनह । भरत कि भरिता अंग ॥
जलज नैन मुष कर चरन । जनु धरि अंग अनंग ॥ छं० ॥ ९३ ॥
मधुर कंति मुष मधु मुदित । उदित अर्क आकार ॥
तोरि चंन तरुनिय कहत । धरनि सहौ तुम भार ॥ छं० ॥ ९४ ॥
गाथा ॥ बनिता बिनय सुकरियं । धरियं प्रेम केन अंगायं ॥
के छबि छकित छलीयं । भइयं वहसि पिष्षि पिष्षायं ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दिल्ली चौहान को देकर अनंगपाल का तीर्थवास के लिये जाना ।

दूहा ॥ जुग्गिनिपुर चहुआंन दिय । पुत्रीपुत्र नरेस ॥
अनँगपाल तोंअर तिनिय । किय तीरथ परवेस ॥ छं० ॥ ९६ ॥

यह सब समाचार सुनकर सोमेश्वर का प्रसन्न होना ।

कवित्त ॥ सुनि सोमेसर सूर । हियै बढिय आनंद सुष ॥
अति अनंद त्रिमलय । धनि मो पुत्र दीह रुष ॥
बर बाने बंधियै । मिले सामंत सूर सब ॥
सरित समुद्द प्रमांन । मिलिय आहत्त वीर सब ॥
गोधूर लग्न चहुन न्टपति । बाल चंद कल न्टपति हुअ ॥
मांननिय मांन जानै सकल । नृप परतीत समत्त भुअ ॥ छं० ॥ ९७ ॥

(१) छ-सुम सभ्यंजन ।

छंद पद्धरी ॥ बंदहि विवेक अविवेक पाइ । विंभहि मुकुट सों मुकट वाइ[1] ॥
नग नगन जरहि किरनी जराइ । जाने कि अगनि अनहित्त वाइ ॥ छं० ॥ ९८ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

छंद चोटक ॥ भयभीत सुनंत चढंत कला । जनियै गुरदेव सुमंग मला ॥
बर बज्जि निसान दिमान धुअं । नृप राज सुकाज ज्यौं भ्रंम सुअं ॥ छं० ॥ ९९ ॥
प्रगटी जनु कांमय कोटि कला । करि उज्जल गज्ज सुमंत मला ॥
बिसरे द्रगपाल दसों दिसयं । प्रगटी जनु काम कला ससियं ॥ छं० ॥ १०० ॥
रन नंकिय पाइ बमक्क भुअं । छिति मित्त छिपाधिप चित्त धुअं ॥
प्रगटे प्रथुपालक पंच कलं । तिनमें प्रथुराज प्रथून बलं ॥ छं० ॥ १०१ ॥
परधानति भीम कुंआर तिनं । नृप सेवन जास सुपाइ गनं ॥ छं० ॥ १०२ ॥

दूहा ॥ अन हत्तिय नृपराज तपि । ढिल्ली है घन साज ॥
जानिज्जै जंगल नृपति । मन उदद्धि गुन पाज ॥ छं० ॥ १०३ ॥

आशीर्वाद ।

सित छ अग्ग सामंत सजि । बजि त्रिघोष सुनंद ॥
सोमेसर नंदन अटल । ढिल्ली सुबसि नरिंद ॥ छं० ॥ १०४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके अनंगपाल दिल्ली दान नाम अष्टदशमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १८ ॥

(१) मो-चाइ ।

अथ माधो भाट कथा लिष्यते ॥

(उन्नीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का दिल्ली आकर रहना ।

कवित्त ॥ किय निवास प्रथिराज । आइ चहुआंन वीर वर ॥
पुज्ज धाम जुगिनी समांन । वलि दीय थांन थिर ॥
दस दिसांन दस मषिष । किञ[1] सहु नयर दीन बलि ॥
अवर देव पुज्जै सु सेव[2] । नैवेद धूप मिलि ॥
पुज्ज सु दीय दानानि अथ । अथ पंषि दीय चंडरस ॥
कंपै सुसीम नयां राषि भट । जस जु प्रगग्यौ दिसि विदिस ॥ छं० ॥ १ ॥

शाहाबुद्दीन के कवि माधोभाट का गुण वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ कवी कब्बिचंदं सुमाधौ नरिंदं । सुरंतान भट्टं मधु माद इंदं ॥
कवी एक भंडी भिडिंभी प्रमानं । किते तार झंकार बिद्या सुजानं ॥छं०॥२॥
विधं मंच पची पढ़ै वेद बानी । तिनं भट्ट कोनं जु पूजै गियानी ॥
पढै तर्क वित्तर्क चौसट्ठि विद्या । तिनं रूप के भेद चौरास सद्या ॥ छं०॥३॥
सतं मद्धि घटियं सुषोडस प्रमानं । इते छंद विच्छंद छंदे कलानं ॥
मषा रूप रंगंति गंगा प्रकारं । तिनं वाइकं भट्ट बोलंत सारं ॥ छं० ॥ ४

माधो भाट का दिल्ली आना और यहां की शोभा पर मोहना ।

छंद चोटक ॥ दिषि भट्ट सुथांनक दिल्लि घरं । जमना जल राजत पापहरं ॥
तिह भ्रंम सुतं न्रिप भिंत्त दई[3] । सोइ दिल्लिय राजस राज भई[4] ॥छं०॥५॥
इंद पथ्य सु पूरब नाम धरं । इन काज सु पंडव जुद्ध जुरं ॥
चव पंथ पनी पति पाप हरै । रवि की तनया तन तेज दुरै ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) मो–किल ।
(२) मो–पुज्जंति सेव ।
(३) मो–दिव्यतर्ई ।
(४) मो–गई ।

इतनी विधि देषत थान गयौ । अग लोक समान सु तेज तयौ ॥ छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ इहि बिधि दिष्षिय सकल द्रिग । पुर ढिल्ली उनमांन ॥
थांन बीर चहुआंन कौ । प्रति कैलास समांन ॥ छं० ॥ ८ ॥

पृथ्वीराज के इन्द्र के समान राज्य करने का वर्णन ।

इंद रूप ढिल्लिय नृपति । इंद्रासन पुरि ढिल्ल ॥
सचीषा इंछिनि सुव्रत । सुद्दत हत्त गुन किल्ल ॥ ९ ॥
सुरपति सम सामंतपति । अति अनूप मति सार ॥
कनिष्ट आंन हिंदुवांन सब । इह गह अत्तं भार ॥ छं० ॥ १० ॥
इह चरित्त दिष्षित नयन । गयौ भट्ट न्रप थांन ॥
मय[1] मनुं सुमन सुरष्षि कै । रच्यौ प्रथी पर आंन ॥ छं० ॥ ११ ॥

माधो भाट का पृथ्वीराज के दर्बार में भेद लेने को आना और अपने गुणों से लोगों को रिझाना ।

कवित्त ॥ दिषि भट्ट माधौ नरिंद । राजधांनी चहुआंनी ॥
दूत भेद अनुसरै । दूत लग्यौ परिमानी ॥
हिंदु भाष षट रस । मेछ पारसी उचारै ॥
जहां अछिर कोइ कहै । वांन तेहीं विधि मारै ॥
भाषा कवित्त नाटिक सकल । गीत छंद गुन उच्चरै ॥
जानंत तर्क वितर्क सब । राग बिरागह अनुसरै ॥ छं० ॥ १२ ॥

गाथा ॥ हिंदू हिंदू अवचने । रचने मेछायं मेछयौ बयनं ॥
जं जं जेम समुझ्झै । तं तं समुझायं माधवं भट्टं ॥ छं० ॥ १३ ॥

ध्रमाइन कायस्थ का माधो भाट को सब भेद देना ।

कवित्त ॥ ध्रंमाइन कायथ सुरंग । मिल्यौ बर भट्ट प्रमानं ॥
जु कछु भेद चहुआंन । दियौ निहचै सुरतानं ॥
बिभ्रम सुभ्रम विसाल । कहो निभ्रम परिमानं ॥
कग्गद मंत चलाइ । मंत मग्गी चहुआनं ॥
दै लेइ दांन संभरि धनी । रोर सतम करभांन बर ॥
मय मंत मंत चिंतान करि । दयौ द्रांन इत्तोति नर ॥ छं० ॥ १४ ॥

---

(१) मो-बह ।

पृथ्वीराज का माधो भाट को बहुत कुछ इनाम देना।

दूहा ॥ दस हथ्थी मै मत्त करि। भर मंडन मुष आग ॥
अरि षंडन मंडन फवज। लेइ बीर बहु बग्ग ॥ छं० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ दस हथ्थी सत एक। एक कंजी कंमानं ॥
कंजी तीनति पंच। बांन सोहै परिमानं ॥
दियौ साह सुरतांन। भट्ट दीने परधानिय ॥
कह मोती बर माल। कनक इक तोल सुजानिय ॥
दिय प्रथिराज सुराज बलि। द्रव्य सुबर चतुरंग बिधि ॥
माधव सुभट्ट रंजे न्टपति। चंद कही असतुति समधि ॥ छं० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ हेमरु है गै अंबरह। सुरसैं बुद्धि गंभीर ॥
सत्त सुमति अमित्त गति। माधौ भट्ट सबीर ॥ छं० ॥ १७ ॥

बहुत कुछ दान देकर एक महीना तक माधो भाट को दिल्ली में रखना।

कवित्त ॥ दियौ दान बर भट्ट। मास रष्यै दिल्लीधर ॥
बहु भोजन प्रति स्वाद। इंद इंद्रास देव गुर ॥
मन लीनौ न्टप हथ्थ[1]। भट्ट न्वप[2] इंद प्रमान्यौ ॥
गए दरिद्द जनमंत। चिंत्य चिंता घट भान्यौ[3] ॥
अप्पै सु दांन सामंत सब। सुहन मत्त हत्तह सुधरि ॥
भै पूर पूर पूरन करो। जा चंगा भग्गी सुउरि ॥ छं० ॥ १८ ॥

दूहा ॥ जान जान जे जान है। गए गजन किन कीन्ह ॥
इत्तय बन पूरन नहीं। मत्ति गरुअ तन चीन्ह ॥ छं० ॥ १९ ॥

बहुत सा दान (जितना कभी नहीं पाया था) लेकर माधो भाट का ग़ज़नी लौट आना।

अरिल्ल ॥ लै सुदांन गज्जन पुर आयौ। इतौ दांन जनमंत न पायौ ॥
महादांनं बिद्या परकारं। दियौ राज[4] चौहांन विचारं ॥ छं० ॥ २० ॥

(१) मो-बरभट्ट। (२) मो-न्वप बर।
(३) मो-जान्यौ। (४) मो-दान।

माधो भाट का शहाबुद्दीन के दर्बार में पृथ्वीराज के दिल्ली पाने आदि का वर्णन करना।

छंद पद्धरी ॥ गह अत्त मत्त कविराज राज। शृंगार हास्य अदभुत विराज ॥
तिहि जाइ कीन न्त्रप किति बैन। तिम तिम सुहाय सुरतान चैन॥ छं०॥२१
संभरिय बत्त उब्भरि उरत्त। सुरतान बेन गोरी बिरत्त ॥
मातुलह वंस चहुआंन राज। दै गयौ सकल दिल्लीस काज॥छं०॥२२
है गै भँडार बिन किति भूमि। क्री बाज मार आहति कूमि ॥
दैवत्त करै इह मनुक्ख लोइ। क्री बाज जनम आहत सोइ ॥छं०॥२३
अनगेस राज तजि तिथ्थ जाइ। सामंत सूर वर मिले आइ ॥
अजहूंनि सेन इक मनी नथ्य[1]। गोरी सहाव इह घात तथ्य ॥ छं०॥ २४

दूहा ॥ फुट्टिय बत्त प्रकास सब। वसि दिल्लिय चहुआंन ॥
बंदिन माधौ आय कहि। सम गोरी सुरतांन ॥ छं० ॥ २५ ॥
है गै दिल्लिय देस सब। अरु जु अबर द्रब अप्प ॥
सो सब दै चहुआंन को[2]। अनंगपाल गय तप्प ॥ छं० ॥ २६ ॥

अनंगपाल के बनबास का वर्णन।

लै चल्यौ संग निज तरुनि। दै दिल्लिय अनगेस ॥
मन वच क्रम बद्री चल्यौ। साधन जोग जोगेस ॥ छं० ॥ २७ ॥

यह समाचार सुनकर शहाबुद्दीन को बड़ी डाह होना।

सुनत सटप्पट लग्गि मन। उर गोरी बर बीर ॥
पल पल षिन जुग जात जिय। बढ्ढिय बिषम पल पीर ॥ छं० ॥२८

शहाबुद्दीन का क्रोध करके घोड़े पर चढ़कर लड़ने के लिये चलना, फौज़ की शोभा वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ चढ्यौ मंगि सुरतांन साहाब ताजी। जरं जीन अंमोल साकत्ति साजी ॥
बरं बासनं रत्तहेमं हमेलं। मनी मुत्तिमाला बनी लप्प जेलं[3] ॥छं०॥ २९

---

(१) मो-सथ्थ। (२) कृ-सो समपय प्रिथराज कूं।
(३) मो-सेलं।

जरं हेम रूपं सुभं सोभ सीसं। उवं लाल थंभं सिरं सूर दीसं ॥
अगे लक्करी लाल दो सहस सोहं। जिनं आइ जक्की सबै कोइ कोहं ॥छं०॥३०॥
अगें साहि गोरी निसूरत्ति षानं। लग्यौ बंदि माधौ पढ़ै विरुदानं ॥
दिसा दाहिनी षांन तत्तार गोरी। दिसं षां षुरासांन रजि वांम जोरी ॥ छं० ॥ ३१ ॥
उभै पुट्ठि मम रेज मुलतांन षानं। सुतं साहि महम्मंद सोहिन्त षानं ॥
मुषं अग्ग वेतं उसे रत्न साहं। सितं चौर वांने सितं गज्ज गाहं ॥ छं० ॥ ३२ ॥
कही बत्त गोरी तिनं सों सवाही। कहैं जेव जव्वाब पुच्छंत सांही ॥
अपं सेन सथ्थं सबै सूर सथ्थें। तिनं जाति बांने कहै कोन कथ्थें ॥छं०३३॥
चले आइ सो सेषची मन्न थानं। चयं छंडि दरबार साहाब तानं ॥
दुरं रष्षि दरवन अप मज्झि आयं। सबै बोलि उमराति सब अप्प भायं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ और रोकि अप मज्झ गय। नमि पय सेष चिमंन ॥
अप्प प्रसंसिय विवह परि। दैठि पयंधरि पंन ॥ छं० ॥ ३५ ॥
सीष सु पुच्छिय सेस पहु। बोलि पंचदस षांन ॥
आसन छंडिय अप्प तिन। दिय आदर सनमांन ॥ छं० ॥ ३६ ॥

शहाबुद्दीन का तातारख़ां आदि सरदारों को इकट्ठा करके सलाह पूछना।

छंद पद्धरी ॥ गोरी ततार गुरलज्ज भार। षुरसांन षांन मति सिंधुसार ॥
निसुरत्ति षांन जेषांन मीर। ममरेज षांन बल लाज नीर ॥ छं० ॥ ३७ ॥
आजांन षांन सेरन वितंड। मुलतांन षांन मुहबत्ति बंड ॥
मारुफ्त मीर जमुनह सुमीर। साहाब षांन गहअन गंभीर ॥ छं० ॥ ३८ ॥
रुस्तंम षांन षल संक जास। गज्जनी षांन रिन साहि आस ॥
गजनीय लज्ज गुर तेज गंज। महमुंद मीर अरि तेज भंज ॥ छं० ॥ ३९ ॥
गोरीय त्रंन काली बलाइ। मृगराज जेम मृग अरि पलाइ ॥
साहब सलाम सब करी आइ। चीमंन सेष नमि परसि पाइ ॥छं०॥ ४०॥
बहूं सु सब कर कर समुट्ठि। षिन एक बैठि साहाब उट्ठि ॥
गयौ सेष वाग तह चंप तूप। बैठक तथ्थ चौरा अनूप ॥ छं० ॥ ४१ ॥

आसंन मंडि बैठो सु साहि। बैठक्क दई उमराव ताहि॥
उच्चक्यौ बीर गोरी सु संच। पुच्छिय जु सब मंचह प्रपंच॥ छं० ॥ ४२॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज के दिल्ली पाने का समाचार कहकर उसके जोर तोड़ने का मत पूछना।

कवित्त॥ कहिय साहि साहाब। षांन तत्तार सुनौ सब॥
बसि दिल्लिय चहुआंन। कही माधौ जु चंड कब॥
अनगपाल गय तप्प। देस है गै सु द्रव्य सह॥
सो समप्पि चहुआंन। अप्प सज्यौ सुवंन रह॥
अरि मत्त अग्ग बर जोर हुअ। अरु लंभी चतुरंग श्रिया॥
सधियै बैगरन षेत षल। जौ लौं जोर न बंधिया॥ छं० ॥ ४३ ॥

तातारख़ां का सलाह देना कि दिल्ली पर चढ़ाई करना चाहिए

तब कहै षांन तत्तार। साह साहाब चित्त धरि॥
अरि अनंत बर जोर। याहि सधियै सनद्ध करि॥
तब दिष्यौ दल जोर। सूर सामंत समत्थं॥
अन्त तेज मत अनंत। बेग रन बहै सुहत्थं॥
दल जोर जोर भंडार घन। करि सुचित्त भर एक मन॥
भरहत्थ जीव दिल्लिय सहर। मम करि अरि दहन सयन॥ छं० ॥ ४४ ॥

तातारख़ां की बात का सब लोगों का सकारना, रुस्तमख़ां का मंत्र देना कि जब तक सेना तयार हो तब तक एक दूत दिल्ली जाय सब समाचार हिंदुओं के ले आवे।

छंद पद्धरी॥ षुरसांन षांन कहि सुनि ततार। सची सु बत्त जंपी सुढार॥
दल मेलि बेग सज्जौ सुमंत। बंधीय बंधान अरि करिय अंत॥ छं० ॥ ४५ ॥
जेहांन बीर जंपे तमंकि। तुम उरौ मीच कुट्टौ न अंक॥
सज्जियै दौरि करि रुच सत्थ। नन होइ कांम दष्यौ सुहत्थ॥ छं० ॥ ४६॥
जंपी सु षांन निसु रत्ति तब्ब। बिन बंध बत्त डिंभ रु गब्ब॥
चवरन देषि चहुआंन तुम्ह। जंपी सबत्त मंतह गुरंम॥ छं० ॥ ४ ॥

उच्चरिय षांन साहाब सक्क। बे हूह भए ३य वुड्ढ जक्क॥
झंपियै जुद्ध पावक्क पाइ। बंध्यौ विराम ना निजरि आइ॥ छं०॥ ४८॥
बल तुच्छ अरिय सहौ सु साहि। षल दुष्ट जोर बंध्यौ न जाइ॥
मुलतांन षांन हसि कहिय बत्त। मम रेज षांन दाषै विगत्त॥ छं०॥ ४९॥
एंजाब गरुव कंह्यो गुमांन। षन मद्द मंत वयची प्रमांन॥
कालिंग पुन्नै जिम जुध पुलाइ। गह अत्त साहि साहाब जाइ॥ छं०॥ ५०॥
उक्कसें षांन सेरन विनंड। विक्कसे कहिय कर षग्ग मंड॥
गोरिय अवनि तुम गनौ गत्ति। भय भीत मृत्य दीसहि सुमत्ति॥ छं०॥ ५१॥
बिनसंत काज क्यों पातिसाह। पूछै सुमंत अच्छै सुभाह॥
जंपयौ बत्त काली बलाइ। मो विना सेन गोरी पलाइ॥ छं०॥ ५२॥
काल ग्रहंत मन आइ सुभक्क। मंडयौ जुद्ध मो बिन अबुझ्क॥
तमस्से मीर तब फते जंग। पुज्जेन सेन पंषी कुलंग॥ छं०॥ ५३॥
सम वरन साज सज्जै न संग। हरि तेज तेज दष्यै अभंग॥
अरि सार जैत जांनो न भेव। उच्चरौ मंत गुन सुबर गेव॥ छं०॥ ५४॥
तब मीर जमन गज्जनी षांन। महमुद्द मीर मारूफ षांन॥
उठे सुच्यांर तम तेग झारि। बुझे बिहँसि मत्ते विचारि॥ छं०॥ ५५॥
थिर जुद्ध मंत रच्यौ सु सब्ब। बैठनह सूर नहि ध्रंम अब्ब॥
कीयौ हुकंम साहाब जब्ब। ग्रहि तेग हने प्रथिराज तब्ब॥ छं०॥ ५६॥
रुस्तंम कहो साहाब अज्ज। मुक्कलौ दूत जुध करौ कज्ज॥
लषि आवै चर सु हिंदू चरित्त। तब लगिग सेन सज्जौ सुदृत्त॥ छं०॥ ५७॥
मंन्यौ सुमंत सब चित्त सार। मंझौ सुमंत बर चरन चार॥
रुस्तंम वाह धरि चवत दीठ। बुल्लाइ स्यंघ बर चर गरीठ॥ छं०॥ ५८॥

छंद भुजंगी॥ स्वयं भेद प्रकार भेदं प्रमानं। सुनौ षांन तत्तार षांनं सुमानं॥
स्वयं साहि साहाब साचाब सूरं। मनो भेद बंभान कुव्यो कहूरं॥ छं०॥ ५९॥
घानं तेज तेजं प्रकारंत न्यारे। कही कब्बि चंदं उपम्मा उचारे॥ छं०॥ ६०॥

दूहा॥ कहत चंद बर भट्ट फुनि। सकल कथा परिमांन॥
जु कछू भट माधौ कही। सम गोरी सुरतांन॥ छं०॥ ६१॥

छंद पद्धरी ॥ उच्चस्यौ चंद बरदाइ मंडि । सुरतांन षांन आरज्ज छंडि ॥
बर बीर धीर तत्तार षंडि । काली बलाइ सेरन बिहंडि ॥ छं० ॥ ६२ ॥
हबसी हुजाब षुरसांन बंध । पीरोज षांन निज बंध सिंघ ॥
पर दार पौरि दस दस प्रमांन । राजन अनेक भर सुभ्भि थांन ॥ छं०॥६३॥
तिन व्यंटि सभा दिष्षी नरिंद । मनों जामिनी तेज रवि सबर इंद ॥
बंदै न चंद तत्तार षांन । पीरोज बंध हबसी समांन ॥ छं० ॥ ६४ ॥
षुरसांन षांन जल्लाल बीर । सेरन बिलंड माधौ सरीर ॥
हुस्सेन सूर भट्टी प्रकार । साहै जु साहि ज्यौं चंद सार ॥ छं० ॥ ६५ ॥
बैरंम षांन जमनेस जोर । जमजोर बहै तिन बल सुथोर ॥
पीरोज षांन माही मरह । सोभंत तेज ससि बर सरह ॥ छं० ॥ ६६ ॥
उल्लेग षांन गाभरू मीर । बेधंत सत्त धानह सु तीर ॥
तम तेज षांन ममरेज मीर । षुरसांन लज्ज निज मुष्ष नीर ॥छं० ॥६७॥
फतूह मीर तुंगी तुरांन । पुज्जै न तास तम तेग षांन ॥
नव नेह षांन मैदांन मीर । रुम्मी रुहिल्ल तम तेग धीर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
ढिल्ली बढाल ढाहन प्रकार । संभरे मुष्ष भए रत्त भार ॥
पारष्षि रष्ष पावंग जांन । जानहि जु स्वांमि भ्रम प्रमांन ॥ छं० ॥ ६९ ॥
फिरि पूछि जाइ दूत सबनि कह । उच्चरै बत्त चहुआंन थट्ट ॥
भय भीत रीत माधव सुभट्ट । हों देषि आइ इह तथ्थ घट्ट ॥ छं० ॥ ७० ॥
सोमेस सूर तस पुत्तमांन । मारन हमीर जाने गियान ॥
दातार और पोहचे न दान । दै गयौ अनंग दिल्ली निषांन ॥ छं० ॥७१॥
बर राज अनंग तिथ्यह जु जाइ । चैगै सु लच्छि दोहित्त पाइ ॥ छं०॥७२॥

माधव भाट की बात पर विश्वास न करके शाह का दूत भेजना ।

दूहा ॥ साह बदी सुरतांन तब । माधौ कह्यो न मांन ॥
भट्ट जाति जीहं गुनौ । दूत सु पठय प्रमांन ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दूतों के लक्षण का वर्णन ।

कवित्त ॥ कं जांनी कंम्मांन । अंक रेसम प्रति भासै ॥
दस औराक तिय तोन । साहि गोरी मुकि जासै ॥

दूत भेद अनुसरै । लषि हिंदवांन चरितं ॥
सो मत्तह सुरतांन । थांन मो कलि दस रत्तं ॥
दूत के दूत मंचह सुपन । सब सु चरित अंषिन लषै ॥
उच्चरै बत्त सांची सुदृत । सुविधि विधि अमृत भषै ॥ छं० ॥ ७४ ॥
दूहा ॥ इन मुक्कनि उन सथ्य बर । दिसि ढिल्ली परिमांन ॥
माधो भट्ट सु तथ्य बहि । दूत पठय सुरतांन ॥ छं० ॥ ७५ ॥
चाहुआंन सुरतांन बर । करन जुद्ध परिमांन ॥
मिलन पुव्व पच्छिम हुतें । बीरा रस उत्तांन ॥ छं० ॥ ७६ ॥
कवित्त ॥ सें बुझ्झैं सुरतांन । अप्प गज्जन बलषांनं ॥
आषेटक चम करहिं । दूत मुक्के अगिवानं ॥
जु कछू भेद अनुसरै । ततग्यांनं परिजानिय ॥
भय भयंक भ्रम षंड । काल कलहं गुन ठानिय ॥
जं कहो जाइ मद्दमूंद षां । सेरन षांन बिलंड बर ॥
चवसी हुजाब मुक्कलि न्टपति । सुबर बीर मत्ते गद्दर ॥ छं० ॥ ७७ ॥
भेद दुग्ग भंजियै । भेद दुरजन धरि किज्जै ॥
भेद भूमि अनुसार । भेद दिल्ली धरि लिज्जै ॥
भेद पष्प मत नथ्थ । भेद विन कंक न छोई ।
भेद गुरुअ गुरु ग्यांन । भेद बिन तात न जोई ॥
अद्दत्त भेद वर रंजियै । गुन सज्जन सज्जन बरन ॥
सुरतांन दीन साहाब दी । भेद साहि कीजै गवन ॥ छं० ॥ ७८ ॥
गाथा ॥ षुरसांनं प्रति षानं । पीलं नथ नथियं पानं ॥
पंगी नथ्थ प्रमानं । वरचं नथ्य सस्त्रयो बलयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
श्री गजनी नरिंदं । बुलल्यौ बीराइ बीर साहसं ॥
विन जग्गत जग्गायं । तैा जिते निस्चयं षलयं ॥ ८० ॥
दूहा ॥ विन जग्गत जो जग्गियै । षग्ग साह विन हाथ ॥
मेक पिच्छे किर सान गुर । बिवरि गुरज्जन साथ ॥ छं० ॥ ८१ ॥
पातसाहि बिची सुच्छिति । मति रष्पन परिमांन ॥
जैा भंजै चैाहान तूं । कहै दूत सोइ ठांन ॥ छं ॥ ८२ ॥

अरिल्ल ॥ माधौ बत्त सुसत्त प्रमानिय। तञ दूत मुक्कलि गुन ठानिय ॥
नव नव नव घन मध्य प्रमानं। कह्यो मंत गोरी सुविद्यानं ॥ छं० ॥ ८३ ॥

दूत भेजकर अपनी सेना की तयारी करना।

छंद पद्धरी ॥ करि मंत साह गोरी अचंभ। आरंभ चक्क भुज दंड अंभ ॥
जल थल तिष्यलन करि प्रमांन। उनमयो[1] मेरु जनु मध्य भांन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
गगन मगन षुर षेह छाय। सुझ्झै न भांन मिटि पंथ वाय ॥
अरुझ्झे सुकमल[2] संकुचि सकोर। रुट्ठो सु बदन अलि किसल थोर ॥ छं० ॥ ८५ ॥
चक्कवी चक्क चक चकी भूमि। रस ताल वितल तल कढ्ढि तूमि ॥
तिन बननि[3] तुट्टि छर छरत नीर। प्रज्जरै पंथ साइर गंभीर ॥ छं० ॥ ८६ ॥
तन[4] करै पवन गवनं प्रकार। उरझंत धजा गज चलत लार ॥
बाजत टमंक नवलं कठोर। नाचंत ईस जनु गंग सोर ॥ छं० ॥ ८७ ॥
सुझ्झै न नैन दिसि विदिसि थांन। मन क्रंम सुद्धि नट्ठी प्रमांन ॥ छं० ॥ ८८ ॥
दूहा ॥ चाहुआंन चतुरंग दिसि। सजि सुमंत साधव्व ॥
जुक्कु मंत गुन उच्चरिय। बर कोविद माधव्व ॥ छं० ॥ ८९ ॥
मति माधव कोविद सुबर। कही बत्त गुन जुत्त ॥
तञ साहि गोरी नृपति। फेरि मुक्कले[5] दुत्त ॥ छं० ९० ॥
बोलि दूत चव[6] अग्ग लिय। दिय कग्गर धूमांन ॥
सुद्धि सिंध अरु सोब बर[7]। दिय दूनांम अब्बांन ॥ छं० ९१ ॥

शाह का फर्मान लेकर दूत का दिल्ली की ओर जाना।

चल्यौ दूत दिल्ली दिसा। लिए साह फुरमांन[8] ॥
भेष सुसोफिय तन्न सजि। चित्त अचिंतिय मांन ॥ छं० ॥ ९२ ॥

(१) को-उभस्यौ। (२) मो-ततकमूल।
(३) मो-बनह। (४) ह्र-नन।
(५) मो-मुक्काहिय। (६) मो-बचन।
(७) मो-सब।
(८) मो. में यह तुक नहीं है।

दूत को दिल्ली पहुंचकर अनंगपाल के बनबास और पृथ्वीराज के न्यायराज का समाचार विदित होना ।

गाथा ॥ दिल्ली दूत सपत्तं । फिरि फिरि देषंत न्याव नृप नैरं ॥
थह ध्रंमांन सुग्रेहं[1] । दिन्नं बर पत्त हथ ध्रंमानं ॥ छं० ॥ ९३ ॥
षबरि कृष ध्रमानं । दिन्नं नृप आदि सूर सामंतं ॥
अनंगपाल तप सरनं । दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ ९४ ॥

ध्रमान कायस्थ का सब समाचार सामंतों के रहने आदि का दूत को बतलाना ।

कवित्त ॥ विवरि षबरि ध्रमांन । कही चहुआंन सेन वर ॥
पष्ष[2] सत्त राजांन । सुवास कीन पिथ्थपुर ॥
पष्ष पंच कैमास । राव चावंड पष्ष चव ॥
वसि वित्ते दिन अठ्ठ । पष्ष लोहांन रसे सव ॥
चहुआंन कन्ह पष एक हुअ । बसिय बास दिन पंच हुअ[3] ॥
सामंत अवर आगम हुकै । सबन[4] वास चहुआंन रय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

ध्रमान का सब समाचार लिखकर भेजना ।

दूहा ॥ लषि कारि इह बंधी विर्वार । राज ध्रम्म चहुआंन ॥
दिय कग्गर तसु दूत कर । वर कागर ध्रम्मान ॥ छं० ९६ ॥

सब समाचार लेकर दूत का लौटना ।

षबरि सबै लीनी नृपति । चलिय दूत निज मग्ग ॥
आतुर पति गज्जन नमिय । सौपी वे सह जग्ग ॥ छं० ॥ ९७ ॥

अरिल्ल ॥ दूत आइ दिल्ली परिमानिय । राजथान जुग्गिनि पहिचानिय ॥
निगम बोध दिष्यौ चहुआंनं । रहे षट दीह फिरे तिन थानं ॥ छं० ९८ ॥

दूत ने छ महीने रहकर जो बातें देखी थीं सब शाह को जा सुनाई ।

दूहा ॥ रहे दूत षट दीह बर । लषि चरित्त षट मास ॥
जु कछु चरित षट मास कै । कहे विर्वारि सुद[5]भास ॥ छं० ॥ ९९ ॥

(१) मो-गेहं । (२) मो-परक । (३) मो-भय । (४) मो-रसन । (५) मो-सुध ।

कम ढिल्ली ढिल्ली बयर। ढिल्ली नृप चहुआंन ॥
गौ तोरथ बन सज्जिकै। प्रगटि दिसांन दसनां ॥ छं० ॥ १०० ॥
प्रथीराज चहुआंन बर। लै ढिल्लीपति मूंद ॥
जानत सकल जिहनां बर। बजि निर्घोष सुदंद ॥ छं० ॥ १०१ ॥

शहाबुद्दीन का लड़ाई के लिये प्रस्तुत होना, उमरावों की तयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ साह बदीं सुरतनां। आइ गज जुद्ध निरष्षिय ॥
अगड मध्य चौगांन। वीस गजमत्त [1]सज्जकिय ॥
सहस एक गज झुंड। मंडि मंडल अविधानिय ॥
तहां गोरी बर बीर। दंति हक्कै दिन मांनिय ॥
गज एक सेत निज राषि बर। चढिय पिठ्ठ तत्तार षां ॥
सुरतांन षांन निसुरत्ति षां। चढि सुगज्ज बांई रुषां ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दिसि दष्षिन रुहाब। साहिजादा चढि दंतिय ॥
अवर सव्व उमराव। चढे गज बंधि सुपंतिय ॥
लाल झंड सम सिंघ। हेम रज्जंत साहि सिर ॥
हैदल पैदल अवर। गनिक को गनै गहव्वर ॥
महमंदचंद महावत्त सौं। बोलि साह पुर मांन दिय ॥
गज भूत सिंघ गज मुष्य है। अंनि सुअगडह अड्डु किय ॥ छं० ॥ १०३ ॥
दूहा ॥ इहि कहत तिन चर चवन। दिय दुबाह सुरतान ॥
निरषि साह उची निजरि। बे बुल्ले परसान ॥ छं० ॥ १०४ ॥
बाहन बर बाजै विविधि। असु अनैप आलान ॥
ठाढा कौतूहल कवल। करत दांन नवरे लोल ॥ छं० ॥ १०५ ॥
छंद उधोर ॥ मंडित उतंग उत्तिम छंद। स्वरथ सोभा सामह नंद ॥
छच विसाल बर दुति मौस। बाल विसाल उडगन ईस ॥ छं० ॥ १०६ ॥
आसन सिंघ मंड्यो राज। सामंत सूर भर कार साज ॥
राज चहुआन प्रथी नरेस। मंडिय चंद देव सुरेस ॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) को-कृ० ग-गमत। (२) मो-करशानन।

मास विषिय मंडी रेर । नइ निसान थांनइ भेर ॥
रै गैगुंजि नाना भंति । कच विराज कचनि भंति ॥ छं० ॥ १०८ ॥
मिलिभर जहां तहां भरि भीर । सूर समथ्थ जुद्ध सधीर ॥
जित नित द्दिष्षि रंग सरंत । आगम जांनि फूलि बसंत ॥ छं० ॥ १०९ ॥
बसन विराजि दसन कुआरि । लोल कलोल सुंदर नारि ॥
गावति हसति अलि अलि रासि । द्दग दुति कमुद किरनि प्रकासि ॥ छं० ॥ ११० ॥
जब लगि बढै वीर जराइ । तब लगि गह्हिन साहि बधाइ ॥
जब लगि बढत बर जर जांम । तब लगि करन मन्मन कांम ॥ छं० ॥ १११ ॥
सुनि उर लग्गि अग्गि उदार । परति न षिनक चैन दुवार ॥
बरु घर चवत चारु विचार । सिर दस वार नंमि उदार ॥ छं० ॥ ११२ ॥

दूत का ब्योरेवार दिल्ली का समाचार कहना ।

दूहा ॥ सुनत बत्त षुरसांन[1] बर । बोले दूत हजूर ॥
पुछै साहि उचित्त करि । विवरि षबरि संमूर ॥ छं० ॥ ११३ ॥

वचनिका ॥ सुरतांन सु विहांन सुलतान साहाब दीन ॥
करि करतार कि जोर । जासु किस्स जै अरु दल की जोरि जोरि ॥
जनु दरियाव की हिलोर । मिलते सों मुष जोरै ॥
अन मिलत सों षल षंचि कठोरै[2] । सुरतांन सुचिर दूमांन ॥
आंनि कही कायथ धूमांन । दिल्ली की षबरि विवरि लिषि दीनी ॥
अनंगपाल तूंअर बन बास लीनी ॥
देस है गै कोस पुत्री पुत्र प्रिथीराज कौ दीनी ॥
पष्य सत हुए वास कीनें । तरुनि पुत्र परिवार सुष चेंन ॥
पष्य पष्व कैमास कों भए आएं । मास दून दिन अठ भए चावंड बसाएं ॥
तीन मास लोहांन बीतें । बीस रोज कन्ह चहुआंन हूतें ॥
और सब सामंतकी बसही आंनी । कितेकों आंनतै मांनी ॥
चैाहांन वास की आग्या दीनी । सब सामंत सीस नांमि लीनी ॥
रोज बाईस तिस पर हमको राह लगे । पडि पतंग जग्गि सानंगे ॥

(१) मो०--सुरतांन । (२) मो०--षंचि के तारै ।

जबलगि न बैरी जराइ। तब लगि साह मारि करि आइ॥ छं० ॥ ११४॥

छंद पद्धरी ॥ उच्चर्यौ दूत प्रति गज्जनेस। चहुआंन तेज दिष्यो असेस॥
अनगेस राज तजि तिथ्य जाइ। सामंत सूर सब मिले आइ॥ छं० ॥ ११५॥
संकुरे सकल भुम्मिया भयांन। सेवंत आन दरबांन थांन॥
इक भजत भोमि तजि गहन ग्रेह। निय ना र रंम्म सके न नेह॥ छं०॥ ११६॥
इक मिलत आंनि तजि एंड अंग। षल षग्ग षंडि षेसें जु जंग॥
अजहूं सुसेन इक मनी नथ्य। गोरी सहाब इह घत्त तथ्य॥ छं० ॥ ११७॥

संबत् ११३८ में पृथ्वीराज का दिल्ली पाना॥

दूहा ॥ ग्यारह सें अडतीस भनि। भो ढिल्ली प्रथिराज॥
सुन्यौ साहि सुरतान वर। बज्जे बज्जि सु बाज॥ छं० ॥ ११८॥

अरिल्ल ॥ ग्यारह से अडतीसा मानं। भो ढिल्ली न्रपरा चहुआनं॥
विक्रम बिन सक बंधी सूरं। तपे राज प्रथिराज कहूरं॥ छं० ॥ ११९॥
कलिजुग अरु द्वापर की संधी। साको ध्रंम्म सुतह बल बंधी॥
ता पच्छै विक्रम बर राजा। ता पच्छै दिल्ली न्रप साजा॥ छं० ॥ १२०॥
कहि चरित्त दिल्ली परिमानिय। सब गुन साह बिबेकत जानिय॥
सबैं चरित्त कहे प्रति भट्टं। सोइ दूत अप्पै[1] प्रति घट्टं॥ छं० ॥ १२१

दूत का पृथ्वीराज का चरित्र कहना, शाह का खुरासान ख़ां आदि से मत पूछना।

छंद हैअप्परी ॥ दूत आइ दिल्ली प्रतिथानं। हेम सु है गै मुद्रित मानं॥
तपे राज दिल्ली चहुआनं। नाकरधू नागेंद्र प्रमानं॥ छं० ॥ १२२॥
एक बराह थिरं बेराहं। सकल छत्य सुरराज समाहं॥
को अग्या भंजै नर[2] विराजं। अप्प लज्ज सम सामंत लाजं॥ छं० ॥ १२३
मुष छुट्टे जो बैन प्रमानं। तो घल्लै अगि जुलित नथानं॥
सुनो साहि गोरी सुरतानं। एक अंग एकं मन ठानं॥ छं० ॥ १२४॥
पुब्ब लोइ दालिद्री नासं। सबै सुक तब टंक बिलासं॥
दंड हथ्थ जोगिंद सुदिष्यौ। नहि सुदंड प्रज्जा सिर पिष्यौ॥ छं० ॥ १२५॥

(१) मो-अगं। (२) मो-नह राज।

दुज उचिष्ट नह उष्ट अक्षी। कौन लंक कोइ कौन न भक्षी॥
कठिन कक्कुच त्रिया प्रकारं। कोइ न कठिन दुअन अधिकारं॥ छं०॥ १२६॥
कसै हेम सोनार सुवीरं। कोइ न कसी दरिद्र सरीरं॥
भै निरभै संसार सुजानं। सुनि सुनि राज हस सुरतानं॥ छं०॥ १२७॥
मोहन अहन सुहन गुन जानी। कहै दूत बिधि विधि परिमानी॥
सोहै मझ अहन अभिलाषं। मोज प्रवाह सुभंत बैसाषं॥ छं०॥ १२८॥
यों आवै बक्कै कवि मस्सं। इतौ राज अप्पै प्रति दिस्सं॥
सेन सुमंत सुमंतह सारी। भो मुष मंद मंद अभिमारो॥ छं०॥ १२९॥
यों जंपिय चहुआंन सुमंतं। त्यों अभिलाष गई मति तंतं॥
बोलि षांन तत्तार प्रकारं। कहौ मंत सो किज्जै सारं॥ छं०॥ १३०॥
अनँगपाल गौ तिथ्थ सुनिज्जै। चाहुआंन दिल्ली प्रति रज्जै॥ छं०॥ १३१

तातार ख़ां का दिल्ली पर चढ़ाई करने की सलाह देना।

दूहा॥ कहै षांन तत्तार वर। अहन चरित्त सुनंत॥
जे चरित्र ढिल्लिय न्टपति। काहि गोरी गुनमंत॥ छं०॥ १३२॥

कवित्त॥ कहै षांन तत्तार। सुनहि गोरी सुरतानं॥
सोहि मत्त जो किजियै। सजियै सेन परमानं॥
कही बत्त माधौ सुभट्ट। सोइ लिषि कायथ कग्गर॥
सोइ दूत कहि बत्त। सुत बोलैं न भट्ट बर॥
धरमांन नाम काइथ सुघर। तेनु चरित्त लिष्षे सबैं॥
अप्पै सुहथ्थ बंदीन ते। सुहन बीर बीरह तबै॥ छं०॥ १३३॥

तातारख़ां का मत मान कर सुलतान का सेना सजने के लिये आज्ञा देना।

दूहा॥ मानि मंत तत्तार वर। मति गोरी सुरतान॥
लिषि धरमानह कग्गरह। सुविधि विद्धि परिमान॥ छं०॥ १३४॥

गाथा॥ माधवं कोविदं भट्टं। गीतं काव्यं रसं गुनं॥
नट्टं चित्रं मत्ता विद्या। पिंगलं भरहं तथं॥ छं०॥ १३५॥

छंद मोतीदाम॥ निरंजन भट्ट सुमाधव वीर। कही तिन बत्त सुसत्ति सधीर॥
इहै कहि मत्त सुमत्त प्रमांन। सजी चतुरंगिनि सेन निषांन॥ छं०॥ १३६॥

कवित्त ॥ सेन साजि चतुरंग । लिषे कग्गर परिमानं ॥
थांन थांन प्रति जांन । साहि कट्ठे फुरमानं ॥
आइ सेन सजि थट्ट । सक्क सवै उमरावं ॥
चढिहै कंधे झपटि । जांनि उलथ्यौ दरियावं ॥
विधि रूप दैष गोरी नृपति । गहय मत्ति भंजन सयन ॥
ततार षांन षुरसांन षां । करे मत्त सच्चे बयन ॥ छं० ॥ १३७ ॥
गाथा ॥ सुनि श्रवनं चर बत्तं । बज्जानं घाव नीसानं ॥
निज है वर आरोहं । चढियं सजि गज्जनी साहं ॥ छं० ॥ १३८ ॥
कहि ततार गहि बग्गं । बसो छरोज अजर हो ग्रेहं ॥
राज पंच मिलि सयनं । करि सुबसि सिंघ चहुआनं ॥ छं० ॥ १३९ ॥
कहिय साहि बर बत्तं । सुनि ततार सह तुम साजं[1] ॥
अरि आघात समथ्थं । सद्धि सुसिद्धि निद्ध कज्जायं ॥ छं० ॥ १४० ॥

शाह की सेना का धूम धाम से कूच करना ।

छंद पद्धरी ॥ चढि तमकि चल्यौ गोरी सहाव । उलट्यौ जांनि सायरन आव ॥
पुठि प्रवाह मिलि चलिग सेन । विधि विधि प्रवाह सुर भरि जलेन ॥ छं० ॥ १४१ ॥
द्वादसह कोस किन्नौ मुकांम । डेरा सुदीन नारौल गांम ॥
मिलि पुट्ठि आइ सब सेन भार । है लष्य मीर गरुअत्त भार ॥ छं० ॥ १४२ ॥
बाजिय वीर बज्जन विसाल । नारद नंचि तिन भ्रकुटि ताल ॥
बित्ती त्रियाम उग्गयौ सूर । दल चल्यौ सत्त जनु सिंधु पूर ॥ छं० ॥ १४३ ॥
संक्रमन सेन हूऔ हुलास । चलि विषम सुषम डेराह भास ॥
षुर धूरि पूरि धूंधरिय भांन । गद्दबर सुबत्त सुनियै न कांन ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दर कूच कूच उत्तरिय सिंध । दल विषम हत्त उर साहि बिद्ध ॥
किन्नौ मुकांम आगार आर । डेरा सुदीन दल उंच ठार ॥ छं० ॥ १४५ ॥
झंडे अनंत गडि विविध रंग । फुल्ल्यौ बसंत बनराइ चंग ॥
चर चले धरनि दिल्ली सुथांन । दल कहै चरित षुरसान षांन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
दूहा ॥ कहै चरित सुरमांन सौं । जे देषे तिन दूत ॥
घुरि निसांन भद्रव भरिय । इम दिष्षिय अदभूत ॥ छं० ॥ १४७ ॥

(१) मो-सारं ।

भुजंगी ॥ घुरै नद्द नीसांनं उग्गंत सूरं । बरं बीर बाजिच बज्जे करूरं ॥
घनं पष्षरे बाज दंती सदस्सं । दलं रुज्जि सत्ताइयं अब्बदस्सं ॥छं०॥१४८॥
रचियं फौज भरं होइ कट्ठ साइं । नहां बीर धीरं गुरं गज्ज गाइं ॥
नहां बिहियं दंति जममत्त मत्तं । नहां रुच रंगं चियंगे ढरंतं ॥छं०॥१४९॥
नहां बीर माची उमाची सुरानी । नहां ढाल बहु रंग अंगी ढुरानी ॥
दिसा बांम तत्तार गोरी सु अन्नी । दिसा दाहिनी षांन षुरसांन रन्नी ॥छं०॥१५०॥
मुषं अग्ग बेतंड सेरंन षांनं । रतं बैरषं रत्त गज गाह ठानं ॥
तिनै रत्त उच्चारि कारत्त ढारं । रजं रत्त भंडं नरं तान धारं ॥छं०॥१५१॥
अनी साहि पुट्ठं विचें साहि साजं । अगें अग्ग बाजी हथं नारि साजं ॥
अगें बांन गीरं सजे जुद्ध सारं । ....मुषै मारमारं ॥छं०॥१५२॥
सुरं दीन दीनं कलिं कूक फुट्टी । भरं आइ बालं भरी जुद्ध घट्टी ॥
उडी डंबरं अंबरं रेनु पूरं । बरं बाज आघात बज्जे करूरं ॥ छं० ॥१५३॥

शाह की दो लाख सेना का सिंधु के पार उतरना ।

॥ गज्जनेस सब सेन जुरि । आयौ सिंधु उलंघि ॥
कूच कूच आतुर षरिग । दोइ लष्ष दल संघि ॥ छं० ॥ १५४ ॥

का यह समाचार सुनकर अपने सरदारों से परामर्श करना

॥ सुनिय बत्त पृथिराज । बोलि कैमास मंत्र बर ॥
कंन्ह काइ[1] चहुआंन । बिरदि बज्जेति[2] नाह नर ॥
रा पज्जून पवित्त । सलष पमार जैत सम ॥
ड्राम देव जहों जुबान । पर संग राव प्रम ॥
पुंडीर सेन चंदह सुमति । लोहांनौ आजान भुअ ॥
मिलि सकल मंत पुछिय प्रथुक । सनमांनिय सोमेस सुअ ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कैमास का मत देना कि हम लोग आगे से बढ़कर रोकें ।

कहिय मंत कयमास । सुनौ सामंत सब्ब भर ॥
गज्जनेस आयौ सु सज्जि । सब सेन अप्प पर ॥
कूच कूच उभ्भार । सुन्यौ उत्तार सिंधु नद ॥
सिंध मंत सुभ रच्यौ । फौज चंपी न होइ हद ॥

(१) मो-कक्क । (२) मो-छज्जेति ।

आयौ सुराव चावंड तब । कहा विरम रच्यौ सयल ॥
इह मंत सिनह सज्जे सकलि । चढि रन चंपहु दुष्ट षल ॥ छं० ॥ १५६ ॥

इस मत को सब का मानना ।

दूहा ॥ मांनि मंत सामंत सब । हरषि राज प्रथिराज ॥
बत्त परट्ठिय ग्रेह गय । अप्प अप्प जुस साज ॥ छं० ॥ १५७ ॥

पृथ्वीराज का सबेरे उठ कर कूच करना ।

अरुनोद बेरां विहसि । बज्जि निसांन निहाइ ॥
चल्यौ राज चहुआंन तब । चिंति अप्प जुध चाइ ॥ छं० ॥ १५८ ॥

कवित्त ॥ नषत सुरंग सुरंग । सुरन प्रमांन सथ्थ लिषि ॥
सांम दांन अरु भेद । दंड निरनै बिसेष सिषि ॥
इहत काल इह घरिय । साहि सज्जे चतुरंगिय ॥
सुनि अवाज सुरतांन । हिंदू करिहै रन जंगिय ॥
प्रति कूच कूचनि करि प्रसनि । चाहुआंन न करै बिषम ॥
सो मत्ति मांनि माधव सुकथ । सुबर वीर बज्जे सुषम ॥ छं० ॥ १५९ ॥
चढ़ौ राज प्रथिराज । करन मुक्क्यौ प्रति साजिय ॥
बाइ गंठि बंधइय । सुबर मानंक सु ताजिय ॥
मंच बंधि कैमास । कन्ह चहुआंन सु निड्डुर ॥
अहत बत्त सज्जए । सूर सामंत तत्त गुर ॥
विधि रूप भूप जानन सकल । तत्त मंत बत्तह सुबर ॥
संग्राम सूर साधै सकल । षग झिल्लि बज्जी सुकर ॥ छं० ॥ १६० ॥

दूहा ॥ चल्यौ राज प्रथिराज बर । सजि सुभट्ट अप्पांन ॥
विकसे अंबुज बीर बर । काइर कंपत प्रान ॥ छं० ॥ १६१ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज । मंगि गज रूप सुताजिय ॥
षिचिय जाति सुभांति । हेम नग साकति साजिय ॥
बंधि सत्त सैं तान । बांन तीषे सुभाल जल ॥
बोलि कन्ह चहुआंन । मंच कैमास बुद्धि बल ॥
बोले सु सब्ब सामंत भर । अरु जु सूर सथ्थें सयन ॥
आए सुराज अग्या सुसजि । चले जुद्ध सिर सजि गयन ॥ छं० ॥ १६२ ।

पृथ्वीराज की सेना का वर्णन ।

छंद चोटक ॥ चढ़ि राज चल्यौ सब सेन सजं । उड़ि षेह रजं ढकि अंब रजं ॥
सुर थंबक रोर नषत्र षयं । सप्तनाश्य सिंधु बसंत छियं ॥ छं० ॥ १६३ ॥
बिकसे अरविंद सुबीर उरं । किन नंकिय कातर नारि नरं ॥
दल संग जु ग्रिद्ध पयांन सजं । हरषै नचि जुग्गिनि जुद्ध रजं ॥ छं० १६४॥
दह सत्त सहं सदलं मिलियं । नव कोस सुनल्ल मिलान दियं ॥
अनि कूचह कूच दलं धरियं । जल पंथह जाइ सु उत्तरियं ॥ छं०॥१६५॥

युद्धारंभ होना ।

दूहा ॥ कूच कूच गोरी सयन । जकि आयौ जल पंथ ॥
सुदि बैसाष म्रग भ्रगु दसै । सज्जयौ जुद्ध समंथ ॥ छं० ॥ १६६ ॥
दिष्षि रेन डंबर डहर । चढ़िय चाइ चहुआंन ॥
सुर आनंद अनंद किय । कायर कंपि पुलांन ॥ छं० ॥ १६७ ॥

युद्ध वर्णन ।

छंद मुकुंद डामर ॥ ढलक्कतिय ढाल निसांन नचि सिय चंचल सूर चढे कसियं ॥
चक टोप सरूप रँगा दह हथ्थल जोप सनाह विधिं जरियं ॥
रस मंस उक्कसत मुक्क तिरक्किय दांन सगानन न्हान कियं ॥
नचि नारद तुंमर अंबर आनंद ईस सु सिंगिय नद दियं ॥ छं० ॥१६८॥
चढि अच्छरि ईसय सीस निरष्षन बीर जु जुद्द बिनोद नचं ॥
सुर रचिय रथ्थ अयास सुबासिय गोद चवट्ठिय मांनि सचं ॥
नृप रचिय फौज सुपंच प्रपंचिय गज्जिय गैन सिरं धरियं ॥
भरमंनिय अप्प सु जैत प्रकासिय बंदि बिरद्द प्रती परियं ॥ छं० ॥ १६९ ॥
बर सांइय सुब्भर जीव कलप्पिय मंनि अनंत सु सीस भुअं ॥
पल बारि बलद्धर श्रोन सकत्तिय डिंभु अगिद्धिय चित्त धुअं ॥
सुष नैंन मुरत्तिय श्रोन मुरत्तह मुक्कह भोंह उभं धुकजं ॥
नृप दिष्षिय सुब्भर सूर अनंदिय के कसि बीरति फौज सजं ॥छं०॥१७०॥
कवित्त ॥ इत रचिग सेन सामंत । जुद्ध माह रा भष्षन ॥
मोर ब्यूह आकार । अप्प दुर्जन दल दग्गन ॥

एक पंथ निठुर नरिंद । सथ्थ कैमास रांम भर ॥
दुतिय पंथ अन माइ । बलिय बलिभद्र सार भर ॥
पिछ पाइ नव राज हुआ । रषइ पुंछ पज्जून भर ॥
पुंडीर चंद कीनो नृपति । मधन रंभ मध्यौ सुथर ॥ छं० ॥ १७१ ॥
दष्षिन दिसि कैमास । बांम दिसि कन्हति सज्जिय ॥
च्यार सहस सेना सजंत । नील फर हर ढल रज्जिय ॥
सकट व्यूह सजि सुभर । काग चामंड अग्ग करि ॥
मंच राज ढंढरिय । ठंठ माहू मद्दन धरि ॥
चंदेल माल भौंहा सुभर । उभय चक्र सज्जे उभय ॥
प्रथिराज अनी दष्षिन दिसा । विषम बीर सज्ज्यौ सुरय ॥ छं० ॥ १७२ ॥
अवर अनी सामंत । घरे नव वीय महाभर ॥
सोलंकी रन बीर । सुतन विंझह सुराज बर ॥
षीची राव प्रसंग । वीर पम्मार सहथ्थं ॥
सुवर बीर अवसांन । करन प्राक्रंम अकथ्थं ॥
पंम्मार दोइ सिंघह सुअन । सुअ प्रसंग सागर बरन ॥
बघ्घेल भींम लष्षन सुअन । रांम बांम हय हभ्भरन ॥ छं० ॥ १७३ ॥
बांई दिसि चहुआंन । कंन्ह सज्ज्यौ दल बद्दल ॥
सहस तीस सजि सेन । मध्य सामंत अठुबल ॥
हर सिंघह बर सिंघ । हभ्भक हंमीर गंभीरह ॥
मंडली कमल नाल । भांन भट्टी बर नीरह ॥
उदिग पगार बिरदैत बर । सोलंकी सारंग उर ॥
सिर कन्ह कच सज्यो नृपति । भार सयंनह जुद्ध भर ॥ छं० ॥ १७४ ॥
मुष अग्गौं पम्मार । सलष सम जैत सु सज्जिय ॥
लोहांनौ आजान । तिन मद्धि विराज्जिय ॥
सहस पंच सेना समथ्थ । पंम्मार सिंघ सम ॥
मध्य सूर सामलौ । भीम चालुक्क पर जम ॥
ठंठरी टांक चाटा चपल । धवल जसह लोहांन सुअं ॥
लोहांन बंध केसरि समथ । अग्र भाग सब सूर हुअ ॥ छं० ॥ १७५ ॥

मध्य भाग प्रथिराज । सहस सेना सु च्यारि सजि ॥
चंद्र सेन पुंडीर । राइ पर सिंघ सिंघ गजि ॥
बिंझ राज लष्यन बघेल । राइ रामह कनक्क सम ॥
कूरंभह पज्जून । भीम चहुआन भीम क्रम ॥
भावरह दास मंधे समथ । चाहुआंन नृप कन्ह सुअ ॥
गोइंद राव भुज हथ्थ न्टप । जुद्ध पथ्थ जै वज्र भुअ ॥ छं० ॥ १७६ ॥
जांम देव जद्दों जुवांन । न्टप पुट्ठि सु रज्जिय ॥
स्याम चमर पष्परह । स्यांम गज ढाल सु सज्जिय ॥
लंगी लंगर राव । अल्ह परिहार सूर बर ॥
अचल अटल्ल चहुआंन । सिंह बारड अभंग भर ॥
जंघाल राइ भीमह सुबर । सागर गुर रिन झूरि बल ॥
सामंत सकल सज्जे समय । कज्ज राज प्रथिराज दल ॥ छं० ॥ १७७ ॥
उत गोरी सुरतांन । सज्जों सेन अध चंद्रं ॥
अर्द्धचंद्र तत्तार । षांन षुरसान सु इंदं ॥
अर्द्धचंद्र बर सार । षान षीरोज स इंदं ॥
मधि कलंक जल्लाल । बीर रस बीर समंदं ॥
उज्जल निसंक दोउ कोर बर । तेज ताप सुरतांन डर ॥
चहुआंन राह लग्गन फिर्यो । पूरन पुनिमासी सगुर ॥ छं० ॥ १७८ ॥
छंद भुजंगी ॥ इसी लीन जो गिंद जो गिंद भासै । उडी गिद्ध पच्छे मनों मोन भासै ॥
कहै नद्द नंदीं सुनारद्द बीरं । मनों जोग जोगाधि को अंत नीरं ॥छं०॥१७९॥
करक्कंत बानं धरक्कंति बेनं । गए लज्ज पांबी फटे पक्क पेनं ॥
मयं मत्त दंतीन की पंति सोभै । तिनं देषते इंद के चित्त लोभै ॥छं ॥१८०॥
झटक्कंत दंती सुपंती प्रकारं । बलाकंति पंती बगं मेघ सारं ॥
झरं डंमरं रैन रुकि भूर नभ्भं । कलापंत पंतीन की सत्त सभ्भं ॥छं०॥१८१॥
दूहा ॥ दिषिय रेंन डंमर उहर । चढ्यौ चाय चहुआंन ॥
सूर अनंद अनंद किय । कायर कंपि परान ॥ छं० ॥ १८२ ॥
सज्यौ सेन जंगल सु पहु । जिम बद्दल आकास ॥
ढलकि ढाल ढिल्ली मिली । बिषम बीर रस रास ॥ छं० ॥ १८३ ॥

घोर युद्ध होना, सुलतान की सेना का भागना॥

भुजंगी॥ ढलक्को मिलो ढाल ढालं दुसेनं। चढे देव देषै रचै रथ्थ गेनं॥
हकै हक्क बज्जी गजै तार[1] नारं। महा जुद्ध लग्गे। उथ्यौ घोम
धारं॥ छं०॥ १८४॥
छुटै बांन हवाइ[2] अप्पार भारं। जगी दामिनी इंद्र भादों सुढारं॥
मिलो कन्ह अन्नी षुरासान अन्नी। महा षेत मत्तौ गजं गाह रन्नी॥
छं०॥ १८५॥
छुटै बांन कम्मान रुक्यौ सुगेनं। उवं जुद्ध दिट्ठं न प्राचार नेनं॥
उभै जुद्ध मंड्यौ महा भार भारं। भरं टून भग्गे धरं धार धारं॥
छं०॥ १८६॥
गिरैं उत्तमंगं धरं सूर नंचै। भरं सीस कंमाल्नियं माल संचै॥
करै जोगिनी जोग उच्चार बीरं। पियें श्रोन धारं अपारं सुधीरं॥
छं०॥ १८७॥
मिले षेत षुरसांन षां कन्ह धायौ। उरं भारि सींगी अपुट्ठं गिरायौ॥
पर्यौ भूमि षुरसांन षांनं सुघाए। अनी भग्गि गय और सुरतांन ठाए॥
छं०॥ १८८॥
परे सहस दो षांन कढि षेत साजं। बजी जैत देषी प्रथीराज राजं॥
भगी फौज सुलतांन देषी बिहालं। कुप्यो साहि षुरसांन किय नैंन लालं॥
छं०॥ १८९॥

फ़ौज को भागते देखकर सुलतान का क्रोध करना।

दूहा॥ भगी फौज सुरतांन दिषि। कोप्यौ साहि सहाब॥
बहुरि मिलत जनु मेघ घुरि। सावन बद्दल आब॥ छं०॥ १९०॥

सेना को ललकार शाह का फिर ज़ोर बांधना।

कवित्त॥ हक्कि सूर सुरतान। साहि बंध्यौ बल भारी॥
अग्गैई चौरंग। राज रष्षन अधिकारी॥

---

(१) मो०--नारि।
(२) मो-हवाय।

सुनै साहि सुरतान। साहि जीवन सुरतानं ॥
सुबर वीर हिंदवान। कलह चंपै हिंदवानं ॥
दीजै न दान दुर्जन घरह। दइ दुवाह ऊभौ न्रपति ॥
मुरि भग्यौ साहि सुरतान कौं। साल रहै जीवत सुपति ॥ छं० ॥ १९१ ॥

तातारखां का मारा जाना, सुलतान का हिम्मत हारना, पृथ्वीराज की विजय।

तब कही षांन तत्तार। साह मंनी परिमानं ॥
रुप्यौ साहि नरिंद। साहि षुरसांन सबानं ॥
घरी एक आवद्ध। बीर बीरह रस मथ्या ॥
षेत परे तत्तार। साह गोरी गई सत्या ॥
मुद मेल साह चहुआंन हुअ। चैथप्परि ढौरे असुर ॥
चामंड राइ दाहर तनय। जै सबद उचरंत उर ॥ छं० ॥ १९२ ॥

दूहा ॥ दंतिपत्ति चल्लिय विहर। जलद कि पब्बय पाइ ॥
बाइ सहाई कै अनल। कै ग्रीषम लगि लाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥

छंद माधुर्य ॥ दव दवरि दवरित सेंन डंमरित गज्ज गग्घरित सद्दयं।
बिरहंत भद्दव जलद चद्दव कीच मच्चित भद्दयं ॥ छं० ॥ १९४ ॥
गिरि पंषि उल्लसि उडय दस दिसि बाय बेग करि करें।
देषंत मन गति होत पंगुर दांन बरषत गिरि भरें ॥ छं० ॥ १९५ ॥
गज पंति दंतिन कंति उज्जल बग्ग पंति कि राजए।
रवि किरन बद्दल मध्य मानहु अन्य सोभ सु साजए ॥ छं० ॥ १९६ ॥
बर करत अनतह षग्ग षुल्लत उडत किरच सुषंडि कै।
दुल चंद मानहु कोपि उडगन अद्ध रयनीय छंडि कै ॥ छं० ॥ १९७ ॥
चल मल्लिय है दल दल्लित पैद्दल सैल सिषरह फट्टियं।
गोपीय कन्हं जनु अगन्हं सार मार उघट्टियं ॥ छं० ॥ १९८ ॥

दूहा ॥ गज्जन सम्मवर रोस रस। बज्जिग मार अपार ॥
षोल्लि षग्ग संभरि बल्लिय। जनुपाइक पुंतार ॥ छं ॥ १९९ ॥

छंद रसावला ॥ करी मत्त भारी बहै सार धारी। दुहथ्थं करारी। तुटै दंत जारी ॥
छं० ॥ २०० ॥

रदं किच भ्भारो। मांने मच्छ वारी ॥ लगें बांन भारी। गिरं टिड्डि चारी ॥
छं० ॥ २०१ ॥

लगें संग भारी। मनों ब्रज्ज तारी ॥ उठें छंद धारी। मनों धूम भ्भारी ॥
छं० ॥ २०२ ॥

लगें केक टारी। घनु चंद्र धारी ॥ लगी दंति अंतो। भ्रिनाली सुहंती छं०॥२०३॥

भरंके उक्कारें। बकें मार मारें ॥ ढहै गज्ज जारी। गिरं अंग सारी ॥छं०॥२०४॥

दूहा ॥ गज्जन गज गज्जै सुभट। रहै रोकि रन रंग ॥
छिति छज्जै छिची इसे। जिसे भीम अनभंग ॥ छं० ॥ २०५ ॥

पद्धरी ॥ अति उद्ध जुद्ध अनबद्ध सूर। बलवंत मंत दीसै करूर ॥
भ्भलमलहि संग फुटि परहि तुच्छ। उप्पमा चंद जंपै सुअच्छ ॥छं०॥२०६॥
दल स्यांम हृदय सोभै प्रमांन। मानों कि पंचमो भाग भांन ॥
बर संग फुट्टि सिप्पर प्रमांन। कर स्यांम राह सुभ्भै समांन ॥छं०॥२०७॥
मानों कि राह ग्रहि ससिय आइ। कुट्टी कि किरन बद्दल नचाइ ॥
किरवांन बंक बट्ठी बिसाल। ससि बनिय डोरि करि चक्र चाल ॥छं०॥२०८॥
सिप्पर सुस्यांम हेमह सुहंत। मांनो कि चक्र हरि धरिय संत ॥
लै संगि अंग है हनि उठाइ। उप्पमा चंद जंपै सुभाइ ॥ छं० ॥ २०९ ॥
मांनो कि हथ्थ हथिनापुरेस। घंचै सु बलिय बलिभद्र भेस ॥
प्रथिराज करिय करि संग सुद्ध। लांगल भेस दीसंत उद्ध ॥ छं० ॥२१० ॥
मांनों कि रांम कांमह प्रमान। घंचैति द्रोन हनमंत जांन ॥
ढहि पय्यो गज्ज वर षेत भूमि। मांनो सुभ्र सुरनिय अंत भ्भूमि ॥छं०॥२११॥

दूहा ॥ चक्र रूप दोइ दीन दल। बल अभूत बलवंत ॥
जांनि जुगंतह जम लरैं। करन प्रथीपुर अंत ॥ छं० ॥ २१२ ॥

छंद बिअष्षरी ॥ पूरन ससि सुरतांन नरिंदं। भारथ राइ भिरैं भर दंदं ॥
हींदू सेन चढे रिन षेतं। जित्तन दल षुरसान सुहेतं ॥ छं० ॥ २१३ ॥
डोंरु हथ्थ डबै कर डावै। सींधू राग श्रवै सुर गावै ॥
नंचै बर बेताल चिघाइ। नारद नद्द करै किलकाई ॥ छं० ॥ २१४ ॥
सुर रत्तं सुर बीर प्रमानं। उडै उक्कंग अरिन निद्धानं ॥
दाहिंम्मौ दाहिर अधिकारी। गहन साह गोरी पग रारी ॥ छं० ॥ २१५ ॥

जंपे मेछ कुसाद कुसादे। पारसीय मीरं रसवादे ॥
षां ततार षुरसांन पषानं। गहें सूर संमुह रन वानं ॥ छं० ॥ २१६ ॥
पंच बांन वह ते अधकोसं। सह्यो नाह नरिंद सरोसं ॥
रह्यौ दिष्षि साहि सब षानं। गहिय तेग अनमित्त जुवानं ॥ छं० ॥ २१७॥

दूहा ॥ मिले षेत रन रंग रस। षां ततार कैमास ॥
विषम रुद्र रत्तौ बिहसि। मनों तेग रस रास ॥ छं० ॥ २१८ ॥

छंद मोतीदाम ॥ मनों रस रासय तेगय तार। करकर बज्जिय रीठ करार ॥
चलंतह बांन सुभांन क्वान। निरष्षत अच्छरि व्योम विमांन ॥छं०॥२१९॥
छुटै गज बाज अनंदिय जात। मनों लगि गोम उदोत उदात ॥
भिरैं भय षोम सु धूंधय भार। लषै न को सूरति एक दुरार ॥छं०॥२२०॥
फिरैं धर वज्जिय भार करार। ठिलें नठिलाइ न मन्निय हार ॥
नटं भति जोगिनि नंचिय बीर। मिटी सिर मालह संकर पीर॥ छं०॥२२१
मिले कयमास ततार सुअंग। हन्यो कयमासह जांनुय संग ॥
फुटी जुग जंग तुरंग समेत। पर्यौ हय मुच्छ ततार सुषेत ॥ छं० ॥ २२२ ॥
बिना सिर नंचिय सठ्ठि कमंध। चले असि टेकि सु तुट्टिय रंध्र ॥
विलै विकमंध कमंध सुबीर। सहस्सह पंच परे रन मीर ॥छं०॥ २२३ ॥
भगी रन फौज सु चंडह साहि। जिते रन हिंदुअ ठट्ठ सुठाहि ॥ छं०।२२४॥

पृथ्वीराज का सुलतान की सेना का पीछा करना।

दूहा ॥ भगी अनी तत्तार लषि। दल परमारह चंप ॥
धप्यौ राज प्रथिराज तब। लेहु लेहु मुष जंप ॥ छं ॥ २२५ ॥

छंद पद्धरी ॥ धप्यौ सुराज प्रथिराज हक्कि। उर रोहि सेन उप्परैं धक्कि ॥
मिलि फौज उट्ठकिय एक ठांम। आघात रीठ मत्ती उरांम ॥छं०॥२२६॥
किलकार हक्क बज्जी करार। आवद्ध तुट्ट मुष धार धार ॥
चंप्यौ पटाटि चामुंड राव। हल हल्ल हूक मते हलाव ॥ छं० ॥ २२७॥
बीभच्छ मंत विय भर अछर। आवद्ध जांम मच्यौ कहर ॥
संगें सुसंग असि असी घाइ। पट्टा सुपट्ट बज्जे निघाइ ॥ छं० ॥ २२८॥
जम दड्ढ दड्ढ जुट्टें विरांम। कुलिका सुधाव जुट्टे सुजांम ॥

पाटू सुढींक परहार पार। मिले लथ्थ बथ्थ झुंझे झुझार ॥ छं० ॥ २२९ ॥
कर केस केस एकह अलुझ्झ। कुरिका सअंनि बाहैं सुलझ्झ ॥
तुट्टंत अंत चंपंत पाइ। तुट्टंत सीस जनु विषम बाइ ॥ छं० ॥ २३० ॥
किन नतं परत दंती सभार। है परैं विहंड षंडे सधार ॥
है गै परंत धर पूरि पारि। घन ओन अंब पूस्यौ सवारि ॥ छं० ॥ २३१ ॥
लग्गे ससंग नेजा सुढाल। सोहंत पाल तरवर सुहाल ॥
कच्छपह सीस गजराज नूप। धर परे हय गय मगर रूप ॥ छं० ॥ २३२ ॥
तुट्टे सुबांह मनु मीन पांन। सोहंत मीन वर विविध जांन ॥
सोहंत सीस अंबुजह सूर। से बाल चिकुर रज्जे बिहूर ॥ छं० ॥ २३३ ॥
विगसंत नैंन सुरंगी न दिट्ट। अंबुज निसांनि मधुकर बयट्ट ॥
षप्पर सुभरे कालिका वारि। विन हंस सूर उड्डे उभारि ॥ छं० ॥ २३४ ॥
पट्टाटि पस्यौ चामंड धाइ। विहरंत विषम बज्यौ सुघाइ ॥
दिष्यौ सुघाइ साहाब दिठ्ठ। आवद्ध मंत मत्ती सुरिठ्ठ ॥ छं० ॥ २३५ ॥
मिल्ल्यौ सुघाइ चामंड राइ। हय हये उंन उन्नं उनाइ ॥
हय परै बथ्थ लग्गेव सूर। थल घाव रिट्ठ मत्ती कहूर ॥ छं० ॥ २३६ ॥
चंपे सुमीर उप्परह धक्कि। सामंत सूर लग्गे विहक्कि ॥
धर परे षेत तहां दस्स मीर। सामंत पंच परि षेत तीर ॥ छं० ॥ २३७ ॥
धरि लियो साहि चामंड राइ। नव सहस मीर तुट्टे सुघाइ ॥
चामंड राव हय दिय षवास। सादूल नाम पावार तास ॥ छं० ॥ २३८ ॥
भग्गौ सुषेत सुरतान सेन। जै जया सद्द सुर सद्द गेंन ॥
जे परे मीर सामंत षेत। वरदाय चंद ते गनिव हेत ॥ छं० ॥ २३९ ॥

कवित्त ॥ पस्यौ भीम चहुआंन। बंध भाषरह महाभर ॥
सांमदास चय बंध। सुतन चहुआंन नाह नर ॥
पस्यौ षेत जस धवल। सुअन सोहान समथ्थं ॥
केसर केहरि रूप। बंध सोहांन सुतथ्थं ॥
रन परे पंच सामंत बर। षेत रीठ मत्ती भरन ॥
चामंड राइ दाहर तनय। गहत साहि पष्षल सुरन ॥ छं० ॥ २४० ॥

पस्यो षांन सेरंम्न । चितंड मुलतांन षांन धर ॥
माह मीर सुभीर । मीर जेहांन महाभर ॥
मीर जमुन गजनीय । षांन महमुंद मीर वर ॥
फतेजंग मीरह सुभीर । हासंन ह अंनर ॥
काली बलाइ विरदैत बर । मीर अवल्ल सुजुझ्झ मन ॥
दस परैं षेत वानैत तब । गहत साहि पष्षल सुरन ॥ छं० ॥ २४१ ॥

अवर अनी सांमत । परे रन मीर महाभर ॥
सोलंकी रन बीर । सुतन वीभ्भह सुराज बर ॥
षीची राव प्रसंग । सुतन सागरह समथ्थं ॥
मडंन बंध पसंग । हीर पामार सु हथ्थं ॥
पामार नीरध्वज सिंधु सुअ । सुत प्रसंग सागर सुअन ॥
बघेल भीम लष्पन सुबन । राम वाम दह्य डरन ॥ छं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ सहस एक हिंदू अवर । परे याइ रिन षेत ॥
सहस आठरह असुर दल । परे सुबंधन नेत ॥ छं० ॥ २४३ ॥

सहस सात हय षेत रहि । परे पंच से दंति ॥
लुथ्थि कोस पंचह प्रचर । परे सुपाइल अंति ॥ छं० ॥ २४४ ॥

षेचर भूचर हंसचर । पलचर रुधिचर चार ॥
न्रप आनंदिय राजकहुं । चलि जै जंपि उचार ॥ छं० ॥ २४५ ॥

सूरन सीस जु ईस जुरि । सुर रज्जे बर रथ्थ ॥
रजि अच्छरि आसिष्प दिय । बर लड्डे बर हथ्थ ॥ छं० ॥ २४६ ॥

चामंडराय का सुलतान को पकड़कर पृथ्वीराज के हाथ समर्पण करना।

कवित्त ॥ बंधि साह चामंड । दियौ प्रथिराज सुहथ्थह ॥
राज मांनि पतिसाह । आनि सुष्पासन तथ्थह ॥
कियौ दंड पतिसाह । सहस अठ्ठह हय सुब्बर ॥
सोइ अह्व प्रथिराज । दियौ चामंड महाभर ॥

मुक्यौ सुराज सुरतांन गहि । रोहि सुवासन पठय घर ॥
जित्यौ सुराज प्रथिराज रिन । जय जै सद्दय सुर अमर ॥ छं०॥ २४७ ॥

सुलतान को एक महीना दिल्ली में रखकर छोड़ देना ॥

बंधि साह सुरतांन । राज ढिल्लीपुर पत्तौ ॥
दंड मंडि सुबिहान । राज जस जस गुन रत्तौ ॥
चामर छच रपत्त । सकल लुट्टे सुरतानं ॥
मास एक बर बीर । रष्षि मुक्यौ सुविहानं ॥
जय जय सुमत्त कित्तिय कवित । डोला राज नरिंद बर ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम । भयौ न को रवि चक्र तर ॥ छं० ॥ २४८ ॥

दूहा ॥ माधौ भट्ट सुमंत कथ । सुमत चित्त परमांन ॥
सुबर साहि गोरी न्टपति । बंधि छंडि उनमांन ॥ छं० ॥ २४९ ॥

इस विजय पर दिल्ली में आनंद मनाया जाना,
बहुत कुछ दान दिया जाना ।

बँटि बधाय दिल्ली सहर । जीते आवत राज ॥
द्रव्य पटंबर विविध दिय । बज्जा जीत सु बाज ॥ छं० ॥ २५० ॥
दुजिय सुबद्दिय प्रति दुजह । प्रिथ्था व्याह विगत्ति ॥
किमि फिर बंध्यौ साह रिन । किम धन लद्ध सुमत्ति ॥ छं० ॥ २५१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके माधौ भाट कथा पातिसाह ग्रहन राजाविजय नाम उनविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १९ ॥

अथ पद्मावती समय लिख्यते ।

(बीसवां समय ।)

पूर्वदिशा में समुद्रशिषर गढ़ के यादवराजा विजयपाल का वर्णन ।

दूहा ॥ पूरब दिस गढ गढनपति । समुद सिषर अति द्रुग्ग ।
तहँ सु विजय सुर राज पति । जादू कुलह अभग्ग ॥ छं० ॥ १ ॥
धसम हयग्गय देस अति । पति सायर म्रज्जाद ॥
प्रबल भूप सेवहिं सकल । धुनि निसाँन बहु साद ॥ छं० ॥ २ ॥

विजयपाल की सेना, कोष, दस बेटे, बेटी का वर्णन ।

कवित्त ॥ धुनि[1] निसान बहु साद । नाद सुरपंच बजत दिन ॥
दस हजार हय चढ़त । हेम नग जटित साज तिन ॥
गज असंष गजपतिय । मुहर सेना तिय संषह ॥
इक नायक कर धरी । पिनाक धरभर रज रष्षह ॥
दस पुत्र पुत्रिय एक सम । रथ सुरङ्ग उंमर डमर[2] ॥
भंडार लछिय अगनित पदम । सो पदम सेन कूँवर सुघर ॥ छं० ॥ ३ ॥

कुँअर पद्मसेन की बेटी पद्मावती के रूप गुण आदि का वर्णन ।

दूहा ॥ पदम सेन कूँवर सुघर । ता घर नारि सुजांन ॥
ता उर इक पुत्री प्रगट । मनहुँ कला ससिभांन ॥ छं० ॥ ४ ॥
कवित्त ॥ मनहुँ कला ससिभांन । कला सोलह सो बन्निय ॥
बाल बेस ससिता समीप । अंम्रित रस पिन्निय ॥
बिगसि कमल स्रिग भमर । बैन षंजन म्रग लुट्टिय ॥
हीर कीर अरु बिंब । मोति नष सिष अहि घुट्टिय ॥
छ्रपति गयंद हरि हंस गति । बिह बनाय संचै सचिय ॥
पदमिनिय रूप पदमावतिय । मनहु कांम कामिनि रचिय ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) क्र-घन । (२) को-भमर ।

दूहा ॥ मनहु काम कामिनि रचिय। रचिय रूप की रास ॥
पसु पंछी सब[1] मोहनी। सुर नर मुनियर पास ॥ छं० ॥ ६ ॥
सामुद्रिक लच्छन सकल। चौसठि कला सुजांन ॥
जानि चतुर दस अंग षट। रति बसंत परमांन ॥ छं० ॥ ७ ॥

पद्मावती एक दिन खेलते समय एक सुग्गे को देख कर मोहित हो गई और उसने उसे पकड़ लिया और महल में पिँजरे में रक्खा।

सखियन सँग खेलत फिरत। महलनि बाग निवास ॥
कीर इक्क दिष्षिय नयन। तब मन भयौ हुलास ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ मन अति भयौ हुलास। बिगसि जनु कोक किरन रबि ॥
अरुन अधर तिय सधर। बिंब फल जानि कीर छबि ॥
यह चाहत चष चकित। उहजु तक्किय झरपि झर ॥
चंच चहुट्टिय लोभ। लियौ तब गहित अप्प कर ॥
हरषत अनंद मन महि हुलस। लै जु महल भीतर गई ॥
पंजर अनूप नग मनि जटित। सो तिहि मँह रष्षत भई ॥ छं० ॥ ९ ॥

पद्मावती कीर के प्रेम में खेल कूद भूल कर सदा उसी को पढ़ाया करती।

दूहा ॥ तिही महल रष्षत भइय। गइय षेल सब भुल्ल ॥
चित्त चहुट्टयौ कीर सों। रॉम पढ़ावत फुल्ल ॥ छं० ॥ १० ॥

पद्मावती के रूप को देख कर सुग्गे का मन में विचार करना कि इसको पृथ्वीराज पति मिले तो ठीक है।

कीर कुँवरि तन निरषि दिषि। नष सिष लौं यह रूप ॥
करता करी बनाय कै। यह पद्मिनी सरूप ॥ छं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ कुटिल केस सुदेस। पौह परचियत पिक्क सद ॥
कमल गंध बय संध। हंस गति चलत मंद मद ॥
सेत बस्त्र सोहै सरीर। नष स्वाति बुंद जस ॥

(१) रू-मृग।

भमर भंवहि भुल्लहि सुभाव। मकरंद बास रस ॥
नैन निरषि सुष पाय सुक। यह सुदिन मूरति रचिय ॥
उमा प्रसाद हर हेरियत। मिलहि राज प्रथिराज जिय ॥ छं० ॥ १२ ॥

पद्मावती का सुग्गे से पूछना कि तुम्हारा देश कौन है।

दूहा ॥ सुक समीप मन कुँवरि कौ। लग्यो बचन कै हेत ॥
अति विचित्र पंडित सुआ। कथत जु कथा अमेत ॥ छं० ॥ १३ ॥
गाथा ॥ पुच्छत बयन सुबाले। उच्चरिय कीर सच्च सच्चाये ॥
कवन नाम तुम देस। कवन थंद करै परवेस ॥ छं० ॥ १४ ॥

सुग्गे का उत्तर देना कि मैं दिल्ली का हूं वहां का राजा पृथ्वीराज मानो इंद्र का अवतार है।

उच्चरिय कीर सुनि बयनं। हिंदवान दिल्ली गढ अयनं ॥
तहाँ इंद अवतार चहुवांनं। तहं प्रथिराजह सूर सुभारं ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज के रूप, गुण और चरित्र का विस्तार से वर्णन करना।

छंद पद्धरी ॥ पदमावतिहि कुँवरी सँघत्त। दुज कथा कहत सुनि सुनि सुवत्त ॥
हिंदवांन थान उत्तम सुदेस। तहँ उदत द्रुग्ग दिल्ली सुदेस ॥ छं०॥१६॥
संभरि नरेस चहुआंन थांन। प्रथिराज तहां राजंत भांन ॥
बैसह बरीस षोडस नरिंद। आजानबाहु भुअ लोक यंद ॥ छं०॥१७॥
*संभरि नरेस सोमेस पूत। देवंत रूप अवतार धूत ॥
सामंत सूर सब्बैं अपार। भूजांन भीम जिम सार भार ॥ छं० ॥ १८ ॥
जिहि पकरि साह साहाब लीन। तिहुं बेर करिय पानीप हीन ॥
सिंगिनि सुसद्द गुन चढ़ि जँजीर। चुक्कै न सबद बेधंत तीर ॥छं०॥१९॥
बल बैन करन जिम दांन पान। सत सहस सील हरिचंद समान ॥
साहस सुक्रंम विक्रम जुवीर। दांनव सुमत्त अवतार धीर ॥ छं० ॥ २० ॥
दिस च्यार जांनि सब कला भूप। कंद्रप्प जांनि अवतार रूप ॥छं०॥२१॥
दूहा ॥ कामदेव अवतार हुअ। सुअ सोमेसर नंद ॥
सहस किरन झलहल कमल। रिति समीप बर विंद[1] ॥ छं० ॥ २२ ॥

---

* को० कृ-में यह तुक नहीं है। (१) को-चिंद।

पृथ्वीराज का रूप, गुण सुन कर पद्मावती का मोहित हो जाना।

सुनत श्रवन प्रथिराज जस। उमग बाल बिधि अंग ॥
तन मन चित चहुआँन पर। बस्यौ सु रत्तह रंग ॥ छं० ॥ २३ ॥

कुँवरी के स्यानी होने पर विवाह करने के लिये मा बाप का चिंतित होना।

बेस बिती ससिता सकल। आगम कियौ बसंत ॥
मात पिता चिंता भई। सोधि जुगति कौ कंत ॥ छं० ॥ २४ ॥

राजा का बर ढूँढने के लिये पुरोहित को देश देशांतर भेजना।

कवित्त ॥ सोधि जुगति कौ कंत। कियौ तब चित्त चहौं दिस ॥
लयौ विप्र गुर बोल। कही समझाय बात तस ॥
नर नरिंद नर पती। बड़े गढ़ द्रुग्ग असेसह ॥
सीलवंत कुल सुद्ध। देहु कन्या सुनरेसह ॥
तब चलत देहु दुज्जह लगन। सगुन बंद दिय अप्प तन ॥
आनंद उछाह समुद्दह सिषर। बजत नद्द नीसाँन घन ॥ छं० ॥ २५ ॥

पुरोहित का कमाऊँ के राजा कुमोदमनि के यहाँ पहुँचना।

दूहा ॥ सवालष्ष उत्तर सयल। कमऊँ गढ दूरंग ॥
राजत राज कुमोदमनि। हय गय द्रिब्ब अभंग ॥ छं० ॥ २६ ॥

पुरोहित ने कन्या के योग्य समझ कर कमोदमनि को लग्न चढ़ा दिया।

नारिकेल फल परठि दुज। चौक पूरि मनि मुत्ति ॥
दई जु कन्या बचन बर। अति अनँद करि जुत्ति ॥ छं० ॥ २७ ॥

कुमोदमनि का बड़ी धूम से व्याह के लिये बारात लाना, पद्मावती का दुखित हो कर सुग्गे को पृथ्वीराज के पास भेजना।

छंद भुजंगी ॥ विधिसित्तवरं लगन लिन्नौ नरिंदं। बजी द्वार द्वारं सु आनंद दुंदं ॥
गढंनं गढं पत्ति सब बोलि नुंत्ते। आइयं भूप सब कटु बंस जुत्ते ॥ छं० ॥ २८ ॥

चले दस सहस्सं असव्वार जानं। पूरियं पैदलं तेतीसु थानं ॥
मंत मद गलित सैं पंच दंती। मनों साँम पाहार बुग पंति पंती ॥ छं० ॥ २९ ॥
चलै अग्गि तेजी जु तत्ते तुषारं। चौवरं चौरासी जु साकत्ति भारं ॥
कंठ नग नूपं अनोपं सु लालं। रँगं पंच रंगं ढलकंत ढालं ॥ छं० ॥ ३० ॥
पंच सुर सावद्द वाजिच वाजं। सहस सहनाय स्त्रिग मोहि राजं ॥
समुद सिर सिषर उच्छाह छाई। रचित मंडपं तोरनं श्रीयगाई ॥ छं० ॥ ३१ ॥
पदमावती विलषि वर बाल बेली। कही कीर सों बात तब होइ केली ॥
झटं जाहु तुम्ह कीर दिल्ली सुदेसं। वरं चाहुवानं जु आनौ नरेसं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

सुग्गे से संदेसा कहलाना और चिट्ठी देना कि रुक्मि की तरह मेरा उद्धार कीजिए।

दूहा ॥ आंनो तुम्ह चहुवांन वर। अरु कहि इहै संदेस ॥
सांस सरीरहि जो रहै। प्रिय प्रथिराज नरेस ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ प्रिय प्रिथिराज नरेस। जोग लिषि कग्गर दिन्नौ ॥
लगु नव रग रचि सरब। दिन द्वादस ससि लिन्नौ ॥
सैं अक्कयारह तीस[1]। साष संवत परमानह ॥
जोतिषी कुल सुद्ध। बरनि वर रष्यहु प्रानह ॥
दिष्यंत दिट्ठ उच्चरिय[2] वर। इक पलक विलंब न करिय ॥
अलगार रयन दिन पंच महि। ज्यों रुकमनि कन्हर वरिय ॥ छं० ॥ ३४ ॥

शिव पूजन के समय हरन करने का संकेत लिखना।

दूहा ॥ ज्यों रुकमनि कन्हर वरी। ज्यों बरि संभरि कांत ॥
शिव मंडप पच्छिम दिसा। पूजि समय स प्रांत ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सुग्गे का चिट्ठी लेकर आठ पहर में दिल्ली पहुंचना।

लै पत्री सुक यों चल्यौ। उड्यौ गगनि गहि बाव ॥
जहं दिल्ली प्रथिराज नर। अट्ठ जाँम में जाव ॥ छं० ॥ ३६ ॥

(१) को—अनुतीस।
(२) को—वह घरिय।

सुग्गे का पत्र पृथ्वीराज को देना और पृथ्वीराज का चलने के लिये प्रस्तुत होना ।

दिय कग्गर न्रप राज कर । पुनि बंचिय प्रथिराज ॥
सुक देखत मन में हँसे । कियौ चल्लन कौ साज ॥ छं० ॥ ३७ ॥

चामंड राय को दिल्ली में रख कर और सरदारों को साथ लेकर उसी समय पृथ्वीराज का यात्रा करना ।

कवित्त ॥ उहै घरी उहि पल्लनि । उहै दिन बेर उहै सजि ॥
सकल सूर सामंत । लिये सब बोलि बंब बजि ॥
अरु कविचंद अनूप । रूप सरसै बर कह बहु ॥
और सेन सब पच्छ । सहस सेना लिय सध्यहु ॥
चामंड राय दिल्ली धरह । गढपति करि गढ़ भार दिय ॥
अनगार राज प्रथिराज तब । पूरब दिस तब गमन किय ॥ छं० ॥ ३८ ॥

जिस दिन समुद्र शिषर गढ में बारात पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी पहुँच गया और उसी दिन गज़नी में शाहाबुद्दीन को भी समाचार मिला ।

जा दिन सिषर बरात गय । ता दिन गय प्रथिराज ॥
ताही दिन पतिसाह कौं । भइ गज्जनै अवाज ॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह समाचार पाते ही अपने उमरावों के साथ शाहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज का रास्ता आगे बढ़ कर रोका और इधर इसकी सूचना चंद ने पृथ्वीराज को दी ।

कवित्त ॥ सुनि गज्जनै अवाज । चल्यौ साहाब दीन बर ॥
पुरासॉन सुलतान । कास काविलिय मीर धुर ॥
जंग जुरन जालिम जुझार । भुज सार भार भुअ ॥
धर धमंकि भजि सेस । गगन रवि लुप्पि रैन हुअ ॥
उलटि प्रवाह मनौं सिंधु सर । रुक्कि राह अड्डौ रहिय ॥
तिहि घरिय राज प्रथिराज सौं । चंद वचन इहि विधि कहिय ॥ छं० ॥ ४० ॥

बारात का निकलना, नगर की स्त्रियों का गोख आदि से बारात देखना, पद्मावती का पृथ्वीराज के लिये व्याकुल होना ।

निकट नगर जब जांनि । जाय बर विंद उभय भय ॥
समुद सिषर घन नद्द । इंद दुहुँ ओर घोर गय ॥
अगिवानिय अगिवान । कुँअर बनि बनि हय सज्जनि ॥
दिष्षन को चिय सवनि । चढ़ि गौष क्राजन रज्जनि ॥
विलषि अवास कुँवरि वदन । मनों राह छाया सुरन ॥
झंषति गवष्षि पल पल पलकि । दिषत पंथ दिल्ली सुपति ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सुग्गे का आकर पद्मावती को समाचार देना, उसका प्रसन्न होकर शृङ्गार करना, और सखियों के साथ शिव जी की पूजा को जाना वहां पृथ्वीराज का उसे उठाकर अपने पीछे घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर रवाना होना, नगर में यह समाचार पहुंचना, राजा की सेना का पीछा करना, पृथ्वीराज के साथ घोर युद्ध होना ।

छं० पद्धरी ॥ दिषत पंथ दिल्ली दिसांन । सुष भयौ सुक जब मिल्यौ आंन ॥
संदेस सुनत आनंद नैंन । उमगिय बाल मन मथ्थ सैन ॥ छं० ॥ ४२ ॥
तन चिकट चीर डार्यौ उतारि । मज्जन[1] मयंक नव सत सिंगार ॥
भूषन मँगाय नष सिष अनूप । सजि सेन मनों मनमथ्थ भूप ॥ छं० ॥ ४३ ॥
सोवन्न थार मोतिन भराय । झलन[2] हत्थ करंत दीपक जराय ॥
संगह सषिय लिय सहस बाल[3] । रुकमनिय जेम मज्जत मराल ॥ छं० ॥ ४४ ॥
पूजिय गवरि शंकर मनाय । दच्छिनै अंग कर लगिय पाय ॥
फिर देषि देषि प्रथिराज राज । हस मुद्ध मुद्ध चर पट्ट लाज ॥ छं० ॥ ४५ ॥
कर पकरि पीठ हय परि चढ़ाय । ले चल्यौ नृपति दिल्ली सुराय ॥
भइ षबरि नगर बाहिर सुनाय । पदमावतीय हरि लीय जाय ॥ छं० ॥ ४६ ॥

(१) ए० कृ–मंडान । (२) को–कल । (३) को–यब रस चाल । (४) कृ–दुरि ।

बाजी सुबंब हय गय पलांन । हीरे सुसज्जि दिस्सह दिसांन ॥
तुम्ह लेहु लेहु मुष जंपि जोध । सन्नाह सूर सब पहरि क्रोध ॥ छं० ॥ ४७ ॥
आगें जु राज प्रिथिराज भूप । पच्छै सु भयौ सब सेन रूप ॥
पहुंचे सुजाय तत्ते तुरंग । भुअ भिरन भूप जुरि जोध जंग ॥ छं० ॥ ४८ ॥
उलटी जु राज प्रथिराज वाग । थकि सूर गगन धर धसत नाग ॥
सामंत सूर सब काल रूप । गहि लोह क्रोह बाहै सु भूप ॥ छं० ॥ ४९ ॥
कम्मांन बांन छुट्टहि अपार । लागंत लोह इम सारि धार ॥
घमसान घान सब बीर षेत । घन श्रोन बहत अरु रकत रेत ॥ छं० ॥ ५० ॥
मारे बरात के जोध जोह । परि रुंड मुंड अरि षेत सोह ॥ छं० ॥ ५१ ॥

पृथ्वीराज का जय करके दिल्ली की ओर बढ़ना ।

दूहा ॥ परे रुहल रिन षेत अरि । करि दिल्लिय मुष रुष्ष ॥
जीति चल्यौ प्रथिराज रिन । सकल सूर भय सुष्ष ॥ छं० ५२ ॥

पद्मावती के साथ आगे बढ़ने पर शहाबुद्दीन का समाचार मिलना ।

पदमावति इम लै चल्यौ । हरषि राज प्रिथिराज ॥
एतें पर पतिसाह की । भइ जु आनि अवाज ॥ छं० ॥ ५३ ॥

अवसर जान कर शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज को पकड़ने के विचार से सेना सजना ।

कवित्त ॥ भई जु आँनि अवाज । आय सहाबदीन सुर ॥
आज गहौं प्रथिराज । बोल बुल्लंत गजत धुर ॥
क्रोध जोध जोधा अनंत । करिय पंती अनि गज्जिय ॥
बांन नालि हथनालि । तुपक तीरह स्रब सज्जिय ॥
पवै पहार मनों सार के । भिरि भुजांन गजनेस बल ॥
आये हकारि हंकार करि । षुरासान सुलतान दल ॥ छं० ॥ ५४ ॥

शहाबुद्दीन की सेना का वर्णन, पृथ्वीराज को चारों ओर से घेर लेना।

छं० पद्धरी॥ षुरासान मुलतान षंधार मीरं। बलक्क सो बल्लं तेग अचूक मीरं॥
रुहंगी फिरंगी हलब्बी समानी। ठटी ठट्ट बल्लोच ढालं निसानी॥ छं०॥ ५५॥
मँजारी चषी मुष्ष जंबक्क लारी। हजारी हजारी हुकैं जोध भारी॥
तिनं पष्षरं पीठ हय जीन सालं। फिरंगी कती पास सुकलात लालं॥छं०॥५६॥
नचैं बाघ बाघं महूरी रिछोरी। घनं सारसंमूह अरु चौंर भोरी॥
एराकी अरब्बी पटी तेज ताजी। तुरक्की महाबांन कम्मांन बाजी॥ छं०॥ ५७॥
ऐसे असिव असवार अगेल गोलं। भिरे जून जेते सुतत्ते अमोलं॥
तिनं मद्धि सुलतान साहाब आपं। इसे रूप सों फौज बरनाय जापं॥ छं०॥५८॥
तिनं घेरियं राज प्रथिराज राजं। चिहौ ओर घन घोर नीसांन बाजं॥ छं०॥५९॥

पृथ्वीराज का तेग सँभाल शत्रुओं पर टूटना।

कवित्त॥ बज्जिय घोर निसाँन। राँन चौहाँन चिहौ दिस॥
सकल सूर सामंत। समरि बल जंच मंच तस॥
उट्ठि राज प्रथिराज। बाग मनों लग वीर नट॥
कढ़त तेग मनों बेग। लगत मनों बीज भद्द घट॥
थकि रहे सूर कौतिग गिगन। रगन मगन भइ श्रोन धर॥
हर हरषि वीर जग्गे हुलस। हुरव रंगि नव रत्त वर॥ छं०॥ ६०॥

दिन रात घोर युद्ध हुआ, पर किसी की हार जीत न हुई।

दूहा॥ हुरव रंग नव रंत वर। भयौ जुद्ध अति चित्त॥
निस वासुर समुझि न परत। न को हार नह जित्त॥ छं०॥ ६१॥

युद्ध का वर्णन।

कवित्त॥ न को हार नह जित्त। रहेइ न रहहि सूरवर॥
धर उप्पर भर परत। करत अति जुद्ध महाभर॥
कहैं कमध कहौं मध्य। कहौ कर चरन अंत हरि[1]॥
कहौं कंध वहि तेग। कहौं सिर जुट्टि फुट्टि उर॥

(१) छ०--हुरि।

कहीं दंत मंत हय षुर षुपरि। कुंभ भसुंडह रुंड सब ॥
हिंदवान रान भयभीन मुष। गहिय तेग चहुवांन जब ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पृथ्वीराज की वीरता का वर्णन, शहाबुद्दीन को कमान डाल पृथ्वीराज का पकड़ लेना और अपने साथ लेकर चलना।

छंद भुजंगी॥ गही तेग चहुवांन हिंदवांन रानं। गजं जूथ परि कोप केहरि समानं॥
करे रुंड मुंडं करी कुंभ फारे। वरं सूर सामंत हुकि गज भारे॥छं०॥६३॥
करी चीह चिक्कार करि कलप भग्गे। मदं तंजियं लाज[1] उमंग मग्गे॥
दौरि गज अंध चहुआन केरो। घेरियं[2] गिरद्दं चिहौ चक्क फेरो॥छं०॥६४॥
गिरद्दं उडी भांन अंधार रैनं। गई सूधि सुझ्झै नहीं मझ्झि नैनं॥
सिरं[3] नाय कम्मांन प्रथिराज राजं। पकरियै साहि जिम कुलिंगवाजं॥
छं० ॥ ६५ ॥

लै चल्यौ सितावी करी फारि फौजं[4]। परें मीर सै पंच तहँ षेत चौजं॥
रजंपुत्त पंचास झुझ्झे अमीरं। बजै जीत के नद्द नीसांन घोरं॥ छं०॥६६॥

पृथ्वीराज का जीत कर गंगा पार कर दिल्ली आना।

दूहा॥ जीति भई प्रथिराज की। पकरि साह लै संग॥
दिल्ली दिसि मारगि लगौ। उतरि घाट गिर गंग॥ छं० ॥ ६७ ॥

पद्मावती को वर कर गोरी शाह को पकड़ कर दिल्ली के निकट चत्रभुजा के स्थान में पृथ्वीराज का पहुँचना॥

वर गोरी पद्मावती। गहि गोरी सुरतांन॥
निकट नगर दिल्ली गये। चभुजा चहुआन॥ छं० ॥ ६८ ॥

लग्न साध कर धूम धाम से विवाह करना।

कवित्त॥ बोलि विप्र सोधे लगन्न। सुभ घरी परट्ठिय॥
हर बांसह मंडप बनाय। करि भांवरि गंठिय॥
ब्रह्म वेद उच्चरहिं। होम चौरी जु प्रति वर॥
पद्मावति दुलहिन अनूप। दुल्लह प्रथिराज राज नर॥

(१) कृ०--लाज। (२) कृ०--करीयं।
(३) को०--तब। (४) को०--में "ले चल्यौ निकसि सब फारि फौजं" लिखा है।

मंडयौ[१] साह साहाबदी । अट्ट सहस दै वर सुवर ॥
दै दाँन माँन षट भेष कौ । चढ़े राज द्रुग्गा हुजर ॥ छं० ॥ ६९

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को छोड़ देना और दुलहिन के अपने महल में आना ।

कवित्त ॥ चढ़िय राज प्रथिराज । छांड़ि साहाबदीन सुर ॥
त्रिपत सूर सामंत । बजत नीसाँन गजत धुर ॥
चंद्र वदनि मृग नयनि । कल ले सिर सनमुष्ष जुष ॥
कनक थार अति बनाय । मोतिन बँधाय सुष ॥
मंडल मयंक वर नार सब । आनँद कंठह गाइयव ॥
ढोरंत चवर किक्कर करहि । मुकट सीस तिक जु दियव ॥ छं० ।

महल में पहुँचने पर आनंद मनाया जाना ।

दूहा ॥ चढ़े राज द्रुग्गह त्रिपति । सुमत राज प्रथिराज ॥
अति अनंद आनंद सैं । हिंदवांन सिर ताज ॥ छं० ॥ ७१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथीराज रासके श्री समुद सिषर गढ़ पद्मावती पाँणि ग्रहणं जुद्ध पश्चात पातिसाह प्रिथीराज जुद्धं श्री प्रिथीराज जुद्ध विजय पातिसाह ग्रहनं मोषनं नाम विंशति प्रस्ताव संपूर्णम् ॥

अथ प्रिया व्याह वर्णनं लिष्यते ॥

(एक्कीसवां समय ।)

चित्तौर के रावल समर के साथ सोमेश्वर की बेटी के बिबाह की सूचना ।

कवित्त ॥ चित्र कोट रावर नरिंद । सा सिंघ तुल्य बल ॥
सोमेसर संभरिय । राव मानिक सुभग्ग कुल ॥
मुष मंत्री कैमास । पांन अवलंबन मंडिय ॥
मास जेठ तेरसि सुमधि । ऐन उत्तर दिसि चिंडिय ॥
सुक्रवार सुकल तेरसि घरह । धर लिष्षो तिन बर घरह ॥
सुकलंक लगन मेवार धर । समर सिंघ रावर बरह ॥ छं० ॥ १ ॥

सोमेश्वर का अपनी कन्या समर सिंह के देने का विचार करके पत्र भेजना ।

दूहा ॥ उत्तर दिसि आहुट्ठ कैां । दे कग्गद लिषि बत्त ॥
सोमेसर कीनैा मतैा । भगिनि दिये प्रथु पुत्त ॥ छं० ॥ २ ॥

समरसिंह के गुणों का वर्णन ।

चैापाई ॥ प्रवत्तवै[1] पहुमी बल राजं । अरु जोगिंद सबन सिरताजं ॥
समर सिंघ रावर चिंत्तिज्जै । पुचि प्रिथा चिचंग सुदिज्जै ॥ छं० ॥ ३

कवित्त ॥ बर प्रब्बत बैराज । नरब उत्तिम चित्रंगी ॥
बर आहुट्ठ नरेस । समर साहस अनभंगी ॥
बर मालव गुज्जर नरिंद । सार बंधैा बर अड्डौ ॥
उंच सगापन किये । पुत्त आवै घन अड्डौ ॥
बर बीर धीर जाजुलति तप[2] । प्रिवप्रसाद अविचल घरह ॥
प्रिथकज्ज अज्ज मन संभरैा । सुनि संमर कीजै बरह ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ सोमेसर नंदन मतैा । पुच्छि कन्ह चहुआन ॥
आदि अंम घर पंथ ए । हिंदवान कुल भान ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ छिंदवान कुल भान। भ्रंम रष्पन सुबेद बर ॥
　　लै मुंजांनी ढाल। जुभ्भ्र संग्राम सार गुर ॥
　　सो चिचंग नरिंद। प्रिथा दीनी प्रथिराजं ॥
　　हेम हयं गय अथ्थि। देन दिल्लीय सब साजं ॥
　　गह अत्त बत्त गहिलौत गुर। सिंगी नाद निसांन बर ॥
　　कालंक राइ कुप्पन बिरद। मद्दन रंभ चाहंत बर ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूहा ॥ सो भगिनी दीनी प्रिथा। सकल रूप गुन लच्छि ॥
　　चिचंगी रावर समर। अंगन अहन सु अच्छि ॥ छं० ॥ ७ ॥

पत्र लेकर गुरूराम पुरोहित और कन्ह चौहान का जाना।

कुंडलिया ॥ बाल वेस भगिनी प्रिथा। बरु समर केलि चिचंग ॥
　　राज गुरू गुरराम सम। ताजी तेरह तुंग ॥
　　ताजी तेरह तुंग। मुत्ति नग माल सुरंगी ॥
　　बर दाहिम कैमास। बीर बंधव मुकि रंगी ॥
　　न्टप कग्गद गहि हथ्थ। कन्ह अग्गा बर एसं ॥
　　नर उत्तिम चिचंग। दई बर बाल सुवेसं ॥ छं० ॥ ८ ॥

पृथा कुँअरि के रूप का वर्णन।

दूहा ॥ बर बरनत भगिनी प्रिथा। कहि न परै कवि चंद ॥
　　मानौं रति कौ रूप लै। धरि आई मुष इंद ॥ छं० ॥ ९ ॥

चौपाई ॥ सुफल दियौ फल लद्धौ नांहि। इंद्र सुबल बलि नवला वांहि ॥
　　सीस मूर मुष अगनि कुबेर। इन समांगह सुंदर हेर ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथा कुँअरि और समरसिंह के उपयुक्त दम्पति होने का वर्णन।

कवित्त ॥ स्वाहा ज्यों ग्रह अगनि। सीय ग्रह राम काम रति ॥
　　नल दमयंत संयोग। द्रुपद कन्या अरजुनपति ॥
　　इंद्र सची वा जोग। जोग गवरिय अरु शंकर ॥
　　भांनर नालिनि कन्ह। सोम रोहिनी नारि घर ॥

फल अप्प हथ्थ सो दीन न्रप । लच्छि सहज लच्छी सुतन ॥
दुज राज राम ग्रह लगन लिषि । सद्धि महूरत चिंति मन ॥ छं०
इंद्र जोग पंचमी । सुबर पंचमि अधिकारी ॥
भोम बीय न्रप थान । सूर ग्रह केत उचारी ॥
इम सुमंत ग्रह लगन । व्याह दंपति दंपति गन ॥
और सबै सुभ जोग । होइ सुष जात थान घन ॥
इक मास लगन बर थप्पि कै । दिल्ली वै दिल्ली गयौ ॥
सुरतांन दंड लीनौ सुकर । सुकर प्रेम कारज ठयौ ॥ छं० ॥ १२ ॥

लग्न का शोधा जाना ।

दूहा ॥ थप्पि सु लगनह राज ग्रह । सोधि पुरान उरान ॥
बाजपेय मुष उद्धरे । प्रिथा व्याह उनमान ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवि चंद कहता है कि मैं पूरा वर्णन तो कर नहीं सकता पर जहां तक बनेगा उठा न रक्खूंगा ।

बहुत मोहि कहत न बनै । बरनन कविन कठोर ॥
गुन मैं थोरिन अप्पि हौं । कछु बरनिहौं सुथोर ॥ छं० ॥ १४ ॥

स्त्रियों के शरीर की उपमाओं का वर्णन ।

कवित्त विधानजाति ॥ अहि ससि सन उतंग । पिक्क उर केहरि करिवर ॥
अलक बयन चष चंच । जीह कटि जघन बराबर ॥
किस सकल चल अचल । अदिठ अलसंत चलंतह ॥
चंदन नभ वन भवन । अंब गिरि व्यंभ बसंतह ॥
सुमनि सरद भय भीत निसि । रति पति लंघन मंदगति
अबला सुअंग ओपम इतिय । कही चंद इन परि विगति
छं० ॥ १५

दूहा ॥ को कवि ओपम बाल की । कहिवे कों समरथ्थ ॥
सब संयोग बनाइ कै । काम चह्यौ मनुरथ्थ ॥ छं० ॥ १६ ॥

पृथा कुंअरि के रूप तथा नव यौवनावस्था का वर्णन ।

छंद मोतीदाम ॥ बरनों ससि जुब्बन की वय संधि । तिनं उपमा बरनी बल बंधि
मिली सिसरं रिति राजह जोर । चंप्यौ न तनं विपनं नह कोर ॥ छं० ॥ १७

कवै चलि चंचलता चलि जाइ। धरै कबहूं धन धीरज पाइ ॥
तिनं उपमा बरनी कबिराई। पढ़ावत कांम नई गत ताई ॥ छं० ॥ १८ ॥
करं सिर ठंकि सँवारत बार। सिषावत कांम मनों चट सार ॥
दुती उपमा बरनै कवि चंद। चलै घट रूप दिषावत दंद ॥ छं० ॥ १९ ॥
चती उपमा बरनी कबि चाह। लरैं दुत्र कोर मनों ससि राह ॥
उठे थन थोर विराजत वाम। धरैं मनु चाटक सालिग राम ॥ छं० ॥ २० ॥
किधों फल तिंदुत्र कंचन जान। धरे मनु अंग सुधा रस पान ॥
तुछं रूम राजिय राजत बाम। पपीलकि सोवन धंभ विश्राम ॥ छं० ॥ २१ ॥
जु बंकिय भोंह न तुच्छ गहर। उठे मनु मच्छ धनंक अँकूर ॥
सुबालय उड्डत मोर सुदीस। मिले जनु मंगल दे ससि रीस ॥ छं० ॥ २२ ॥
कहूं उठि लागित मोर सुसीर। उठे मनु अंकुर कांम सरीर ॥
तुछं द्रग सोभत कज्जल ताम। चढ़े जनु बाहन बल्लिय काम ॥ छं० ॥ २३ ॥
दुहूं कुच बीच सरोमय नह। लगी मृग मद्दय कीन सुघद्द ॥
तिनं उपमा बरनी कवि रंग। पिये जनु कालिय के सुतभंग ॥ छं० ॥ २४ ॥
कबै मिलि श्रोंन द्रिगस्सुतु लेहि। मनों सिसु जुब्बन तारिय देहि ॥
स विभ्रम चाइ उभारति चक्र। इमं द्रिग दृष्ष कटाच्छ सुवक्र ॥ छं० ॥ २५ ॥
इते गुन लच्छिन तच्छिन बाल। करी मनों काम सिरी रति माल ॥
भई जब बाल चढंतय बेस। दई तब पिथ्थ नरिंद गिरेस ॥ छं० ॥ २६ ॥

रावल समर सिंह का गुण वर्णन।

दूहा ॥ नर नरिंद जोगिंद पति। मुंजी ढाल विरद्द ॥
उडगन निकट नरिंद विय। सेवत रद्दन गिरद्द ॥ छं० ॥ २७ ॥*

कवित्त ॥ सिंगी रा अवधूत। वीर चित्रंग नरिंदं ॥
कमल पानि सारथ्य। अरुन तेज कहि चंदं ॥
बर कप्पन कालकं। विरद साहन सुरतानं ॥
बर प्रब्बत वैराज। भोग जोगह बड़ दानं ॥
सो मद्दन रंभ आरंभवै। एक रंग रत्तौ रहै ॥
कलिकाल धाम छिप्पै नहीं। झलहलंत दुज्जन दहै ॥ छं० ॥ २८ ॥

* यह दोहा मो में नहीं है।

श्रीफल देकर पुरोहित को तिलक चढ़ाने को भेजना और इस संबन्ध से अपने को बड़भागी मानना ।

दूहा ॥ फल श्रीफल दुज हथ्थ कै । जाइ सँपतौ देव ॥
आज हनंदे पाप हम । मिलि चित्रंगी सेव ॥ छं० ॥ २९ ॥
भोजन भाव अनंत किय । दिसि उत्तर ग्रह रष्षि ॥
पाप जन्म चहुआन कौ । गय दुज राज सु इष्षि ॥ छं० ॥ ३० ॥

पुरोहित का चित्तौर में पहुंचकर बसंत पंचमी को तिलक देना ।

कवित्त ॥ आज हनंदे पाप । समर संमुह ग्रह भग्गे ॥
वय अक्रंम मन नट्टए[1] । क्रंम सुक्रत[2] फल जग्गे ॥
पंच दिवस रहि थांन । जंपि दुज राज सु आइय ॥
बर बसंत बैसाष । लगन पंचमि थिर पाइय ॥
चतुरंग लच्छि चित्रंग दिय । कुयन राम बिप्रह सुतह ॥
जाने कि अग्गि समसान की । देषि सुतन लग्गे सु जंह ॥ छं० ॥ ३१ ॥

पृथ्वीराज के विवाह की तयारी करने का वर्णन ।

बाजपेय राज सू । होइ कलजुग्ग ध्रंम्म गुर ॥
और जगनि ना होइ । व्याह मंड्यो सुध्रंम धुर ॥
रथ चौसट्ठि प्रमान । रथ बर जोग प्रमानं ॥
बार बार पर बाज । बीर सज्जे उनमानं ॥
सा इक्क इक्क कर ना किरनि । सत्त सत्त सो बेद[3] विधि ॥
चित्रंग राव रावर सुभ्रम । करन मतौ प्रिथिराज सिधि ॥ छं० ॥ ३२ ॥
हेम हयं गय जुगति । सचे मिष्टान पान बर ॥
बर कुबेर लभ्भैन । पार प्रथिराज राज नर ॥
चाव दिसि बर गांन । दांन चाव दिसि अप्पै ॥
ब्रह्म बेद क्रम छेद । सूर नहि सोरथ थप्पै ॥
जे जोग भोग जोगिंद नव । सो उग्गत नहि भुल्लई ॥
प्रथिराज राज राजन बली । बलिन जग्ग सम तुल्लई ॥ छं० ॥ ३३ ॥

(१) क्र. मो.—अक्रंम नटुए ।　(२) को. क्र. ए.—सुक्रत ।　(३) मो.—देव ।

दूहा ॥ धरम सुथिर राजन बली। देव दैव दुति चाव ॥
चाव हिमि से देषिये। लच्छि मोल लषि भाव ॥ छं० ॥ ३४ ॥

छंद मोतीदाम॥ जयं जय छंद जयं गुन रूप। कटावन हेम सु बारह भूप ॥
दिसं दिसि पूरि न्टपं न्टप थांन। मनों विधि जग्ग कि देवन थांन ॥ छं० ॥
रसं रस तोरन बंधत बार। मनो नट वत्त कला गुन चार ॥
सुभै अति सोभ सुभद्रह हेम। मनों बर मेर बिराजत नेम ॥ छं० ॥
सबै बर बीर फिरै जिहि पास। मनो बर भांन कलान प्रकास ॥
कढ़ै गर सुंदरि नान प्रकार। मनों ससि भांन उगे इक बार ॥ छं० ॥
बिराजत मुत्तिन बंदरवार। मनों भुअ आंन मयूष प्रचार ॥
ग्रहं ग्रह उंच सु पंति बिसाल। मनों कयलासय सोभति हाल ॥ छं० ॥
कथा कबिचंद सु उप्पम थोर। बिराजत पंतिय कंतिय चोर ॥
धरैं धर अंम्रत पंच प्रकार। जचें तिन देत संतोष अचार ॥ छं० ॥
टगं टग लग्गिय दिष्ट प्रकार। दिषे चहुआंन कलाधर सार ॥
भली विधि रूप प्रकार प्रकार। सुभै जनु इंद्र सु जानिह द्वार ॥ छं० ॥

कवित्त ॥ नहिन हेम पर भास। लच्छि कुबेर लच्छि गुन ॥
थांन थांन नवनिद्ध। देव जंपे सुदेष मन ॥
अनिम महिम गरिमास। लभि देवान मद्धिधिय ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि। राज द्वारह बर बंधिय ॥
जीतिय जिनीक सुरतांन निधि। प्रिथा व्याह न्निंमत करै ॥
धंनि धंनि धंन नव षंड हुअ। लंक पंक गड्डिय डरै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज ने ऐसी तयारी की मानो इन्द्रपुरी है।

साटक ॥ हिंम हेमय द्वार दारुन गनं[१]। दीसंत लच्छी बरं ॥
एंच हून सु च्यारि रत्न गुन ए। सिद्धांत सारं गुरं ॥
संभया वाहन नाह नेव तनयं। धन पीर संधं गुनं ॥
जानिज्जै सुर लोक इंद्र उदितं। धामं सचीवं बरं ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) ह. मो.–नग।

पृथ्वीराज का चारो दिशा में निमन्त्रण भेजना, घर घर में तयारी होना ।

छंद चन्द्रफाल ॥ धनि ध्रंम धनि प्रथिराज । गुन दच्छि लच्छि विराज ॥
मधि जमुन में यों धांम । सुर नाक सुर विश्रांम ॥ छं० ॥ ४३ ॥
/धज इंच फरहर रूप । सुरतान पठ्ठय भूप ॥
चैलोक न्योतें काज । मनो देव व्याह विराज ॥ छं० ॥ ४४ ॥
विधि वरन वरन सु धाम । कुब्बेर वरषिय काम ॥
बर ध्रंम जग्गि प्रकार । सम दांन विनयह सार ॥ छं० ॥ ४५ ॥
फिरि राज राजन चाल । लछि देव एवति पाल ॥
षट पाल कै प्रथु पाल । ....॥ छं० ॥ ४६ ॥
मति ध्रंम भूपति साज । आनंद उछव विराज ॥
जगि जोग जुग्गनि नेर । उच्छाह घर घर कैर ॥ छं० ॥ ४७ ॥
विधि भांन सुरपति भांन । चहुआंन तिन सम मांन ॥
नव नेह ग्रह ग्रह दान । कवि करै कौन बषान ॥ छं० ॥ ४८ ॥
बर जीह फनपति होइ । चहुआन व्याहक जोइ ॥ छं० ॥ ४९ ॥

हाथी घोड़े सेना आदि की तयारी का वर्णन ।

छंद वृद्धनाराच ॥ परठ्ठि सेन सज्जि बीर बज्जए निसानयं ॥
नाराच छंद चंद जंपि पिंगलं प्रमानयं ।
गजं गजं हिलं मलं चला चलं गरिठ्ठयं ॥
कसंमसं उकस्सि सेस कच्छ पिठ्ठ उठ्ठयं ॥ छं० ॥ ५० ॥
पछौ सुभेम भार सो वराह कंध उन्नयं ॥
चले सयन्न बंधि भूप चंद जंपि बोलयं ॥
मनों दसंति काज सेन मेलि इंद्र तोलयं ॥
दुरंत चोंर गज्ज सीसना सिंदूर राजयं ॥ छं० ॥ ५१ ॥
मनों चिजाम कंठ सूर चंद बंधि लाजयं ॥
....
फिरंत डोरि कुंडली सुबाज राज दिष्षयौं ॥

कै हथ्य भोर चंद कब्बि ता समंत पिष्षहीं ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सु नष्षई सुरंग धाप बाज ताज उट्ठहीं ॥
मनों कि डोरि चक्करी सुहथ्य हथ्थि नष्षहीं ॥
सुबीयता सुरंग चंद उप्पमा सु रहई ॥
मनोकि तार नभ्भतेय काल तेज तुट्टई ॥ छं० ॥ ५३ ॥
लजै भजै मनं गतीय पुब्बता[1] कबी कहै ॥
सु अंषिका कुरंग गत्ति भांन देपिता रहै ॥
रजं रजं जराइ राइ छित्तयं किरावलं ॥
उपम्म चंद कब्बिता कही तहां उतावलं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तयारी का वर्णन ।

कवित्त ॥ पंच राइ पंचाल । लिम्म वैराट बड्ड बर ॥
जैत सींह भोंहा भुआल । का कन्ह नाह नर ॥
रा पज्जून नरिंद[2] । पांन ठंठरिय सिंघनग ॥
दह रावत आजांन । बाह बंधव सुवन्न अग ॥
बंधन सुमीर मेवार पति । अति उछाह आनंद धरि ॥
संजुरिय[3] जांन कुचन सहस । सहस अड्ड बज्जन सुघरि ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दूहा ॥ जस वेली वर हथ्थ लै । फल पुच्छै चित रंग ॥
बर सोमेसर हथ्थ दै । ग्रह सज्जै रस जंग ॥ छं० ॥ ५६ ॥

रावल समर सिंह का ब्याह के लिये पहुंचना, रावल की शोभा वर्णन ।

आयो बर रावर समर । तोरन संभरि वार ॥
बाल वेस बनिता बनी । मनों संग रति मार ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सूर रूप रावर समर । वेस बाल सत पच ॥
प्रीत चंद कमनिय कुमुद । परस सरस सित[4] रत्त ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) क्रु. मो.–पुब्बका ।
(२) क्रु. ए.–रा पजून पूरंन ।
(३) मो.–संमिलिय ।
(४) मो.–हितलब ।

नगर में स्त्रियों की शोभा देखने की शोभा का वर्णन।

छंद मोतीदाम॥ चढ़ी घर जाहिन बाल[1] बिसाल। रही लघुबेस लगी चिचसाल॥
तनं सुध बालय अंचल लेहिं। चषं चपला कुलटा गति केहिं॥छं०॥५९
हलावत चंचल अंचल नारि। मनों विधि हंहि कटाच्छन गारि॥
बंधे सुर नारि कयं सुर रंग। उरिं निरखें घन विद्युत अंग[2]॥छं०॥६०॥
भमं भम होइ सुहेम किरन्न। ससी पर होइ मयूष अहन्न[3]॥
मची बर बीरन पीकह[4] कीच। बरष्य कि मंगल सूर सु बीच॥छं०॥६१॥
भमं भम होत करं नष पान। परी छवि होइ रवी ससि जानि॥
तिनं मुष यों नष में झलकाइ। न दिष्षहि उंच रहे ललचाय॥छं०॥६२॥
दिपै नग चीर चिराकन वांम। रचै जनु दीपक कामय स्यांम॥
सु उज्जल भेंन चिराकनि जोति। फिरै तहां बाल जराइन कोति॥छं०॥६३॥
उदै जनु लिच्छमी कंति[5] विगास। किधौं तप तेज किराज विलास॥
कहै कवि चंद उधम्म प्रकास। बन्यौ जनु प्रप्पन[6] तेज विलास॥छं०॥६४॥

समरसिंह के पहुंचने पर मंगलाचार होना।

कवित्त॥ बर कलस्स बर बंदि। बंदि तरुनिय सर लिन्नौ॥
ग्रह सुरंग कवि चंद। तहां उप्पम बर दिन्नौ॥
घन चंदन बर प्रठु। सिद्धिय सोभा सुफटिक मनि॥
घन प्रवाल थंभिय बिलास[7]। सिर सोभ सुरंग फुनि॥
उत्तरिय बीर रावर समर। बर जोगिंद नरिंद गति॥
स्रृंगार बाल भूषन कहौं। जु कछु चंद बरदाइ मति॥ छं०॥ ६५॥
दूहा॥ स्यांम बेस तन बालमय। घटि न कछूव किसोर॥
दोष बाल बरनत कविय। भयौ भेंर घर चौर॥ छं०॥ ६६॥
बर सुबस्त्र तजि बाल नें। सैसव[8] मिस संडारि॥
अब भूषन जब ग्रह करहि। जोवन चढत सवारि॥ छं०॥६७॥

(१) मो॰—बमि। (२) ए॰ कृ॰ को॰—दुरि देखत मेघ तड़ित्त सु अंग।
(३) मो॰—अरंग। (४) मो॰—बीरह पीकन।
(५) ए॰—बिवास। (६) मो॰—दृप्पेन।
(७) मो॰—बिसाल। (८) मो॰—शेशव।

शृंगार का वर्णन ।

छंद चोटक ॥ तजि मज्जन सज्जि सिंगार अली । प्रगटी जनु कंद्रप जोति कली ॥
जु सँवारिय केस सुरंग सुगंध । तिनं बर गुंथि प्रसून सु बंधि ॥ ६८ ॥
तिनं उपमा सु कहे कवि सुद्ध । लग्यौ ससि राह अधंमय[1] जुद्ध ॥
चलें अलकें अलि चंचल घट्ट । लगी जनु कालिय नागिनि पट्ट ॥ छं० ॥ ६९ ॥
जस्यौ ससि फूल धर्यौ मनिबद्ध । उग्यौ गुर देव किधौं निसि अद्ध ॥
बियं उपमा कवरी सु अलप्प । चढे मनु[2] मेर ससी लय अप्प ॥ छं० ॥ ७० ॥
रची मंति सुमुत्तिय बंधि संवारि । तिनं उपमा बरनी सु बिचारि ॥
परी रवि छोड मयूषन तार । भए जनु सिद्ध उधातम धार ॥ छं० ॥ ७१ ॥
बनी कवरी बर पुत्तरि बांम । अध्यातम पाठि पढावत कांम ।
धर्यौ बर भाल तिलक्क मिलाइ । मनों ससि रोहिनि आनि मिलाइ ॥
छं० ॥ ७२ ॥
मनों ससि बीयक तीय समान । तिनं सिरबाइ लिलाट सुजांन[3] ॥
दुती दुतियं बरनो कवि चंद । दुग्यौ छबि देखि सरद्द कौ इंद ॥ छं० ॥ ७३ ॥
बनी बर भोंह सु बंकिय एह । मनों धनु कांम धरं बिन जेह ॥
कहौं बर नासिक ओपम एह । सु काम भवन्न कि दीपक तेह ॥ छं० ॥ ७४ ॥
द्रगं उपमा दुति यौं दमकै । सु मनों सुत षंजन के चमकै ॥
जु दिपै बर भाइ दुलोचन कोर । मुचावत कांम कमान के जोर ॥ छं० ॥ ७५ ॥
षाटंकन की उपमा इतनी । जु कही कवि चंद सुरंग घनी ॥
जु सुन्यौ रवि राह ग्रह्यौ ससि है । सु फिरै दुहु बीच सहायक ह्वै ॥ छं० ७६ ॥
उपमा सु कपोलन की चिलकै । जु मनों ससि ह्वै रवि में झलकै ॥
जुटि गंठिग मुत्तिय पंतिन की । तिनकी उपमा कवि नै मनकी ॥ छं० ॥ ७७ ॥
दुअ पास कपोलन तेज कुर्यौ । मनों तारक ह्वै ससि उग्गि उर्यौ ॥
जु चिबुक्कन की उपमा चिलज्यौं । मनों अंग सुता सितपच्छ तज्यौं ॥
छं० ॥ ७८ ॥

(१) मो०—अधर्म्मय ।
(२) मो०—मनो ।
(३) ए० कृ०—सुजानि ।

कल ग्रीव चिवल्लिय रेष वनं । सु मछौ मनु कन्हर पंच जनं ॥
विय बाल सुमालन बाल सजै । सुध स्री जनु भारति नभ्भ तजै ॥छं०॥७९॥
गुंथी पट स्यांम सु मत्तिय माल । भयौ जनु तीरथ राज विसाल[१] ॥
उठी पट कुट्टिय कंचुकि दांम । कि जीयन कों चिपुरं चलि कांम ॥
छं० ॥ ८० ॥
कछू छबि छत्तिय की बरनं । सु रछ्यौ मनों कांम तिनं सरनं ॥
बर लंकिय लंकय सिंघ किनौ । बर मुंष्टिय मांझि समाइ तिनौ ॥ छं०॥ ८१॥
* पसरे नन द्रष्टि न ठौर रुकै । * मृगनिसह देषि मनों सु चुकै ॥
कटि मेषल उप्पम एह धरं । मनों नौग्रह सिंघ सहाइ बरं ॥ छं० ॥ ८२ ॥
सुभंत समुप्पिन अंगुरि नच । मिले गुरु मंगल हत्तनि पच ॥
बनी कर पौंचिय पट्टय स्यांम । तिनं उपमा बरनी बर ताम[२] ॥ छं०॥ ८३ ॥
लटकै बर अंग सु फूंदन लाष । भुलैं मनुं नागिनि चंदन साष ॥
बरनों मनि बढ्ढि बढंत नितंब । सुभै जनु उज्जल है रवि विंब ॥ छं० ॥ ८४ ॥
सकोमल जंघ सु रंग सुढार । भमी मन चित्त पराद्दिय मार ॥
सजे बहु बार सिंगार सुरत्ति । चली नव हंस उपप्पन गत्ति ॥ छं० ॥ ८५ ॥
सु पड्डिय उप्पमता कवि एह । रची जनु कौरिय कुंद नरेह ॥
बरने नख की उपमा कविता । सुजरे मनुं कुंदंन मुत्तियता ॥ छं० ॥ ८६ ॥
†जल बूंदं पुहप्प कि द्रप्पन दुत्ति । †कि तारकि तेज कि हीर प्रभत्ति ॥
बर गोप्प सुगंध सुजांनियनं । प्रगटै बर बास सदेह घनं ॥ छं० ॥ ८७ ॥
षट दून चवग्गुन में बरनं । सिनगार अभूषन ए कहनं ॥
नव सज्जिय बालत मोर मुषं । उपमा कविचंद कही सुरुषं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
इन भाइ सुमुत्तिय गुंज[३] वहोइ । द्रिगं अधरं प्रतिबिंब सजोइ ॥
करैं रंगरत्त दुकूल सु ओर । भुलै मुष ऊरध पाइ भकोर ॥ छं० ॥ ८९ ॥
बन्यो मनबंक्र मनोरथ जंम । करे जह चंद जु धूरिक क्रम्म ॥
मिले कि कंहू अधरा रस पांन । कहै कविचंद सु जीरन जांनि ॥छं०॥९०॥

---

(१) को०--प्रयीग ।
* ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं हैं ।
(२) मो०--कब्बितांम ।　　　† ये दो पंक्तियां मो० प्रति में नहीं हैं ।
(३) मो०--गज्ज ।

सु देषि कह्यौ कविरूप अभ्यास। मनों उठई मकरंद सुवास॥
सजे घट दून अभूषन बाल। मनों करि कांम करी रति माल॥ छं०॥८१॥
सु लज्ज सु संकर सों मन अंध। मनों अरनांमद अग्ग सुबंध॥
धस्यो तन कौरव वस्त्र कुँआरि। मंडी जनु संभ मनंमथ रारि॥छं०॥८२॥

पांच सौ वैदिक पंडित, दो सहस्र कोविद, एक सहस्र मागध आदि गुण गाते हुए, ऐसी धूमधाम से रावल समरसिंह का मंडप में आना।

कवित्त॥ सय सुपंच वर विप्र। बेद मंच अधिकारिय॥
उभय सहस कोविद्द। छंद तक्कह[1] अनुसारिय॥
सहस एक मागध सु। सित्त पौरांन पविच्चिय[2]॥
सहस अट्ठ डाहालगत। गाइन सुर जित्तिय॥
उडिरेन धेन गोधूल कह। सहस दोष कहन घरिय॥
संभरिय ग्रेह[3] आहुट्ठ पति। मिलि विधान[4] मंडप भरिय॥ छं०॥ ८३॥

विवाह मंडप की शोभा का वर्णन।

छंद नाराच॥ विधांन धान मंडपं। अवांन जग्ग[5] पंडयं॥
विपथ्य चारि कित्तनं। समर्थ दैव रत्तनं[6]॥ ८४॥
धुनद्द धुंम्म सालियं। अषंड संन बालियं॥
प्रजान पुन्य पानयं। सु पंच कोटि दानयं॥
सभूत भेम लच्छिनं। अभूत दांन दच्छिनं॥ छं०॥ ८५॥
दमित्त काम संबरं। कलंक कित्ति रावरं॥ छं०॥ ८६॥
असेंन भूमि भारियं। ग्रहंत पांनि धारियं॥
कुसंभ चीर गंठियं। प्रथा प्रसंग पठ्ठियं॥ छं०॥ ८७॥
सु सद्दियं जयं जयं। सु सद्द विप्रयं लयं॥

---

(१) ए० को० कृ०—तर्क।
(२) मो०—पविसिय।
(३) मो०—ग्रह। (४) ए०—विधान।
(५) मो०—जग। (६) यह तुक मो० में नहीं है।

अरुअयो सु उद्दयं । सिकार सद्दयं सयं ॥ छं० ॥ ९८ ॥
अचिज्ज सिद्ध चारनं । विचार बार बारनं ॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ परनि बीर रावर समर । बहुत काइं रस जोइ ॥
कवि वर बरनत ना बनत । और सुभग बहु होइ ॥ छं० ॥ १०० ॥
करे चंद बरदाइ दुहु । बार बार मनुहार ॥
राज राज ढिग ढिग फिरै । मनों समदु रबिसार ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवि कहता है कि पृथ्वीराज के यहां विवाह मंडप में इन्द्रादिक देवता जय जय कर रहे हैं और लग्न का समय ज्यों ज्यों पास आता है आनन्द बढ़ता है।

कवित्त ॥ चौहानन के गेह । इंद्र जचि[1] होय अगिन बर ॥
अष्ट देव सत सील । नाम[2] संतोष मंत्र बर ॥
सहस गजन बर राज । बीर ढिल्ली अधिकारिय ॥
जच्छ देव गंध्रब्ब । जयति जै जै उच्चारिय ॥
दिव देव लगन आवै घरी । तिम तिम बाढै पेम रस ॥
ज्यों चढे समुद्द चिस्रोर बर । तिम सु बीर बढ्ढति जस ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दान सकल सामंत । न्यांत अग्गै अधिकारिय ॥
इंद्र राज कुब्बेर । इंद्र वासम न विचारिय[3] ॥
बचन रचन सचि कचहि । देव सचि कचे ग्यान रुधि ॥
अष्ट जोग भुक्ते सभोग । निरयंत सकल सिध ॥
जे जे नरिंद संभरि धनी । संभरि विधि संभरि चरित ॥
भूपाल बीर दरबार बर । तिच्छित देव लागे सुगत ॥ छं० ॥ १०३ ॥

सामंतों और राजाओं ने जो जो दहेज दिया उसका वर्णन।

छंद भुजंगी ॥ प्रथमं सुकन्हं निवंत्यो सु राजं । कही उप्पमा चंद कब्बीति साजं ॥
अतं[4] एक बाजी करी पंच दूनं । दियौ राज कन्हं निवंतो स जूनं ॥ छं० १०४ ॥

(१) मो०--जब ।　　　(२) ए०--नांस ।
(३) मो०--प्रति में "दान बरषत जलधारिय" पाठ है ।
(४) को० ह० ए०--सितं ।

रज्जी वस्त्र हेमं नगं पारि पारं । तिनं देषते देव गत्ती विचारं ॥
दियं निड्डुरं राइ रट्ठौर राजं । भुजंगादि भुखै कहै सब्ब साजं ॥ छं०॥१०५॥
दियं बंध राजं सुलब्बं पवारं । धनं राइ कुब्बेर लभ्भै न पारं ॥
महा दंत दंतीन की पंति बंधी । दरब्बार मानों नगं जोति संधी ॥छं०॥१०६॥
दियौ जाम जद्दों सु बड्डो जुवानं । सहस्सं दसं हेम गज एक पानं ॥
दियौ राज षीची प्रसंगंति बीरं[1] । उभै दून हथ्थी हयं सत्त सूरं॥ छं० ॥१०७॥
रजक्की सु वस्त्रं अनेकं प्रकारं । दिषै बीर बीरं महा बीर सारं ॥
दियौ राज गौइंद आहुट्ठ राजं । दियं तीस हथ्थी महातेज साजं ॥छं०१०८॥
इक्कं माल मुत्ती उतंगं सरूपं । तिनं देखतें भान क्रंनं न भूपं ॥
अनत्ताइ दीयौ लियौ नाहि राजं । हुतौ ईस भक्तं उदै देव साजं ॥छं०॥१०९
षिया रूप आगें महा पाप लच्छी । तिनं राज राजं निरष्षी अनच्छी ॥
दियौ राम राजं रघुब्बंस बीरं । तिनें पार कुब्बेर लभ्भ न तीरं ॥ छं० ॥ ११
उभै सत्त बाजी उभै सत्त हथ्थी । तिनं सथ्थ एकं किरन्नी बिरथ्थी ॥
उऐ एक राजं दियौ एक भानं । दसं तेज ताकी पराकी प्रमानं ॥ छं० ॥१११॥
दियं सत्त बंधं कनक्कं बिराजं । उभै सहस हेमं इकं बाज राजं ॥
कियौ राज न्यौतै अजम्मेर बीरं । सदा सागरं गौरयं लाज नीरं ॥छं॥११२॥
दिए पंच बाजी सुरंगं तुरक्की । जिने धावतें वाइ की गत्ति थक्की ॥
दियौ राज चंदं पुंडीरं सु बीरं । महा हेम सहसं उभै बाज तीरं॥छं०॥
दियौ राज कैमास न्यौतौ नरिंदं । घरं पंचमौ भाग लच्छी स व्यंदं ।
जितौ राज राजं दरब्बार हेमं । तितौ पंचमौ भाग अप्पौ सु तेमं॥छं०॥११४
दियौ चाइ चामंड लच्छि प्रकारं । नवं निद्धि सिद्धं सुलभ्भै न पारं ॥
रह्यो एक वस्त्रं उभै पंच बाजी। दियौ राजराजिंद राजिंद साजी॥छं०॥११
दियौ अल्हनं अंग इत्तौ प्रकारं । तिए तात के नग्ग लिन्ने सुधारं ॥
हयं हेम रूपं गयदं सु लच्छी[2] । जिनं देषतें इंद्र कै गब्ब गच्छी॥छं०११६।
दियौ दान सूरम्म[3] सादल्ल मोरी । इकं बाज बीरं रजं पंच कोरी ॥
दियौ राज चंदेल भोंहा विचारं । तिनं न्यौंत कै कोइ लभ्भै न पारं॥छं०

(१) को०—चीरं । (२) ए० को० ह०—में "तिनं अंग अंगं विरजं सुलच्छी" पाठ है ।
(३) ए० को० ह०—सूरम्म ।

मगं पंच मुत्ती इसी अट्ठ माला। जिनें द्रब्य कौ छेह आवै न पाला ॥
बंधे साहि गोरी लच्चो तस्सबीरं। दई राज चौहान न्योंतें सरीरं छं०॥११८॥
सतं पंच बाजी सतं अट्ठ हथ्थी। तिनं देखतें तेज कुब्बेर नथ्थी ॥
दियौ राज जंघार जहां नरिंदं। तिनें नाम भीमं महातेज कंदं ॥छं०॥११९॥
दसं बाज पंचं इकं[1] मुत्ति माले। तिनं तेज आइत्त रवि किरन झाले[2] ॥
षसं मीति च्यारं सयं समरकंदी। गुरं राम दीयौ मनौ राज इंदी ॥
छं० ॥ १२० ॥
लियौ ना सुराजं कछू नाहिं रघ्यौ। पछै धर्म राजं सु राजं बिसष्यौ ॥
दियौ बीर चालुक्क बाजार बीरं[3]। सिरं काज राजं सुभारथ्य भीरं ॥
छं० ॥ १२१ ॥
न्रपं हथ्थ देतं सु सेवक्क मंडै। महा छत्र छत्री न छत्रीन पंडै ॥
हथ्यौ राज प्रथिराज दै हथ्थ तारी। तिनं भारती कौन आवै प्रकारी ॥
छं० ॥ १२२ ॥
दियौ टांक चाटा चपल्ल प्रकारं। इकं बाज तेजं मनों अग्गि सारं ॥
दियौ बग्गरी देव देवाधि दानं। सहस्सं बाजी दियं बाइ पानं ॥छं०॥१२३॥
दियं अंबरं छाव से पंच दूनं[4]। तिनं तेज आइत्त देषंत भूनं ॥
डुल्यौ सबै सामंत कौ गर्भ भारी। पछें दान सीसं दियं हथ्थतारी ॥
छं० ॥ १२४ ॥
दियौ राज हम्मीर चाहुस्सि इंदं। तहां कब्बि चंदं उपम्मा सु छंदं ॥
म्रगं नाभि कप्पूरयं गुंट बाजी। दियौ मुद्ध[5] मुष्टं तनं तेज साजी ॥
छं० ॥ १२५ ॥
इकं कास मीरं पची संनी थंभं। इकं भद्र जाती सु हथ्थी अचंभं ॥
सबं सहि हज्जार भारं प्रमानं। दियौ चारके कष्ट सोभिनं दानं ॥छं०॥१२६॥
दइ एक माले सुमुत्ती सुरंगं। दिनं इक कौ मौल आवै सुभंगं ॥
दियौ नीति रायं सुपिच्चीय दानं। पिष्यौ राज चहुवान घल्यौ न पानं ॥
छं० ॥ १२७ ॥

(१) मो.—नगं। (२) को.—झालं। (३) ए. क.—बीरं।
(४) ए.—पूनं।
(५) मो.—धुमीव।

दई भांन भट्टी निधी साप कारं। उभै एक बाजी तुर्छ द्रव्य धारं॥
दियौ बीर पाचार न्यौतौ प्रमानं। तिनं दांन कैमास कों आप थानं॥
छं०॥ १२८॥

मुरं दोइ बाजी सु मत्तं प्रकारं। दई लष्ष दूनं अधं तानि तारं॥
दियं अल्हनं दानयं मत्ति घट्टी। इकं बाज रूपं अधं सच्च पट्टी॥ छं०॥१२९॥
इतौ अब्ब सामंत दीनौ प्रमानं। सगा रष्यदानं करै को बषानं॥छं०॥१३०॥

कवित्त॥ जालंधर बर बाइ। बीर यद्दा मुलतानी॥
बंग तिलंगी मच्छ। कारनही सिद्धानी॥
बर गोतम दिसि गंग पार। परबत दिसि राजं॥
मालू मालव राज। बीर बीरत्त गति राजं॥
कुंकुन सकुंच कालिंग दिसि। कंदलेस कछ अच्छु गति॥
नृपराज राज राजन बली। सुबर बीर जा बीर मति॥ छं०॥ १३१॥

पृथ्वीराज और चित्तौर के रावल का सम्बन्ध बराबरी का है दोनों की प्रशंसा।

कवित्त॥ षत्रिय राज प्रथिराज। सुषत सगपन सु द्रष्ट[1] गति॥
न्नव्वल कौ बल राव। सबर बीरत्त सुबीर मति॥
सुत्त मत्त रजपूत। फिरे चाव दिसि धारं॥
अंग अंग तनु कुचै। क्रम्म सा क्रम्मय सारं॥
मति गरुव राज राजन बली। धरैं अंभ सभ्भ सुधर॥
चित्रंग राव रावर बली। उंच सगपन तत्त बर॥ छं०॥ १३२॥

कवित्त। अति उदार पहु पंग। सुनिय जग बत्त श्रवनं॥
षत्रिय भाव आदरन। पर्व सम पवित समन्नं॥
बहुरि गरुअ तोंअर चिनेत। मानव मातुल गुर॥
सिरषिम राज चितंग्यौ। भंम स्नरति बिवाह धुर॥
इक मात पुत्र आनंग बर। है भगनी है पुत्र जनि॥
संसार संभरिय राज गुर। भए सबंध था परि सुभनि॥ छं०॥ १३३॥

(१) मो०--द्रष्ठ।

पृथ्वीराज और पृथाबाई के नाना अनंगपाल का वर्णन।

अनग पाल तोंअर सु। भ्रम्म धारन उद्धारन ॥
बंस बीय मातुलह। भए है बीर सुभारन ॥
कलि तारन अरि देह। जुगनि किती बिस्तारन ॥
चाहुआंन कमधज्ज। बंस मातुल गुर पारन ॥
प्रथीराज दिल्ली न्रपति। चित्रंगी बर चिंतयौ ॥
पंचमि बिवाह पंचमि घरिय। भयौ मुहूरत में भयौ॥ छं०॥ १३४ ॥

कवित्त॥ व्याह मध्धि करनेस। जग्य मधें चित डोले ॥
द्रुतौ पाप कविबंध। देव देवासुर बोले ॥
ज्यों चारन घर[1] निंद। जाइ भुक्तै अनुधारी ॥
सा सुरिंद संग्रहै। दोष लग्गै जुग भारी ॥
ग्यार सें अंत भषह सुहत। महा दोष अति ही सुबर ॥
बडवंध होइ निग्रह धरन। लघु बंधव हुअ नरक पर ॥ छं०॥ १३५ ॥

बिवाह का देव विधि से होना, बहुत सा दाम दहेज देना।

छंद पद्धरी ॥ तिन मध्य बिराजत राज राज। निर्मेलिय कला रवि तेज साज।
ज्यूं जुगति जूबवर करन भोग। आए सु राज राजन सभोग॥ छं०॥ १३६॥
आए सुराज तिस्सुत नरिंद। चाडाल कंत कमध सुध्यंद ॥
पंचाल देस सोमेस सूर। कलकंत मुष्य न्रमल सनूर॥ छं० ॥ १३७॥
आए सु बीर किसाट कर्न। धूंमह सुदेव धूम्मह सुपंन ॥
एलची देस भंडेर बीर। आए सु कोटि मुष तिमह नीर॥ छं० ॥ १३८॥
देवत्य व्याह चहुआंन कीन। दंग्यं सु व्याह सम बरह चीन्ह ॥
अप्पी सु पुब्ब सिवरह सु ग्रेह। कल बढी कला जिन लीन देह॥ छं०॥ १३९॥
अप्पे सु एक सिव ग्रह प्रमान। आरम्भ व्याह द्रुगाह बिधान ॥
मै मत्त मत्ति मंतह सु कीन। सिंगार सार सम सबस दीन॥ छं० ॥ १४०॥
हुअ व्याह जनक सीता प्रकार। मिलि जग्य राज राजन सुभार ॥
संभरि नरेस सोमेस पुत्त। रघ मांनि बीर अब भूम भुत्त॥ छं० ॥ १४१॥

(१) मो०—धर।

साटक ॥ वे सोमेस सुतंत्र संभरि जयं । तारंग सूरं बरं ॥
सा दुज्जं दुज अंम्म देवति धरा । आई अइंजं घलं ॥
तामध्यं न्नप अंस सोम न्नपयं । नामं नरिंदं धुरं ॥
प्रिथ्थू नाथ सनाथ जम्य करनं । राज्यंद राजं गुरं ॥ छं० ॥ १४२ ॥

व्याह के पीछे दर्बार में आना ।

कवित्त ॥ दुलन मंच सब राज । आइ दरबार सु इंदं ॥
ज्यों नक्षित्र विंटयौ । सरद सोहै अति इंदं ॥
कनक पंति नग व्यंट । भांन विंट्यौ सुमेर बर ॥
जस विंट्यौ बल सोइ । ईस विंट्यौ सु जटबर ॥
यों विंट्यौ राइ सोमेस सुत्र । सबल राज राजन गहत्र ॥
आरत्ति बीर देषति न्नपति । भांन चंद लग्गै चहत्र ॥ ॥ छं० ॥ १४३ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ।

दूहा ॥ चहत्र सु लग्ग सु अर गिरि । गहत्र लगै प्रथिराज ॥
चावद्दिसि लक्की सु जन । काजन मुक्किय काज ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दूहा ॥ लयौ जनम या कज्ज न्नप । घर घर धरपति कांम ॥
चाव द्दिसि भूपति सुभे । जु कछु भूमि पर धांम ॥ छं० ॥ १४५ ॥
छन्द पद्धरी ॥ जो कछू राज राजन नरिंद । सो भये कांम प्रथमीस इंद ॥
नर वर न्नपत्ति दीसै प्रमांन । उज्जले गंग ज्यों अंम ध्यांन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
बर सुबर बीर पग मुक्कि धीर । बहु द्रव्य इंद्र राजन सरीर ॥
नव लच्छि अंग अष अष प्रमांन । उच्छास सोइ मंडै निधान ॥ छं० ॥ १४७ ॥
कनवज्ज बीर मुक्की सु लच्छि । तिथि देषि इंद्र कौ अब्ब गच्छि ॥
कुब्बेर कोपि अंतह निरष्षि । सो अंन धार अष अष बरष्षि ॥ छं० ॥ १४८ ॥
बहु बंधि संधि मनु देव काज । मंगल सु जोर नीसांन बाज ॥ छं० ॥ १४९ ॥

रावल का रनिवास में आना ।

दूहा । बर बंदे सुंदरि सकल । चावद्दिसि फिरि पंति ॥
मनुं अंग अंग अनंगनह । रति बर राजति कंति ॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो०-बलं ।

कवित्त ॥ वरनि चाहु उप्पर । उतंड अच्छित मुत्ताफल ॥
सचि उप्पर ससि किरनि । धीर सुषे गुन चाहल ॥
चावद्दिसि अंगनां । अंगनं मित गुन मंडचि ॥
एक एक कों मिलत । एक लज्या मन पंडचि ॥
प्रिथा दिष्षि झंषि चित्रंगपति । अच्छित मंचच विक्रति ॥
छोडंत छोट छोटन कियें । अनयं नारि नंचे सुहत ॥ छं० ॥ १५१ ॥

तिलक होना, और भांवरी फिरना ।

छंद भुजंगी ॥ वियं अंग अंगंति अंगं तिरंगं । बुले बेद बेदं सुजं मध्य भंगं ॥
कला की अनेकं प्रकारंत व्याइं । टरै लग्न साइं मइं मंत राइं ॥ छं० ॥ १५२ ।
दियं हस्त थालं तिलक्कंति राजं । तहां चंद कब्बी उपम्माति साजं ॥
मनों क कमोदंत ज्यों इंद साजं[1] । मिल्यौ जाइ चंदं सु मुत्तीनि पाजं ॥
छं० ॥ १५३ ॥
दिसा देव मंचं अमंचंति धारें । नृपं भ्रंम सोधै विधी देव टारें ॥
बुले विप्र अंगं सु सिद्धो सुदेदं । मनो देवता अग्ग भूले सवेदं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
नृपं राच दिट्टं कह्वरंति टारै । फिरैं भावरी भांन सुम्मेर सारै ॥ छं० ॥ १५५ ।

हृषीकेश वैद्य और चन्द के बेटे जल्ह आदि को दिया . तब रावल फेरा फिरे ।

कवित्त ॥ श्री पति साच सुजांन । देस थंभच संग दिन्नो ॥
अरु प्रोहित गुर रांम । ताहि अग्या नृप किन्नो ॥
रिषिकेस दिय ब्रह्म । ताहि धन्नंतर पद सोहै ॥
चंद सुतन कवि जल्ह । असुर सुर नर मन मोहै ॥
कवि चंद कहै वर दाय वर । फिरि सुराज अग्या करिय ॥
करि जोरि कह्यो पीथल नृपति । रावर सत भावरि फिरिय ॥ छं० ॥ १५६ ॥
दोहा ॥ निगम बोध गोतंम रिष । थिरि जेहि दिल्ली थांन ॥
दास भगवती नांम दे । प्रिथीराज चहुवांन ॥ छं० ॥ १५७ ॥
रिषीकेस अरु राम रिष । बहु विध देकर मांन ॥
प्रिथा कुंवरि परनाय कै । संगि चलाये जांन ॥ छं० ॥ १५८ ॥

(१) मो०—छाजं ।

प्रत्येक भांवरी में बहुत कुछ दान देना।

कवित्त॥ एक फिरत भांवरी। साठि मेवात गांम दिय॥
दुतीय फिरत भांवरी। दुरद दस एक अग्गरिय॥
त्रितिय फिरत भांवरी। दयौ संभरि उदक्क कर॥
चौथी भांवरि फिरत। द्रव्य दीनौ अनंत बर॥
चहुआंन चतुठ चावहिसा। छिंदवान बर भांन बिधि॥
गुन रूप सहज लच्छी सुबर। सहज बीर बंधी जु सिधि॥ छं०॥ १५९॥

रावल समरसिंह के पुरुषों को चित्तौर मिलने का इतिहास वर्णन।

छंद भुजंगी॥ अनेकं अनेकं प्रकारंत सब्बी। करै राज भ्रम्मं सुतं भ्रम्म कब्बी॥
मिले सर्व छिची इते व्याह राजं। तिजभ्भै नहीं नेक राजं सुसाजं॥ छं०॥ १६०॥
मषं भाजनं रंग रामं प्रकारं। कला अट्ठ मांनौ सु चथ्थं पसारं॥
रतं नील रेनं किते स्याम सेतं। तहां ओपमा चंद बरनै सचेतं॥ छं०॥ १६१॥
गुरं भांन चंदं अरी राह राजै। मनों एक नषित्र सज्जे बिराजै॥
उडंतं अबीरं घनं सार रंगं। तिनं देवता बास भूलंत अंगं॥ छं०॥ १६२॥
किते भेद भेदंत मिष्टांन रूपं। तिनं बास देवं लगै सोम भूपं॥
बिधं कुंड मंडप्प मंडे उतंगं। तिनं बास भौरं अली भूलि संगं॥ छं०॥ १६३॥
जिती बिद्द चित्रंग गावै अपारं। दियै बिप्र गारी सवं भक्ति सारं॥
तुमं महि छिची न जानंत तत्तं। तिनं बंस कोनं सु पुच्छै अभीतं॥ छं०॥ १६४॥
रसं रच्चि लच्छी बडी पग्ग उट्ठी। तिनं ढुंढि ढंढात नीके लिपट्ठी॥
बडे राज देवत्त बीसल्ल नारी। सराधार भारं बली सत्त धारी॥ छं०॥ १६५॥
तुमें चित्त चित्रंग चित्तं बिचारं। तुमं ब्रह्म बंसं धरें सत्त भारं॥
दियौ राज हारीत रिषं प्रमानं। कन्यौ तप्प एकं गए कंम पानं॥ छं०॥ १६६॥
सिवं लिंग बिझ्झे तुव्यो सो अघाटं। तिनं ठांम नामं भव्यो मेद पाटं॥
रमै बिप्र साथं सु हारीत रिष्यं। करै सेव बाबं स आहत्त सिष्यं॥ छं०॥ १६७
किते छेद भेदं किते गान गावै। किते देवता सेव पुष्पं चढ़ावै॥
करै रष्षि तप्पं दिनं गंग न्हावै। तहां उज्जलं गंगयं नीर धावै॥ छं०॥ १६८॥
करै अंग कष्टं सधै पंच अग्गी। महा तेज छीनं तनं पंच नग्गी॥
कियं पूरनं तप्प तथ्थं स अग्गं। लियं लष्य हारी अहारी सु मग्गं॥ छं०॥ १६९॥

जिती काल बेसं वखै बाल पत्या । तिनं देषिकैं सह आजुल्य गत्या ॥
रिषं उंच तेनं विनं मोल चायं । नचीं मुष्य मंझौ लियौ भोखि पायं ॥छं०॥१७०॥
चल्यौ अह सीसं किये उड्ड पायं । महा तेज दुःष्यं दिष्यौ रिष्य रायं ॥
नमो मंच मंची नमो चौसपालं। दियौ राज बंसं जमं कौ बिसालं॥छं०॥१७१॥
रयं मंच प्रम्मान दिष्यौ सुरिष्यं । दई भूमि जुग्गं जुगंतं विसष्यं ॥
तिनं बंस चिचंग चिचं सु राजं । परं नीतिबीरं प्रिथा बाल वाजं॥छं०॥१७२॥

द्गीता मालची॥ ढलकंत बेंनिय बाल सेंनिय स्नग्ग नेनिय गावईं ।
मधुरं सबद्दं रस्सि बद्दं चद्द चद्दं भावईं ॥
बै स्यांम सोरं गुननि गोरं चिच सोरं सोचईं ।
गुञ्जंत[1] थोरं उठे कोरं बेस भोरं मोचईं ॥ छं० ॥ १७३ ॥

बिवाह की शोभा का वर्णन ।

विस॥ विधि स्रृंगार रस बीर । हास करुना तन चारिय ॥
रुद्र भयानंक मंत । करी करुना ता वारिय ॥
करुना तजि रस अठ्ठ । भयौ नृप राज बिवाहं ॥
सुष सनेह धन ग्रेह । राज जोगिंदनि साहं ॥
सुष व्याह सजन सम हत रवन । गई नठ्ठि चय जांम निशि ॥
सहदेव देव देषन चलह । भुगति मुगति धन राज बशि ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ सा सुंदरि सुंदरि सुकथ । रस[2] दरसन परिमांन ॥
मनों देव देवाल बजि । वर दुंदभी निसांन ॥ छं० ॥ १७५ ॥

भुजंगी । बजे दुंदभी भेरि देवाल थानं । करे युत्ति रुपं अनेकं प्रमानं ॥
त्रिपं भीर औसीं दरब्बार थानं। मिले षंड षंडं सुराजान जानं॥ छं० ॥ १७६ ॥
प्रिथा रूप आगें प्रथी कैान औसी । जनक्कं सुदारं सिया रूप कैसी ॥
भुगत्ती मुगत्ती चितं नाह कारं। सबै दिव्वियं राज राजं दुआरं॥ छं० ॥ १७७ ॥
महा भोजनं ते प्रकारं विलासं । तिनं स्वाद तें देव छंडे न पासं ॥
रचे अग्गि स्वाहा सुदेपत्ति होज । महा जग्य जापं अहंतंम सोज ॥
छं० ॥ १७८ ॥

(१) ह०--उझंत । (२) के० ह०--सर ।

छिन छिन्न लंका सपत्तौ विराजै । दिनं अष्ट येवं रचै द्वार साजै ॥
सुई राज लच्छी न पूजै सुकंती । जये देवता जग्य में जीमवंती ॥ छं० ॥ १७९ ॥

कवित्त ॥ बहुत मंसघन सार । असन बलमीन समंछत ॥
अनँग जोग फल अनत । पान मिष्टान असंछत ॥
छिति छिपी विधि सजषि । देह लक्षी लच्छि रूपं ॥
रंक रंक गति छंति । होइ राजिंद सुभूपं ॥
नवनीत सुनीत पुनीत प्रभु । चाहुआन रंजे सुभर ॥
जानियै राज राजंन कै । सुरा थान माया सुघर ॥ छं० ॥ १८० ॥
अग्र दीप घनसार । बंटि मृगमद पान रस ॥
बहुत सरस रस राज । दिष्षि प्रतिव्यंब अप्प जस ॥
आरति व्यंद अरविंद । कमल कैरव ससि सागर ॥
भुगति मुगति संग्रहै । मुकति भंजै अति आगर ॥
मय मंत कूप[1] अष्पा अषम । लषिन बतीस सुवंधि गुन ॥
तिहि काज भोज राजन करत । उछ्छाह प्रथिराज मन ॥ छं० ॥ १८१ ॥

दूहा ॥ माया मोष[2] सु देषि कैं । गति भूले चालाहि[3] ॥
मानें मंच सुमंति[4] गति । वर ब्रह्मा वस भांहि ॥ छं० ॥ १८२ ॥

पृथ्वीराज के दान दहेज देने का वर्णन ।

कवित्त ॥ एक एक रन जोग । गरुअ हहअत्त चित्त बिधिं ॥
साम दांन लघुमंति कंति मग्गीति संति सिधि ॥
अवलि बाज गज एक । उभै अप्पै नर वस्त्रं ॥
हेम चीर रजकीय । पार पावै ना मंतं[5] ॥
गहअत्त गरुअ भय अत्त दें । सत हथ्थिय करनिय जुगति ॥
प्रथिराज राज राजन वनिय । देव दांन राजन भुगति ॥ छं० ॥ १८३ ॥

कवित्त ॥ राज दांन विधि देन । लग्गि आचिज्ज थांन थिय ॥
नाग लोक सुर लोक । रवी मंडल नर नर थिय ॥

(१) मो०—कुपा । (२) मो०—लोभ । को०—लोभ ।
(३) मो० ह० को०—चलाहिः ।
(४) ह०—को०—ह०—मंत । (५) मो०—मत्तं ।

चयति कंति कंतियनि । चथ्थ पंतिय रवि राजै ॥
सु कवि चंद बर दाइ । देषि देषाधि सु लाजै ॥
षदि राज षांन संभरि धनी । किहि विधि लछी लछैं गुनी ॥
वैंक सुगंग उडगनति नभ । पत्त नरोवर गिर घनौं ॥ छं० ॥ १८४ ॥

दूहा ॥ दांन मांन निरमांन गुन । भगति रत्ति नृप जोर ॥
कहा दिष्षि कोइ लेइ निधि । भयौ भरें[२] घर चोर ॥ छं० ॥ १८५ ॥

दूहा ॥ तन आगै मन चलत है । मन आगे तन जाइ ॥
जिहि बिधि दांन सु उच्चरै । तिहि विधि पाप सु जाइ ॥ छं० ॥ १८६ ॥

दूहा ॥ कम्मसु अति विधिनां रची । अंग रोर सिर पान ॥
तिन भंजन सोमेस सुअ । धनि संभरि चहुआन ॥ छं० ॥ १८७ ॥

चौपाई ॥ दिसि दिसि पूरिय हय गय राज । प्रिथीराज सुरपुर सम साज ॥
बाजै पंच सब्द बनि रंग । रहबनि द्वादस सूर अभंग ॥ छं० ॥ १८८ ॥

कवित्त ॥ एक दीह निड्डरह । राज रष्यो चिचंगी ॥
* दुतिय दीह सामंत । गरुअ गोविन्द अभंगी ॥
त्रितिय दीह पज्जून । बल्लि कूरंभ सुधारी ॥
चतुर दीह नर नाह । कन्ह कीनी कित्ति भारी ॥
पंचमी दिवस कैमास बलि । बलि सुराइ सम जग्य किय ॥
छट्ठें सु दीह पुंडीर धनि । धीर रष्षि कीरत्ति लिय ॥ छं० ॥ १८९ ॥

कवित्त ॥ सत्तम दिन रघुवंस । राम करनी कर मेरं ॥
जिहि नंदी पुर भंजि । समर मनुहारि सुबेरं ॥
अट्ठम दिन अचलेस । अचल कीरति जिन रष्षी ॥
नवम दिवस पाहार । जगत दारिद्द सु नंषी ॥
दसमें पँवार धाराधि पति । सलष सु लषि पूरन्न विधि ॥
दिन एक एक रष्षे सवन । पंच च्यार लुट्टाय निधि ॥ छं० ॥ १९० ॥

(१) ए० कृ० को०—उड्डनति । (२) मो०—भर्‍यौ ।

* ए० को० कृ० प्रति में "दुतिय गोविन्द सु दीह । गरुअ सामंत अभंगी" पाठ है ।

रावल का बारह दिन तक बारह सामतों ने अपने अपने यहां नेवता किया ।

कुंडलिया ॥ रष्षि उभय घट[1] बीर बर । बर जंघारो भीम ॥
जिहि ओलें प्रथिराज की । को अरि चंपे सीम ॥
को अरि चंप्प सीम । देव दुज्जन अधिकारिय ॥
तिहि रष्यौ चित्रंग । समर रावर ग्रह चारिय ॥
विधि विधांन विम्मान । द्रव्य अर्चन करि चष्यौ ॥
रावर समर नरिंद । न्योति द्वादस दिन रष्यौ ॥ छं० ॥ १८१ ॥

बारह दिन तक रहकर रावल का कूच की तयारी करना ।

दूहा ॥ षट बीय द्यौस रषौ सु नृप । भर सु भांति बहु राज ॥
दिन बारह चित्रंग पति । बज्जे बज्जन बाज ॥ छं० ॥ १८३ ॥

कवित्त । बजि बाजन अनुराग । सबर उच्छव बर धारिय ॥
नूर धूप तें अक्क । पंड हथिनापुर सारिय ॥
हुअ उक्काह दिल्लीस । बंधि गुड्डिय ग्रह[2] धारं ॥
मनो सोम कल कोट[3] । करिय कल बल बिस्तारं ॥
धन अहति ग्रेह उच्छाह हुअ । चाहुआन रवि बढ्ढयौ ॥
वेनिय[4] सुजस्स पुरषातनह । बल अनंत घट चढ्ढयौ ॥ छं० ॥ १८४ ॥

बरात लौटने की शोभा का वर्णन ।

छं० मोतीदाम ॥ इति छंद सुछंद सुचंद प्रकार । सु मुत्तियदाम पयं पय चार ॥
परे गजनां जिहि कंकन चार । इसो गुन पिंगल नाम उचार ॥ छं० ॥१८५॥
दसों दिसि पूरि व्रपत्तिय सेन । बिराजय राज अनंद सु अैन ॥
सुधिं सुधि बीर प्रकार प्रकार । चलें संग दंपति ज्यों रति मार ॥ छं० ॥ १८६ ॥
ठनंकिय घंटनि हथ्थिय पूर । किनं किय बाजिय साजिय सूर ॥
इकं इक हथ्थिय दाखिय पंच । इसी सरसं गुन रच्चिय संच ॥ छं० ॥ १८७ ॥

---

(१) ए०-कृ०-बर । (२) मो०-घर द्वारं ।
(३) मो०-कोटि । (४) ए० कृ०-विलिय ।

विधिं विधि पूरन पत्तिय सोम। तिनं किय उज्जल सज्जल व्योम ॥
रहं रह राजन साजन सेन। मनों दिव देव दिवाधिय तेन ॥ छं० ॥ १९८ ॥
तुरंगनि तुंगनि की प्रति धींस। लगै तिन मंद सुमंदह ईस ॥ छं० ॥ १९९ ॥
दूहा ॥ ईस मंद संकर उदित। ब्रह्म ध्यान सिव पान ॥
संभरि घर चिचंगपति। को सन मानन जान ॥ छं० ॥ २०० ॥
कवित्त ॥ बर सु बुद्धि साधन सरीर। जोगह अधिकारी ॥
कर अदग्ग जग दग्ग। सरन रष्षन जुगचारी ॥
माया सों नहिं लिपत। नीर नीरज समान बर ॥
यों चिचंग नरिंद। चतुर विद्या कोविद नर ॥
गोरी सु बंध सुरतान रन। जस लेयन जै जैति बर ॥
सा लच्छि रूप भगनी प्रिथा। परनि राज पत्तौ सुघर ॥ छं० ॥ २०१ ॥
दूहा ॥ जहां परनि चिचंगपति। करी उलटि बिपरीति ॥
सिर अप्पौ जुग्गिनि नृपत। देव लोक दिवजीति ॥ छं० ॥ २०२ ॥

अनंगपाल का बहुत कुछ दान देना।

कवित्त ॥ वाजे बीर सु वाजि। राज बज्जा सो बज्जा ॥
जस बज्जा बज्जासु। भ्रम्म क्रंमं चित रज्जा ॥
सम न कोई चिचंग। गरुअ गढिलोत गरुअ मति ॥
धनि सुध्रम्म अरु दान। दियौ दिल्लीस बहु भँति ॥
भार मंडि बीर बुट्ट दिवस। सत्त अट्ट अरु पंच भति ॥
अग्गरें वांन बर काम छत्त। इक्क बार घट्टइ सु गति ॥ छं० ॥ २०३ ॥
रोला[1] ॥ जो दिन रही ढिल्ली प्रति मांनिय देव गति ॥
रति संपति सुख ग्रेह भार आर अति
दुहुं तन सुमन निरष्षिय लोइ बर ॥
मानों सची सँजोग सुरपति आपु घर ॥ छं० ॥ २०४ ॥
दूहा ॥ कनक कोड सुष्षे जयति। रतिन कहै कवि चंद ॥
बर जानै कै दंपती। कै[2] दीपक कै चंद ॥ छं० ॥ २०५ ॥

(१) ए.-कृ.-को.-चौपाई। (२) ए. को.-को।

कवित्त । मति मध्या भय बाल । बिनै प्रौढा अधिकारी ॥
लच्छी सोज सलज्ज । रूप रति बरन सु सारी ॥
धीरं तन सिय सार । बिरह मंदोदरि नारी ॥
पति सु हुता रुकमनी । गिनी[1] कुंभिनि अधिकारी ॥
सा प्रथीराज भगनी प्रिथा । देव जग्य सम जग्य किय ॥
आनंद रूप आनंद कथ । सोम नंद जस बंद लिय ॥ छं० ॥ २०६ ॥

कवित्त ॥ अरुन तरुन उदयंत । सिद्ध सिक्कार फिक्कारिय ॥
दिसि उत्तर ईसान । दिसा दस दसन उक्कारिय ॥
बिमल नाग बल्लिय बिनोद । केलिय अबिलंबिय ॥
बागवान दरिसीय । रवन राजन कर संमिय ॥
संचार सुमन सैारभ बर । भमर रोरि रंगिय करिय ॥
आगम अरंभ बर बरष फल । जगति जोति व्यासह धरिय ॥ छं० ॥ २०७ ॥

व्यास जगजोति की भविष्यद्वाणी ।

कहत व्यास जगजोति । नयर नागोर बसंतह ॥
जोइ नंदै सोइ नंद । हसै सो रचै हसंतह ॥
इंद्रपथ्थ पुर आदि । राज राजन बहुआनह ॥
अमर बेलि कीरति । अछेह साधन सुरतानह ॥
आचिज्ज बत्त हिंदुअ तुरक । हमल हेल हल्लैं भुअन ॥
प्रथमंग पुब्ब पच्छिम पथिर । होत बत्त गंध्रव सुअन ॥ छं० ॥ २०८ ॥

कवित्त ॥ रुधिर अकल्लित न्हान । कछ पुब्बह पच्छिम पर ॥
कोलाहल कमिनिय । कज्ज हारम्य देव हरि ॥
समर सून्य[2] मंडलीय । अमर बिहार बार[3] किय ॥
द्रुपद राय पंचाल । दुसह द्रोपदिय चीर लिय ॥
* सोइ समय बरष इकईस मय । चरपवंत जुग्गनि कहिय ॥
बंचै बिचार हिंदू तुरक । इक्क अचल कीरति रहिय ॥ छं० ॥ २०९ ॥

(१) ए.–को.कृ.–गिनि ।
(२) ए.–सुन्य । (३) मो.–सार ।
* मो. प्रति में "सोई समय अमय वठ विय वरष" पाठ है ।

सभों का अपने अपने घर लौटना।

कवित्त। * "अप अप ग्रेह गुरंम्य"। राज राजन संपत्ते ॥
भोरा राव भिमंग। बत्त पुच्छै जग जित्ते ॥
पामारिय प्रारंभ। खोर संभरि[1] आदानह ॥
सा हंडे सोमेस। पुत्त बंधन सुरतानह ॥
हेला हमीर हम्मीर सों। विजय राज कमधज्ज किय ॥
अच्छर अचम्भ[2] गल्हों गहअ। धरनि पंच चहुआन लिय ॥ छं० ॥ २१० ॥

कवित्त ॥ धरनि पंच चहुआनि। आनि फेरिय कर जित्तौ ॥
ना पक्ष हिंदू तुरक। सबै[3] बीतक ज्यौं वित्यौ ॥
धीर मीर संग्रहिग। भीर भंजिय भिरि राजन[4] ॥
जै जै तन चहुवान। देव दुंदुभि घन बाजन ॥
जिहि ग्रहन पानि रावर समर। हुअ आगम जोगिग कहै ॥
अप अप्प क्रम केलिय कहन। लिष लिलाट तित्तौ लहै ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूहा ॥ सत्तरि सत तिय अग्गं करि। रज गज अप्प ग्रवास ॥
दीन सगोरी दंड धपि। षह सित्त पंचास ॥ छं० ॥ २१२ ॥

शाह गोरी का रावल को दहेज देना।

कवित्त ॥ सत्तरि सत तिय अग्ग। बीर गज राज सु अप्पिय ॥
ते दीनों सुरतान। साहि गेरी गोरी किय ॥
पंच सित्त पंचास। एक सै तुंग तुरंगम ॥
सै दासी चतुरंग। सत्त ढोलिय अचंभम ॥
चतुरंग लच्छि चिचंग दे। बर सोमेसर थप्पियै ॥
बुल्लाइ[5] सजन रावर समर। पंच कोस मिलि जंपियै ॥ छं० ॥ २१३ ॥

---

* मो० प्रति में यह पंक्ति नहीं है।
(१) ए० को० क०—संभि।
(२) ए०—चबंध।
(३) ए० को० क० प्रति में नहीं है।
(४) ए० को० क०—रावन।
(५) क०—बोलाई।

पृथा ब्याह की फल स्तुति ।

सुनै ग्रहै उग्रहै । बत्त बिय सम उच्चारै ॥
लिषै दिषै अरु सुनै । सुद्ध मंची सुद्धारै ॥
प्रथा ब्याह संभरै । पंच भै अंचन लग्गै ॥
सेस फनंमित सुभट । काल पंसी नन लग्गै ॥
साधवी सीय भगनी प्रिथा । प्रथा बरन चित्रंग पर ॥
इन सम न कोइ भुवनह भयौ । नन ह्वैहै रवि चक्र तर ॥ छं० ॥ २१४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके प्रिया विवाह वर्णनं नाम एकविंसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ २१ ॥

अथ होली कथा[1] लिष्यते ॥

—⁂—

[बाइसवां समय ।]

पृथ्वीराज का चन्द से पूछना कि होली में लोग लज्जा और छोटे बड़े का विचार छोड़कर अबोल बकते हैं इसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ इक दिन प्रिथु नृप पुच्छयो । कहि कविचंद विचारि ॥
नर नारी लज्या गई । फागुन मास मझार ॥ छं० ॥ १ ॥
बाल वृद्ध जुव्वन पुरुष । बुल्लैं बोल अबोल ॥
मात पिता गुर ना गिनैं । निकसैं टोला टोल ॥ छं० ॥ २ ॥
च्यार वरन एक्कत्त मिल । कलह रूप कलहंत ॥
षाधि अषाधि न जानहीं । ज्यों मन[2] नहिं विलसंत ॥ छं० ॥ ३ ॥
या पुच्छी कविचंद कौं । चिय हरष्य सुषदाय ॥
जु कछु भयौ सु कहौ तुम । तुम बानी बरदाय ॥ छं० ॥ ४ ॥

चन्द का कहना कि चौहान वंश का ढुंढा नामक एक राक्षस था उसकी छोटी बहिन ढुंढिका थी ।

ढुंढा नाम राषस हुतौ । चहुवाना कुल मझिझ ॥
तस लघु भगिनी ढुंढिका । जोवन रै सुष संझि ॥ ५ ॥

ढुंढा ने काशी में जाकर सौ वर्ष तप किया, यह सुन ढुंढिका भी भाई के पास गई, ढुंढा भस्म हो गया, तौ भी ढुंढिका बैठी रही, उसे सौ वर्ष योंही सेवा करते बीता ।

ढुंढि गयौ बानारसी । सत्त बरस तप किन्न ॥
तब ढुंढी सुनकैं गई । रही भ्रात सुष चिन्ह ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) मो० और को० प्रति में यह (होली) समय नहीं है । (२) ए०–मांहि ।

ढुंढै तन मन जग्य मैं । बाल कियौ भसमंत ॥
प्रिथीराज चहुवान भय । भए सूर सामंत ॥ छं० ॥ ७ ॥
तब ढुंढी बैठी रही । सत्त वरष जग जान ॥
पवन खाय सेवा करै । ताको सुनो बषान ॥ छं० ॥ ८ ॥

तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर ढुंढिका से कहा कि मैं प्रसन्न हूं वर मांग ।

तब गिरिजा सु प्रसन्न भय । मँगि ढुंढी बरदान ॥
हम सहै तब सह करनि । भष्यि करै नर जान ॥ छं० ॥ ९ ॥

ढुंढिका ने कहा कि यह वर दो कि बाल वृद्ध सब को मैं भक्षण कर सकूं ।

बाल वृद्ध भष्यन करौं । हम को दै महमाय ॥
यह बानी सुनि मामुही । रष्या करनी राय ॥ छं० ॥ १० ॥

गिरिजा ने शिव जी से कहा कि ऐसा उपाय कीजिए कि ढुंढिक की बात रहे और वह नर भक्षण न कर सके ।

तब गिरिजा पति सौं कह्यौ । ढुंढी रष्य सु वत्त ॥
ढुंढी नर भष्यन करै । सोय विचारौ मत्त ॥ छं० ॥ ११ ॥
गिरिजा सिव मिलि यौं कहै । एक अपूरब वत्त ॥
जोगी जंगम बाहुरैं । से राषे नित नित्त ॥ छं० ॥ १२ ॥

शिवजी ने आज्ञा दी कि फागुन में तीन दिन जो लोग गाली बकें, गदहे पर चढ़ें, तरह तरह के स्वांग बनावें उनको छोड़ और जिसको पावे वह भक्षण करे ।

विहल विकल बानी असुर । बोलहिं बोल अनन्त ॥
एता नर मारीत जवि । अवरनि कौ करि अंत ॥ छं० ॥ १३ ॥
सिव आग्या पवनह दई । प्रिथमी घर सहु अंग ॥
फागुन मासह तीन दिन । करौ अनेरौ रंग ॥ छं० ॥ १४ ॥
रासभ परि चढ़ि चढ़ि हसहिं । सूप सीस धर लेहु ॥
गोसा बंधे गलि फिरै । हो हो सबद करेहु ॥ छं० ॥ १५ ॥

ढुंढिका ने जब आकर देखा तो सभों को गाली बकते, पागल से बने, गाते, बजाते, आग जलाते, धूल राख उड़ाते पाया ।

ढुंढी आइ जहां तहां । दिष्षे लोग अजान ॥
हो हो करि रासभ चढ़ैं । ए कवि कहै बषान ॥ छं० ॥ १६ ॥
चटक चटक दिन प्रति भषैं । मद मादक अप्रमान ॥
नर नारी सब मति गई । ए पन मन अनुमान ॥ छं० ॥ १७ ॥
सिंधू राग बजावहीं । गावहिं नवला गीत ॥
हो हो करि हा हा करैं । ए मंडी विपरीत ॥ छं० ॥ १८ ॥
घरि घरि अगनि प्रजारहीं । उभिक धूर अरु राष ॥
नाचैं गावैं परस्पर । त्रिया दिषावत काष ॥ छं० ॥ १९ ॥
इहि विधि बाउ जवाविउ । फगुन मास सों भाव ॥
लज्ज भज्ज बिहपन गई । भावै पाव सुषाव ॥ छं० ॥ २० ॥

इस प्रकार से लोगों ने इस आपत्ति के टाला, चैत का महीना आया घर घर आनन्द हो गया ।

इहि विधि दुरित निवारियो । मिट्यौ हबी उर दंद ॥
आयैा चैत सुहामनैा । गृह गृह भयो अनंद ॥ छं० ॥ २१ ॥

जाड़ा बीतने और बसंत के आगमन पर लोग होलिका की पूजा करते और ढुंढिका की स्तुति करते हैं ।

स्लोक ॥ गतेनु षार समये । बसंते च समागमे ॥
होलिका प्रब्ब पूज्यंते । ढुंढा देवी नमोस्तु ते ॥ छं० ॥ २२ ॥

इति श्री कबि चंद बिरचिते प्रिथीराज रासके होली कथा समय नांम बावीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ।
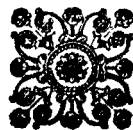
अथ दीपमालिका कथा लिष्यतें ।

(तेइसवां समय ।)

पृथ्वीराज ने फिर चन्द से पूछा कि कार्तिक में दीपमालिका पर्व होता है उसका वृत्तान्त कहो ।

दूहा ॥ फिर पूछी पृथिराज नृप । कहो चंद कवि सब्ब ॥
होत सुकातिक मास महिं । दीप मालिका प्रब्ब ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द का दीपमालिका की उत्पत्ति कहना ।

कहि कविचंद नरिंद सुनि । जो पुच्छौ कथ मोहि ॥
दीपमालिका उनिपत्ति सब । कहै सुनाऊं तोहि ॥ छं० ॥ २ ॥

सत्ययुग में सत्यव्रत राजा का बेटा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी था, सुर नर उसकी सेवा करते थे, वह प्रजा पालन में दक्ष था, सब लोग उससे प्रसन्न थे ।

सतयुग सतव्रत राजसय । प्रत्य दिषायौ देव ॥
तासुत सोमेसर कहिय । सुर नर करत सुसेव ॥ छं० ॥ ३ ॥
बहुत पुष्य पालै प्रजा । रिद्ध दिद्ध मंडान ॥
च्यार वर्न चंहु आश्रमहि । दान मान परिथान ॥ छं० ॥ ४ ॥

उस नगरी में समुद्र तट पर बहुत अच्छे बाग़ लगे थे वहां एक बैदिक ब्राह्मण रहता था, उसकी स्त्री छल रहित थी ।

ता नगरी सत्यावती । सरित समुद्रह तहिं ॥
बारी बाग विचित्र नर । ग्यान ध्यान घटि घहि ॥ छं० ॥ ५ ॥
तहां बसे सतश्रम द्विज । वेदवंत वल बुद्धि ॥
ताकी नारी नागरी । ताछर नारी रिद्धि ॥ छं० ॥ ६ ॥

स्त्री ने पति से कहा कि धनहीन दशा में जीना और दुःख भोगने से मरना अच्छा है, सो इसका कुछ उपाय करो ।

अवर न कोई नर दुषी । सुष भोगवै अनंत ॥

नारी कहि जिसु रघ्य सम । व्रिथा जीव तुम कंत ॥ छं० ॥ ७ ॥
विथ्या जीवन मनुष कौ । जो धन नाहीं पास ॥
तातें को[1] उपचार कर । करै रहै बन बास ॥ छं० ॥ ८ ॥

सत्यश्रम ब्राह्मण ने ज्ञान ध्यान की ओर चित्त दिया ।

तब सतिश्रम आद्दर करिय । ग्यान ध्यान चित देषि ॥
जीवन जनम विथा गयो । पाप उदय तन देखि ॥ छं० ॥ ९ ॥
गाथा ॥ सपनो अथ्य विहूनो । सेवेरने न भाषयौ दीनो ॥
मंगह मरन मह गोन । बीभि नेम न मानि किन ॥ छं० ॥ १० ॥

सत्याश्रम ने सौ वर्ष तक विष्णु का ध्यान किया, विष्णु ने ब्रह्मा को बताया, ब्रह्मा ने रुद्र को कहा, रुद्र ने कहा कि माया को प्रसन्न करो हमारा सब काम वही करती है ।

दोहा ॥ सत्ति सरम सत वरष्षलो । सेये विष्णु नरंत ।
विष्णु बतायौ ब्रह्म कौं । ताको पार न अंत ॥ छं० ॥ ११ ॥
तब ब्रह्मा सु प्रसन्न भय । रुद्र बतायौ ताम ॥
रुद्र कह्यौ माया बरहु । करै हमारौ काम ॥ छं० ॥ १२ ॥

तीन वर्ष तीन महीना तीन घड़ी में वह प्रसन्न हुई और उसने चौदह रत्न दिए ॥

त्रियन बरस त्रिय मास दिन । त्रीय घटी पल उन्न ॥
सु प्रसन भइ सा कामिनी । दिय चौदहौ रतन्न ॥ छं० ॥ १३ ॥

सत्यश्रम ने विचार किया कि राजा की सेवा करनी चाहिए, ऋद्धि सिद्धि से क्या होता है ।

तब सतिश्रम ऐसी कही । कहा रिद्ध अरु सिद्धि ॥
सेवौ नरपति नाह कों । एह बानएहु निद्ध ॥ छं० ॥ १४ ॥
दिन पह्वर बुधि उप्पजी । दिन विहखि बुधि जाइ ॥

(१) कृ०—का ।

दीप दिखायौ बुद्धि वर। बझै दीप लच्छि जाइ॥ छं० ॥ १५ ॥

गाहा। को कौन पर्थीयौ। को कौन जचौंग॥

कह कहन नामियं सीस। दुभर(१) गम्भर चक्क औ कित्तयं किन कायवं॥ छं० ॥ १६ ॥

ब्राह्मण की बुद्धि में प्रकाश हुआ कि कार्तिक की अमावस सोमवार को लक्ष्मी उसके पास आती है।

दोहा॥ बंभन बुद्धि विनास हुइ। तहं दिष्षै लच्छिवास॥

कार्तिक मावस सोम दिन। लच्छि आवहि निहि पास॥ छं० ॥ १७ ॥

लच्छी जल निधि ही बसी। निकसि निहू दिन दिन्न॥

अगर कपूर सुदीप दर। जहां पान उर षिन्न॥ छं० ॥ १८॥

ब्राह्मण को चार वर्ष राजा की सेवा करते बीता तब राजा ने कहा कि वर मांग।

बंभन राजा सेवही। बरस भये दुअ च्यार॥

तब राजा वरदान दिय। मंगौ मन्नि विचार॥ छं० ॥ १९ ॥

ब्राह्मण ने दीपदान बर माँगा अर्थात् कार्तिक की अमावस को उसके अतिरिक्त संसार में दीपक न जले।

तब बंभन ऐसी मँगी। दीपहु दान विचारि॥

कार्तिक मास समुद्द दिन। दीप लबै संसारि॥ छं० ॥ २० ॥

अच्छे लोयन अच्छि तहां। अच्छे लोयन निपान॥

नर नारी उद्दिम रहै। पीक परी निहिपान॥ छं० ॥ २१ ॥

राजा ने कहा कि तुमने क्या माँगा ब्राह्मणों की पिछली बुद्धि होती है, अन्न धन गाँव माँगना था, अस्तु अब घर जाओ।

कहा मँगी तुम देवता। पस्चिम बुद्धी विप्र॥

अन धन गांव गंमार मगि। घर जाओ तुम विप्र॥ छं० ॥ २२ ॥

ब्राह्मण ने घर आकर एक मन तेल और सवा सेर रुई मंगाई।

(१) ए.-उभर।

अपने घर तब आय करि । तेज लियौ मन एक ॥
छई सेर सवा लई । इह तन की जु विवेक ॥ छं० ॥ २३ ॥

कार्तिक आया, ब्राह्मण ने उत्साह के साथ राजा से कहा कि जो मांगा था सो दीजिए ।

कार्तिक आयौ कलपतरु । विप्रह भयौ उछाह ॥
मंग्यो हतौ सु देउ प्रभु । पड़ह बाज बहु नाय ॥ छं ॥ २४ ॥

राजा ने आज्ञा प्रचार कर दी कि उस दिन कोई दीपक न बाले ।

तब आयस नरपति कियौ । कोय न बानै दीप ॥
आज्ञा भंग जो को करै । ताहि बँधाऊं चीप ॥ छं० ॥ २५ ॥

लक्ष्मी समुद्र से निकली तो उसने सारे नगर में अँधेरा पाया केवल ब्राह्मण के घर दीपक देखकर वहीं आई और विचार किया कि यहीं सदा रहना चाहिए ।

लच्छि समंद निस्सरी आई नगरह तथ्थ ॥
अंधारौ अहि पूरजे । सु दीपक दिट्ठौ जथ्थ ॥ छं० ॥ २६ ॥
बंभन कै घरि दिष्षि करि । आइ रही दरबार ॥
अह निसि वासै हम वसै । लच्छी कहै विचार ॥ छं० २७ ॥
लच्छी बच्छी क्या करै । दारिद दहि मुहि मत्त ॥
तू पाला घर थान रहि । सदा दुचित्ते चित्त ॥ छं० ॥ २८ ॥
मो संगि सथ्थि जु निरबहौ । नदी पवनि गिर दंद ॥
रात दिट्ठ वासौ वसों । सं कंध्यौ मति दंद ॥ छं० २९ ॥

लक्ष्मी ने प्रसन्न होकर उसका दारिद्र काट कर वर दिया कि सात जन्म मैं तेरे घर बसूंगी ।

तब लच्छी सु प्रसन्न हुइ । कहे रोर करंक ॥
सात जनम तुरि घर वसौं । एक वसत अकलंक ॥ छं० ॥ ३० ॥

तब दरिद्र भागा ब्राह्मण ने उसे पकड़ा कि मैं तुझे न जाने दूंगा ।

तब दारिद्र जु भजि चल्यौ । बंभन पकरयौ धाय ॥

इक कोरी तुम पुब्ब सों। लच्छिक देव न जाय॥ छं०॥ ३१॥

दरिद्र ने वाक्य दिया कि मुझे जाने दो मैं कभी इस नगर में न आऊंगा।

तब दरिद्द वाचा दई। मो कूं तूं दे जान।
बहुरि न आऊँ इच्छ पुरी। ऐसो कहौं बषान॥ छं०॥ ३२॥

उसी घड़ी से उसके यहाँ आनन्द हो गया हाथी घोड़े झूमने लगे। उसी दिन से यह दीपमालिका चली।

घरि लच्छी आनंद मन। हय गय मान महंत॥
दीपमालिका तद्दिन तैं। एह चली महि वंत॥ छं०॥ ३३॥

चारो दिशा में दीप मालिका का मान्य है। यह कथा कवि चन्द ने कह सुनाई॥

पुब्ब पच्छिम उत्तर दच्छिन। दीपमालिका मान॥
थान थान परिमान मन। काम मनोरथ थान॥ छं०॥ ३४॥
कही चंद आनंद सौं। पुच्छी न्रप प्रिथीराज॥
दीपमालिका प्रगट हुइ घरि घरि मंगल साज॥ छं०॥ ३५॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रिथीराज रासके दीपमालिका पर्ब्ब कथा समय नाम तेवीसमों प्रस्ताव संपूरणम्॥

अथ धन कथा लिष्यते ।

(चौबीसवां समय ।)

खट्टू बन में शिकार खेलने और नागौर में शाह गोरी के कैद करने की सूचना ।

दूहा ॥ षट्टू आषेटक रमै । मद्दिम मुरस्थल[1] थांन ॥
नागौरै गोरी ग्रहन । सथ न्त्रिमल परधांन ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का कैमास की वीरता, बुद्धिमत्ता आदि की प्रशंसा करके प्रश्न करना ॥

कवित्त ॥ मंच जोग कयमास । मंच प्रथिराज सु पुच्छन ॥
तू मंची मंचंग । मंच जानहि सुभ लच्छन ॥
साम दांन अरु भेद । डंड निरनै करि लष्षै ॥
बहु मंचह उप्पाइ । राज मंचह करि रष्षै ॥
मंचह सुमंच मर्म अनुसरै । अरु मंच भेद जानै सकल ॥
अदभुत चरित्त पाषांन लिषि । बंचिन किन आवै अकल ॥ छं० ॥ २ ॥
तू मंची कयमास । मंच पय पय उप्पावहि ॥
तू मंची मंचंग । मंच मंचीन दिषावहि ॥
तू मंची सामंत । * स्वांम ध्रम्मं बिचारै ॥
धर सम्बह संग्रहै । मंच करि अरिन बिडारै ॥
तुम जोग मंच मंची न कोइ । सह बत्तन उच्चार कैं ॥
संसार सार मंचह प्रबल । कहै मंच बिचारि कैं ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का प्रश्न करना कि तालाब के ऊपर एक विचित्र पुतली है जिसके सिर पर एक वाक्य खुदा है, इसके अर्थ करने में सब भटकते हैं सो तुम इसका अर्थ करो ।

---

(१) मो॰—मरुस्थल क॰—मुरस्थल ।
* मो प्रति में "सांमि ध्रम्मं सुविचारै" पाठ है ।

कवित्त ॥ सलिल सुबर पाषांन । मध्य पुतली अचंभं ॥
सलिल मत्त तन जा विसाल । उप्पम रिस रंभं ॥
ता उप्पर बिय नाम । प्रगट प्राकार उचारै ॥
भूलि भूलि भ्रमि लोइ । मुद्ध मनसा करि डारै ॥
वंचौ सु वीर कैमास तुम । विथै बंच नाही बनिय ॥
भूतह भविष्य अरु व्रत्तमन । इह अपुब्ब में कथ सुनिय ॥ छं० ॥ ४ ॥

पुतली के सिर का लेख "सिर कटने से धन मिलै सिर रहने से धन जाय"।

दूहा ॥ सिर कट्टै धन संग्रहै । सिर सज्जै धन जाइ ॥
सो मंत्री कैमास तूं । मंत्रहि करै उपाइ ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का मंत्री के कर्तव्यों का वर्णन करके कैमास से परामर्श करना।

कवित्त ॥ श्रवन राज इग रत्त[१] । श्रवन जानहि परिमानन[२] ॥
बेद दिष्ट देषै सु । भेद अभेद सु ग्यानतू ॥
पसुत्र नयन आचरहि । धनह परिमांन सु लष्पइ[३] ॥
विपति लोइ संसार । सार द्रिग इक्कय दिष्पइ ॥
मंत्रीन दिष्ट मंत्रं तनी । मंत्र भेद अनुसर सरति ॥
व्रमांन[४] वीर जांने सकल । म्रूढ ग्यांन प्रौढ़ह सुमति ॥ छं० ६ ॥

कवित्त ॥ तिष्ण तरंगन पर्थ्यौ[५] । मंत्र तारक हरि सुद्धरि ॥
बहरि[६] अंध कलार । राज दंडह लिय उद्धरि ॥
सारंप जक्क जीव । नयन त्रिघात घात जुरि ॥
अषिल अषेटक भूलि । डुलि जब चित्त मित्त परि ॥
भुल्लहि सुदान त्रिम्मान गति । मरन मंत्र[७] नहि लिष्पवै ॥
मंत्री न मंत्र भुल्लै तबैं । विधि विचार विधि दिष्पवै ॥ छं० ॥ ७ ॥

(१) मो०--रस।
(२) मो०--की प्रति में "श्रव जानन, परि मानन" पाठ है (३) मो०--लखहि।
(४) ए०--वमांन। (५)-मो--पर्यौ। (६) मो० कृ०--बंदरि।
(७) मो०--मनं।

पृथ्वीराज का कहना कि सुना है कि बीर बाहन कोई राजा था वह बड़ा प्रजा पीड़क था और धन बटोरता था सब प्रजा ने उसे शाप दिया कि तू निर्वंश मरेगा और राक्षस होगा सो यह उसी का धन है ।

छंद पद्धरी॥ अब कहौं मंच तुम पुच्छ लोइ । मनि ग्रहौं नैम जिन करौ सोइ ॥
पाषान अंक में लिषे राइ । द्दत्तंत सोइ सब कँहु सुनाइ ॥ छं० ॥ ८ ॥
बाहन सुबीर कोइ भयौ राइ । तिहि पाप क्रंम लीनौ उपाइ ॥
संसार सकल तिहि दुष्ष दीन । सेवकन सेवनिह द्रव्य कीन ॥ छं० ॥ ९ ॥
प्रज पीड़ माल संग्रह्यौ कोरि । भरि जनम ग्रूढ़ भंडार जोरि ॥
संसार सकल तिन दुष्ष पाइ । सब स्राप दीन इह अगति जाइ ॥ छं० ॥ १० ।
विन वंस हंस इह तजै देह । इम प्रजा सकल कहि अप्पग्रेह ॥
कितनेक द्दिवस तिन तज्यौ स्रोर । भंडार पाहि बच सुनौ वीर ॥ छं० ॥ ११ ।

कैमास का कहना कि इस काम में अकेले हाथ न डालिए चित्तौर के रावल समरसिंह को बुलवा लीजिए क्योंकि जयचन्द, शहाबुद्दीन, भीमदेव आदि शत्रु चारों ओर हैं ।

अप पास कढ़न नहिं जाइ राइ । चित्रंग राव लिज्जै बुलाइ ॥
मिलि सुभट तास कढ्ढौ भँडार । तिन बिना दंद मचै अपार ॥ छं० ॥ १२ ॥
कनवज्ज राव जैचंद देव । नर असी लष्ष तिन करत सेव ॥
गज्जन नरेस साहाब साह । दस लष्ष मेच्छ सेवंत ताह ॥ छं० ॥ १३ ॥
गुज्जर नरिंद भीमंग देव । तिन अप्प अच्च[1] परिकंक केव ॥
ढिल्लीस तेज तूंअर नरिंद । तस बढ्यो बैर उपजै[2] सु दंद ॥ छं० ॥ १४ ॥
अप तुच्छ सेन इह मत्त मानि । मिलि समर सथ्थ पुकि लच्छवानि ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का कैमास की इस सलाह को मानकर उसको सिरोपाव देना और उसकी बड़ाई करना ।

चौपाई ॥ राजा ढिग कैमास बुलाइय । पहराइय सुउच्च सिरपाइय ॥
बगलि अप्प आरोहन बाजन । करी सुपारस सुसर कि राजन ॥ छं० ॥ १६ ॥

(१) ए.—अच्छ । (२) मो.—उपज्यौ ।

दूहा ॥ चरचि राज प्रथिराज कवि । मति कैमास दै नाम ॥
मति कैमास[1] कैमास तुम । सकल सुमति के धाम ॥ छं० ॥ १७ ॥

दूहा ॥ जां मंचह पूछत न्रपति । सांई अंग सु कांम ॥
समर सिंघ रावर मिले । धन काढ़ै अभिरांम ॥ छं० ॥ १८ ॥

पृथ्वीराज का चन्द पुंडीर को बुलाकर चिट्ठी दे समरसिंह के पास भेजना ।

मांनि मंच चहुआंन हुच । बोलिय चंद पुंडीर ॥
समर सिंघ रावर दिसा । दै कग्गद मति धीर ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल की भेट को घोड़े हाथी आदि भेजना ।

दूहा ॥ दस हैवर इक बग्ग बर । अरु दिय सिंगिनि पांनि ॥
कवि जुहार विधि जंपियौ । न्रप पुच्छिय कुसलांनि ॥ छं० ॥ २० ॥

चन्द पुंडीर का रावल के पास पहुंच कर पत्र देना और गड़े धन के निकालने में सहायता के लिये रावल से कहना, क्योंकि पृथ्वीराज के शत्रु चारों ओर हैं ।

कवित्त ॥ लै कग्गद प्रथिराज । बीर पुंडीर संपत्तौ ॥
सुबर जोर साहाब । मंडि गोरी धर थत्तौ ॥
बर भोरा भीमंग । चंपि चालुक्क बिलग्गा ॥
नाहर राउ नरिंद । सेन लष्षां असि दग्गा ॥
आषंड द्रव्य दिल्ली धरां । सुनि चक्कै द्रिगपाल सजि ॥
कढ्ढियै मंच मंची अपुन । बर बिभूति लच्छी सुरजि ॥ छं० ॥ २१ ॥

रावल समरसिंह के योगाभ्यास और जल कमल की तरह राज्य करने की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ समरसिंघ रावर नरिंद । समर सह संभर जित्तन ॥
अह जोगिंद नरिंद । चित्त जोगिंद समत्तन ॥
कमल माल सो भत्ति । चंद लिल्लाट बीय दुति ॥

(१) मो०--कैवास ।

नयन रंभ आरंभ । जोग पारंभ सिंभ मति ॥
मुंजीव ढाल जीपन बिरद । नाग मुषी सिझार बनि ॥
सा चिच कोट ओटह न्रपति । मचन रंभ मंडहि सुमनि ॥ छं० ॥ २२ ॥

पत्र पढ़कर समरसिंह ने हंसकर चन्द पुंडीर से कहा कि संसार की यही गति है कि मांस के एक लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और दूसरा खाता है, कोई कमाता है कोई भोगता है यह दैव गति है ।

दूहा ॥ बंचि बीर कग्गद न्रपति । हसिय चित्त बर बंक ॥
कछु लज्जा सगपन सु चित । रष्य पुंडीरां संक ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवित्त ॥ हसि जोगिंद नरिंद । बत्त सें मुष उच्चारिय ॥
*एक ग्रध्र संभूह । मंस लद्धौ पल हारिय ॥
अंब्ब गिद्ध बिंटटै । मंस चष्पौ जै कारिय ॥
तब सुमंत उप्पनौ । मंस लद्धौ गहि डारिय ॥
भुगवैति कोइ गड्डैति कोइ । कोइक पढ़ कोइ लभ्भवै ॥
दैवान दुसंकह दैवगति । जो न्रिम्मान सु न्रिम्मवै ॥ छं० २४ ॥

चन्द पुंडीर ने कहा कि आपने ठीक कहा पर पृथ्वीराज आपका बड़ा भरोसा रखते हैं सो चलिए ।

कवित्त ॥ सुनि हवत्त पुंडीर । बत्त जंपी सुनत्त जोइ ॥
तुम जोगिंद नरिंद । मत्त जंपै सुनत्त होइ ॥
सुअ सोमेस नरिंद । सुवन सगपन मिस पुच्छिय ॥
तुन चहुआना[1] गरुअ । मुष्य कछ्छौ किम ओछिय ॥
सामंत नाथ सामंत बल । मेर टेलि दच्छिन धरहि ॥
प्रथिराज आज राजिंद गुर । इंद फुनिंद न सो डरहि ॥ छं० ॥ २५ ॥

शहाबुद्दीन आदि पृथ्वीराज के प्रचंड शत्रुओं का सामना है इस लिये सहायता में आपको चलना चाहिए ।

---

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है ।
(१) मो० को०—लहुआना ।

कवित्त ॥ अग्गैइ रावर समर। करन साहस चहुवानिय ॥
हलहल अग्ग प्रचंड। संभ सोभै गर बानिय ॥
*अग्गैां अग्ग जुगिंद। अग्गि लग्गै बिरुझानिय ॥
अग्ग सिंध निठुर नरिंद। उठ्ठ चंपै परवांनिय ॥
अग्गे व काल सुनिये दुसहु। सच पिच्छै फिरि ठड्डयौ[1] ॥
चित्रंग राव रावर समर। संभरि वै दिसि चढ्ढयौ ॥ छं० ॥ २६ ॥

रावल समरसिंह का सेना आदि सजकर चलना सेना की तैयारी का वर्णन।

रिझ्यो सबर[2] नरिंद। सज्जि है गै चतुरंगिय ॥
हय गय दल चतुरंग। जंपि माहा भर जंगिय ॥
महा सुभर गज्जंत। बूंदि पुरधर आहुट्टिय ॥
सेस रुहस फन फट्टि। सकिलि[3] सल मलि साहुट्टिय ॥
फट्यौ सु सेस फन चंद कहि। तब फूंकर करि अग्गयौ ॥
फन किन्न उड्ड कुंडल करिय। तब सु सेस बल भग्गयौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

छंद भुजंगी ॥ बरं बिंटियं समर साहस नरिंदं। मनों बिंटियं उड़गनं अभ्भ चंदं ॥
किधो इंद्र पासं सबं देव राजै। किधैां मेर तीरं सु पब्बै बिराजै ॥ छं० ॥ २८ ॥
उद्यौ छत्र सीसं विराजै कला की। मनों इंद्र इंदी बरं चंद[4] जाकी ॥
दुतीता उपम्मा कवी का बषानं। मनों हेम के दंड पर चंद जानं ॥ छं० ॥ २९ ॥
कक्कू स्यांम पाटं विराजै करारी। मनो कहुई सोम कालंक कारी ॥
मयंमइ गज्जं सबद्दं सु उट्ठै। बरष्यंत दानं मनो मेघ वुट्ठै ॥ छं० ॥ ३० ॥
बजै ता जंजीरं अनेकं सबद्दं। मनों बुल्लियं झिंगुरं मास भद्दं ॥
धजं धज्ज हाले विराजै फिरंती। मनों मंडियं बग्ग घन मझ्झि पंती ॥ छं० ॥ ३
गजं उप्परं ढाल सोहै ढलक्कैं[5]। मनों केलि उग्गी गिरं कज्जलक्कैं[6] ॥

* यह पंक्ति मो०—प्रति में नहीं है।

(१) मो०—उट्टयो। (२) मो०—समर।
(३) मो०—सफल। (४) मो०—बन्द।
(५) मो०—ढलक्कं। (६) मो०—कज्जलक्कं।

सितं अङ्ग चज्जार विंध्यौ नरिंदं। तिनं उप्पमा दिष्षि जंपी सु चंदं॥छं० ३२॥
सबै सेन चतुरंग सज्जी अनेकं। मनों पारसं भान ग्रह एक एकं॥ छं० ॥ ३३॥

परामर्श करके रावल समरसिंह पृथ्वीराज के पास नागौर को चले ।

दूहा ॥ करि मतो चल्लै न्टपति। समर राव चहुवान ॥
नागोरह आए धरा। मद्धि कढ्ढि मेलान ॥ छं० ॥ ३४ ॥*

धर्मायन कायस्थ ने यह समाचार चुपचाप दूत भेजकर शहाबुद्दीन को दिया कि दिल्लीश और चितौरपति धन निकालने नागौर आए हैं ।

धंमायन कायथ लभे। पठि दूत पतसाह ॥
दिल्लि वै चित्तौर पति। धन कढ्ढै धरमाहि ॥ छं० ॥ ३५ ॥*

समरसिंह का दिल्ली के पास पहुंचना और दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना ।

कवित्त ॥ जाइ सपत्तौ समर। चंपि ढिल्ली धरवानं ॥
चहुआना रै हथ्य। दूत दीनौ फुरमानं ॥
असम विषम साहसी। रत्त माया अनुरत्तं ॥
कमल पत्त जल जत्त। मध्य अरु न्यारौ जत्तं ॥
छिप्पै न कलक काटन कलक। राज बंध बंध्यौ नहीं ॥
दस कोस कोस ढिल्लीय तें। राज मुक्कि राजन तहीं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का आध कोस आगे से बढ़कर अगवानी करना ।

कवित्त ॥ राजं दै दरबार। सुबर आनंद उपन्नौ ॥
पुव्व पाप कृहनह। समर जिन समर संपन्नौ ॥
सुबर बीर जोगिंद। चंद बिरदावलि दिन्नौ ॥
दिल्ली तें अधकोस। राज अग्गे होइ लिन्नौ ॥

* छंद ३४-३५ मो०-प्रति में नहीं है और को० प्रति में ये ४० छंद के बाद मिलते हैं ।

मंडरी मंडि देषै सु कवि । मति डंमरि लभ्भै न दुइ ॥
समरह सु ग्रेह अरु समर अलि । समर सुबय अरु समर जुइ[1] ॥ छं० ॥ ३७

समरसिंह का अनङ्गपाल के घर में डेरा देना, दो दिन रहकर सब सामतों को इकट्ठा करके सलाह पूछना कि अब धन निकालने का क्या उपाय करना चाहिए ।

कवित्त ॥ अनँगपाल ग्रह जा विसाल । समर उत्तरिय प्रिथा पति ॥
विधि अनेक भोजन सु व्रत । राज उत्तर सु सार भति ॥
उभय दिवस बित्तीय । सब्ब सामंत सु पुच्छिय ॥
सांम दांन अरु भेद् । कंक भजि कढ्ढौ लच्छिय ॥
कं कहन बंक तुम अनुसरहु । समरसिंघ रावर सुमन ॥
उप्पाइ मिट्टि सामंत करि । सु बर बीर कढ्ढौ सुधन ॥ छं० ॥ ३८ ॥

कैमास ने कहा कि मेरी सम्मति है कि शहाबुद्दीन के आने रास्ते पर दिल्लीपति रोकें, और भीमदेव चालुक्य का मुहाना रावल समरसिंह रोकें और तब धन निकाल लिया जाय ।

कवित्त ॥ मति सुचाह कयमास । द्रव्य कढ्ढन उच्चारिय ॥
मेन मुष्प सुरतांन । राज दिज्जै प्रथुभारिय ॥
चालुक्कां चंपै न सीम । रावल मुष दिज्जै ॥
अप्प अप्प मुष रष्पि । कढ्ढि लच्छी वर लिज्जै ॥
आलाभ जुच्छ[2] पय लाभ तुझ । सु कज्ज कांम किज्जै नही ॥
गोइंदराज षीची सुमति । मिलि विभूति कढ्ढ गही ॥ छं० ॥ ३९ ॥

रावल समरसिंह का इस मत को पसंद करना और मंत्री की प्रशंसा करना ।

कवित्त ॥ तब चिचंग नरिंद । चंदपुंडीर बरज्जिय ॥
तुम कुमंत बल मंत । मंत जांनौ न सरज्जिय ॥

(१) मो॰—जुध ।
(२) मो॰—यच्छ ।

ते मंत्री मंचंग। निगम आगम सब बुझ्झैं॥
अंगन कै कुट्टंत। घरह सुझ्झैं मन बुझ्झैं॥
अरि अरिन मुष्य रुक्काहि सुभर। तब सु द्रब्य मिलि कढ्ढियै॥
सुरतान भीर भंजै समर। सुमन मंत करि चढ्ढियै॥ छं० ॥ ४० ॥

नागौर के पास सब का पहुंचना, सुलतान के रुख पर पृथ्वीराज का अड़ना, शाह के चरों का पता लेना।

कवित्त ॥ जाइ संपत्तौ समर। मध्य नागौर प्रमानह॥
सुरताना रै मुष्य। कोट अड्डो चहुआनह॥
धन असंष कढ़ तत्तां। साह चर बर पगधाइय॥
चरचि चित्त सब सरित। चित्त करि हथ्य दिषाइय॥
~~सब्बाब मुकुर~~ फुरमान दिय। गांमी कल बल लग्गया॥
कढ्ढी सुलच्छि आइट्ट पति। मुष चहुआन विलग्गया॥ छं० ॥ ४१ ॥

दो दो कोस पर पृथ्वीराज और समरसिंह का डेरा देना।

कवित्त ॥ उभय दूत नागौर। दूत चहुआन पास हुअ॥
सब चरित्त धरि चित्त। लषन लष्यौ सुसेन सुअ॥
द्वै कोसां चहुआंन। कोस चित्रंगराज हुअ॥
अवन गवन जानहु सुबत्त। अनुसरहु पंथ जुअ॥
मन मध्य कथ्य जानहु सकल। चल्लहु कगार राज लै॥
धन ध्रंम अर्थ कढ्ढइ चरित। कहौं बत्त दिष्यै सु लै॥ छं० ४२ ॥

दूत का शाह को समाचार देना कि नागौर में धन निकालने के लिये दिल्लीपति आगए।

दूहा ॥ कलि चरित्त नागौर पहु। दूत सपत्ते आइ॥
दिल्ली वै.कढ्ढै सुधन। बज्जा बज्जन वाइ॥ छं० ॥ ४३ ॥

नागौर के समाचार पाकर सुलतान का उमरा खां के साथ डङ्का निशान के सहित पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ वज्जा बज्जन बाइ। देषि दैवान दुसंकह ॥
चित्रकोट रावर नरिंद। कहन भुज अंकह ॥
संभरि वै आहुट्ठ। लच्छि वढ्ढन बत्तीसह ॥
गज्जन वै सुरतांन। दून लै आइ चरीतह ॥
सुनि सच्छ नच्छ नीसान किय। बोलि उम्मरा षांन सह ॥
सज्जौ सुसज्ज संभरि दिसा। चाहुआन किज्जै बसह ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शाह का चक्रव्यूह रचना करके चलना, सेना की सजावट का वर्णन।

कवित्त। साह बद्दौ[१] सुरतांन। चक्का व्यूहं रचि चल्लिय ॥
एक एक असवार। बिच पाइक तिह मिल्लिय ॥
ता पच्छै गज पंति। पंति असवार समूहं ॥
जमर जंग औराक। गौर जंबूरति जूहं ॥
ता पच्छ पंति षुरसांन षां। ता पच्छै बंधी अनिय ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति षां। षांसिंमह्ह षेंषर पनिय ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पृथ्वीराज को बाईं ओर से बचाता सुलतान धूमधाम से चला, शेषनाग को कँपाता पृथ्वी को धसाता रात दिन चलकर नागौर से आध कोस पर जा पहुंचा।

कवित्त ॥ बाम कोह प्रथिराज। भुक्कि सुरतान सुचल्लय ॥
सज्जि सेन चतुरंग। समर दिसि समर सुहल्लय ॥
भूमि धसिय धस मसिय। सेस कसमस्सि उकस्सिय ॥
कमठ विमठ हुअ पिट्ठ। दट्ठ कूरंभ करस्सिय ॥
रिंगयौ सबल षुरसान दल। करि मुकाम सक्यौ न कोइ ॥
नुर अद्ध कोस नागौर तें। सज्जि बाज चंप्यौ सु जोइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

यह समाचार सुन समरसिंह का धन पर मंत्री कैमास को रख-कर आप सुलतान पर क्रोध के साथ चढ़ाई करना।

(१) मो० ए०-साहावद्दी।

कवित्त ॥ समर सिंघ सुनि श्रवन । बीर नीसान दिषंदे ॥
सज्जि सेन चतुरंग । तरकि[1] तोषार चढंदे ॥
थिर थप्यौ कैमास । लच्छि उप्पर गहि रष्षिय ॥
तरकि तोन सजि द्रोन । बलिय पारथ सम दिष्षिय ॥
भारथ्थ कथ्थ कवि चंद कहि । समर सार बर चल्लवै ॥
उक्कारि सेन सुरतान कौ । हय श्रठुनि करि हल्लवै ॥ छं० ॥ ४७ ॥

जैसे समुद्र में कमल फूले हों इस प्रकार से सुलतान की सेना ने डेरा दिया ।

दूहा ॥ साहस कर पत्तिय समुद । कमुद प्रफुल्लिय रंग ॥
उतरि सेन सुरतांन तँह । सह आई समरंग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

सवेरे उठते ही समरसिंह आगे सुलतान के दल की ओर बढ़ा, उसकी सेना के चलने से धूल उड़ने लगी ।

प्रात उदित रवि रत्त रँग । समर समर दिसि जग्गि ॥
तब लगि दल सुलतान के । षेह सु उड्डन लग्गि ॥ छं० ॥ ४९ ॥

धूल उड़ने से सब दिशा धूंधरी हो गई, दोनों दलों का हथियार सज सज कर लड़ने के लिये तैयार हो जाना ।

कवित्त ॥ षह सुषेह डंमुरिय । दिसा धुंधरी सुराजै ॥
अग्ग मग्ग उक्करै । चित्त उक्करै पराजै ॥
पवन बेग संजुरै । श्रवन लग्गा असि मंचं ॥
रथ कुवेर चक्कुये । बांन बक्कुये सुमंतं ॥
दोउ दीन कर दुंद दल । बरन लोह सज्जे सु बर ॥
चंप्यौ नरिंद आहुट्ठ पति । अगनि सार उड्डिय दुजर ॥ छं० ॥ ५० ॥

लड़ाई का आरम्भ होना ।

कवित्त ॥ धन नरिंद सुरतान । पांन दोइ बीच समाहिय ॥
दोइ मुष्ष अरि हक्कि । सिंघ बन की गति साहिय ॥

(१) ए० को० कृ०—तरिक ।
* यह दूहा (छन्द) मो० प्रति में नहीं है ।

धार धार बज्जै प्रहार । नह लग्गो[1] नीसानं ॥
संभरि वै सुरतान । मीर उट्ठे झुकि षानं ॥
घरि च्यारि लगि तरवार झर । बहु उभार लग्गिय फरन[2] ॥
दोउ दीन भीन घट घुम्मि घन । उक्करि सेन लग्गे लरन ॥ छं० ॥ ५१ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद पद्धरी ॥ बलवंत सबल पाहार पुंज । कर धरै षग्ग धायौ सु नंज ॥
लै पच चली कालिका नारि । पर बत्त गहै गय दंत भार ॥ छं० ॥ ५२ ॥
सिर तीर बुंद बरषंत वारि । सिर नषै इंद अप्पित अपार ॥
षग्ग सों षग्ग बज्जै करार । घन टहै घाइ जनु मत्त वार ॥ छं० ॥ ५३ ॥
मसंद मीर महुबत्त षांन । ढाहनह धीर धायौ परांन ॥
प्राहार कुंत त्रिय पुंज राज । समसेल चलै हनि षग्ग गाज ॥ छं० ॥ ५४ ।
तुट्यौ सु भीम संगेत पांनि । ढाहे कमंध महुबत्ति षांन ॥
लघु बंधु रुस्तमा हनिय सूर । बर माल बरैं ले चलीं हूर ॥ छं० ॥ ५५ ॥
जै जैत सबद जंपै जगत्त । पाहार करी अविगत्त वत्त ॥
पाहार पुंज रुस्तम्म षांन । मुह जुरे मरद हुये उतांन ॥ छं० ॥ ५६ ॥
है हयौ षग्ग रुस्तम मरद्द । बाहयौं षग्ग पुंजा दरद्द ॥
तुट्टयौ सीस सा पुंज राज । अच्छरी वरै करि उर्द्ध काज ॥ छं० ॥ ५७ ॥
नारद्द नद्द ग्रह इंद मद्द । पलचरी कालिका करै नद्द ॥
प्राक्रम सूर देषै पहार । धनि धन्नि कहै भर सकल सार ॥ ५८ ॥
ब्रह्म पूरि भेदि गय सूर सार । अति उंच क्रंम पामेव वार ॥ छं० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ बलिय फौज पाहार । दुतिय भारथ जिन मंड्यौ ॥
अरि अक्करि बर लीन । धार धारहु तन पंड्यौ ॥
ईश सीस संग्रह्यौ । हक्क तें हथ्थ न मुक्यौ ॥
सुर सुरीय कँच जांनि । सरस सिंगारहु चुक्यौ ॥
जानयौ गवरि कच मानि किय । कहा जानि नंदी हस्यौ ॥
जांनयै चंद इय कब्ब करि । चंद लिलाटहनें धस्यौ ॥ छं० ॥ ६० ॥

(१) ए० कृ० को०–भग्गो ।
(२) मो० प्रति में "बल उभ्भारिय षग झरन" पाठ है ।

कवित्त ॥ मुत्ति लहत सामंत । सिद्ध मन डोलन लग्गा ॥
चुकि समाधि जगि सिंभ । बंभ आराधन भग्गा ॥
* आपुतुचा तजि सूर । तुचा म्रग्गन आराधी ॥
तन तुट्टिग अधि[1] धार । मग्ग नहि अक्करिवाधी ॥
अचरिज्ज एक आतम गमन । देह मटी मुक्की निमुष[2] ॥
षंषेरि षाल मुक्किय जगत । सुकर किति चल्लिय सुरुष ॥ छं० ॥ ६१ ॥

दूहा ॥ षां ततार रुस्तम सुभर । अरु जे मीर समंद ॥
सोइ तत्ते गहि तेग षरि । वर वीरा रस मंद ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ चंद बंध पुंडीर बर । लष्पन लष्पा सार ॥
मिले मीर मरदान †मुष । धरि कर षग्ग करार ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवित्त ॥ षां ततार रुस्तम हुजाब । मुस्तफा महंमद ॥
| है सज्जे बर सार । तथ्थ आए मीरंबद ॥
मीर मारु कहि धीर । मिले लष्पन लष्पेसर ॥
सार धार वज्जंत । भिच्चो मुष हम्मीर गुर ॥
पुण्डीर सुबर साहस बरह । करिव युद्ध षट्टे सुपल ॥
कौतिग्ग देव देषंत सिर । अरिय भूत नंचे अकल ॥ छं० ॥ ६४ ॥

छंद हनूफाल ॥ आए सुमीर मसंद । बर षग्ग धारिब इंद ॥
हक्कंत हक्क करार । वज्जंत कर करतार ॥ छं० ॥ ६५ ॥
चिघ्घाय षग्ग चिकूट । बहि सार सामत जूट ॥
पुंडीर लष्पन लोइ । भर मीर आए दोइ ॥ छं० ॥ ६६ ॥
बाहैं दुसार करार । लरि लष्प लष्पन सार ॥
झंडे सु षग्ग उझाहि । तुट्टे सु झल्लर तहि ॥
उकि उक्कि ईस रनद्द[3] । नारद्द नंचि उमद्द ॥
भगि मीर पुर षुर तार । जुरवंत मीर जुझार ॥ छं० ॥ ६८ ॥

* "षिति संपुट पलिभल्यौ । तुचा म्रगगन आराधी" मो०—प्रति में ऐसा पाठ है।

(१) मो०—असि। (२) मो०—निमष।

† मो०—प्रति में छन्द ६४ की प्रथम दो पंक्तियों का पाठ "खां ततार रुस्तम उज्जाव, खान मुस्तफा महांभर, है सज्जै वर मार, तथ्थ आए सुर मरवर" है।

(३) मो०—सुनद्द। ग०—नरद्द।

भज्जंत सेन सुहाव। गज्जंत लष्षन गाव ॥
ललार नूरि हुजाव। हस्सम महमुद आव ॥ छं० ॥ ६९ ॥
बाहै सुलष्षन सार। चिसि टोर षिष्पर लार ॥
चौहनी लष्षन धार। परसंसि मीर झुझार ॥ छं० ॥ ७० ॥
गय सूर मंडल भेदि। भल कहन अच्छर वेद ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ चंद बंध पुंडीर। नाम लष्षन लष्षे सुर ॥
दुंद देबि पचार। दियौ हुंकार हक्कि गुर ॥
ईस सीस आनंद। पिंड गिद्धिन मन भाइय ॥
हूर सुर अच्छरि बिमांन। चढ़ि देवन आइय ॥
आनंम सोई उतपति चल्यौ। देव थांन विश्रांम भय ॥
जम लोक लोपि बसि ब्रह्म पुर। जंपि सेन दोउ सह जय ॥ छं० ॥ ७२ ॥

छंद दुमिला ॥ छह गुर लहु पायं अक्षिर दायं बिचि बिचि रायं इंदोई ॥
दुमिलानय छंदं पढ़य फुनिंदं कहि कविचंदं गुनगाई ॥
बज्जै रन तालं असि वर झालं भर भर हालं भंभीरं ॥
पारस सुविहानं कुट्टिय थानं चढ़ि मध्यानं कुटि तीरं ॥ छं० ॥ ७३ ॥
गंजी जननं जरि भंगै हिक्करि लरि रज उच्छरि गगनेदं ॥
धर धीर धरंतं जोग जुगंतं लरि लरि जोरं जरि भेदं ॥
किरवांन करक्कै बिज्ज तरक्कै छिच्छ उछक्कै इन भेसं ॥
दो उप्पम भासं माधव मासं अति उल्हासं दुति केसं ॥ छं० ॥ ७४ ॥
उडि सकै न गिद्धं सरबहि बिद्धं हसयति सिद्धं दै तारी ॥
षप्पर अधिकारी षंड उकारी जै जै कारी किन्नकारी ॥
गज दंत न बट्टै दै पग चट्टै कुंन सु कट्टै सिर चट्टै ॥
कंदल परि उट्ठै सीस बिकुट्ठै हनहि न रट्ठै भर बट्ठै ॥ छं० ॥ ७५ ॥

दूहा ॥ सस्त्रन सस्त्र न उब्बरिय। मन बर कुट्टिय नांहि ॥
ज्यों मध्या प्रिय तुच्छ निसि। सेरो सहर समांहि ॥ ७६ ॥

रावल समरसिंह के युद्ध का वर्णन।

छंद रसावला ॥ रोस राजं भरी। चित्रकोटे सुरी[1] ॥

(१) मो०--सरी।

हथ्य बथ्थं जुरी। जुहि सोहै षुरी[1] ॥ छं० ॥ ७७ ॥
नीच दौनं परी। बीर हक्कै उरी ॥
कुंत कठ्ठे कुरी। हथ्य हथ्थं करी ॥ छं० ॥ ७८ ॥
दंद कठ्ठे हुरी। कंध सोभै धरी ॥
लुथि आलुथ्थरी[2]। जंमता विक्कुरी ॥ छं० ॥ ७९ ॥
देवता संभरी। ढिल्ल राजं भरी ॥
जोग मत्ते जुरी। रंभ ढूंढै वरी ॥ छं० ॥ ८० ॥
वीर जा संभरी। कुहि कुक्कै करी ॥
मात पित्तं उरी। षत्त कन्है नरी ॥ छं० ॥ ८१ ॥
स्वामिना सुद्धरी। पुप्फ नंषे सुरी ॥
... ... । कित्ति जुग्गं करी ॥ छं० ॥ ८२ ॥

~~दूहा ॥ कित्ति~~ जोग करनह समथ। मिले सक्क सासेन ॥
आए मीर मुकुंद करि। परिय सिंघ सिर जेन ॥ छं० ॥ ८३ ॥

अरिल्ल ॥ कोप्यो रावल राज महाभर। सेना साह सहाबह लिय पर ॥
हिंदुअ सेन चक्कि भर उठ्ठे। पंच षांन सिर सारह तुठ्ठे ॥ छं० ॥ ८४ ॥

छंद भुजंगी ॥ उठे पंच षांनं बरं आसुरानं। बजे भेरि नाफेरि चंबे[3] निसानं ॥
धमक्कै धरा नाग गज्जै सुगेनं। चढ़े देव कौतिग्ग देषंत नैनं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
मिली अक्कुरी रथ्थ अप्पार रंजै। नचै नारदं ईसुरं अप्प कज्जं ॥
करै कूह दौरै भरं आसुरानं। जुटे सूर सामंत लग्गे भरानं ॥ छं० ॥ ८६ ॥
षगं टूअ बाहै झरै टोप मथ्थै। मनों झल्लरं देवलं कूटि हथ्थै ॥
जुरै षांन सामंत दोसार सारं। कहै दीन रामं जपै इष्ट रारं[4] ॥ छं० ॥ ८७ ॥
षडे आइयं अप्प आकूब मीरं। कुटै भ्रंम धीरज्ज कंपै अधीरं ॥
नवै आइ चामंड दाहिंम रायं। हयौ सेल मीरं गहक्कै गुरायं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
समं सेल षानं वहै षग्गझाहं। पस्यौ अश्व चामंड भग्गै सुघाहं ॥
उठे चोंड रायं गहै षांन सारं। तुटै मंडलं तुट्टिहै भाग पारं ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) मो॰—षरी। (२) मो॰—लोथि लोथं परी।
(३) ए॰—को॰—अंबे।
(४) मो॰—चारं।

ढह्यौ षांन हथ्थें सु षामंड रायं । इनै देषि मीरं निकट्टं सु नायं ॥
वहै षग्ग ढाहै चढ्यौ अप्प सायं । हली फौज साहं चंपे असुरायं ॥ छं० ॥ ९० ॥
तवै केलियं षान षानां कुलाहं । दुअं धारि षग्गं तुहैं हिंदु थांहं ॥
तवै आइ अड्डो भरं अत्तताई । लिय सिप्परं घाव तिच्छे सुनाई ॥ छं० ॥ ९१ ॥
वहै टूअ षग्गं करै मार झट्टं । मनों रंभथंभं दुअं सीस कट्टं ॥
गुरं गज्जते अत्तताई अभंगं । भरक्कै सुसेना सवै मीर भग्गं ॥ छं० ॥ ९२ ॥
इकं सेर नंमीर साहब्ब षानं । दुअं बंध पुत्तं सु आरब्ब जानं ॥
दुअं ध्रंम धारी उरं जागियानं । उभै दौरि वंधं लगे आसमानं ॥ छं० ॥ ९३ ॥
चपे मीर मुष्षं चवै मार वानं । लगे दाव घावं करै षग्ग पानं ॥
इयं जुद्ध आनुद्ध देष्यौ अपारं । भरं निड्डुरं देषि धायौ सुभारं ॥ छं० ॥ ९४ ॥
हए निड्डुरं संगि हय बंध मीरं । मनों सीर[1] इक्कं वरे दो सरीरं ॥
हने तेग तुरियं सुकमधज्जरामं । ढह्यौ अंस ओहंस उड्यौ तिसायं ॥ छं० ॥ ९५ ॥
उठे निड्डुरं हक्कि रट्ठौर[2] रानं । सिता[3] वं स चौडिं सुषं मानि भानं ॥
इते आइ दीनो तुरंगं अपानं । चाढ्यौ राव हयमीर कमधज्ज मानं ॥ छं० ॥ ९६ ॥
धये आइ तत्ते करै अप्प पानं । भगे सेन मीरं ढहै पंच षांनं ॥
बढी जैत देषी वरं हिंदुआनं । ... ... ॥ ९७ ॥
रिझें नार कंअक्करी गिद्ध सिद्धं । मनं बांकि प्रेमं जयं जस्स लिद्धं ॥
जयं जंपियं जोगिनी जे गमत्ते । करी कित्ति चंदं गयं गेनं पत्ते ॥ छं० ॥ ९८ ॥

पृथ्वीराज की विजय, शहाबुद्दीन की सेना का भागना ।

कवित्त ॥ घरिय अद्ध दिन रह्यौ । साह साहब वल भग्गिय ॥
गात षंभ निरघात । हथ्थ सामंतन लग्गिय ॥
पर्यौ षांन आकूब । जेन सेना ढंढोरिय ॥
केलीषां कुंजर कुलाह । तुहि तिन संग[4] विछोरिय ॥
चहुआंन सेन चव दंत चढ़ि । तनु तिन रव रनंषयौ ॥
सुरतांन भीच पंचौ परत । जलधि मध्य पत्तगंयौ ॥ छं० ॥ ९९ ॥

(१) मो.-शीश । (२) मो.-रठौरे ।
(३) मो.-रुके ।
(४) मो.-तंग ।

सूर्यास्त होना।

गाथा॥ अथ वन दीह सुधीरं। साहिब सेरंन हंनि निठुरयं॥
करि प्राक्रंम अपारं। जलनिधि मझि गन पतंगं॥ छं०॥ १००॥

रात होना। सेना का डेरे में आना।

कवित्त॥ जल निधि मध्य पतंग। पत्त[1] दिष्षिय तम ग्रासिय॥
कायर पंकज मुदिग। कुमुद उघघरि अलि वासिय॥
नर को चितव विहंग। वाम विरहनि दुष बढ्ढिय॥
संजोगिनि स्रंगार। चित्त कामह रथ चढ्ढिय॥
चक्रवाक चित चक्रित हुअ। चोर विटप मन उल्लसिय॥
औसरे सेन चिय उत्तरिय। स्वांमि प्रेम मन में बसिय॥ छं०॥ १०१॥

गाथा॥ ~~निसयर अर्जित~~ चित्तं। चितं जाग्रत उभय सयनेयं॥
जामं सर सारि हितं। वामीय काम सपनायं॥ छं०॥ १०२॥

अरिल्ल॥ पतन पतंग सुदिष्षिये अंबं। मानहु सीय सुद्ध प्रति व्यंबं॥
नष मयूष कोदह उप्पारै। मानो तिमिर जोग जंभारै॥ छं०॥ १०३॥

चामंडराय आदि सरदारों का रात भर जागकर चौकसी करना।

कवित्त॥ जवहि राज प्रथिराज। सेन उत्तरिय रयन गत॥
तवहि सुराजन कज्ज। रहे सामंत सु जग्गत॥
राचां मंड निडुरकमंध। अत ताइय ईस बर॥
सु गुरु जैत पामार। अरिय भंजन अलष्ष भर॥
अवरें सु सब्ब सामंत भर। चढ़े राज चौकी समथ॥
गुर लज्ज अवर भर सज्जि रहि। है पष्पर चवरार हथ॥ छं०॥ १०४॥

अरिल्ल॥ डेरा करि बर राज महाभर। तुछ अंतर मिल्लि रहै सिंघ गुर॥
चौकी सेन चढ़े भर सिंघं। एक एक सक सूर अभंगं॥ छं०॥ १०५॥

दूहा॥ राम रैन पावार भर। अरु सु कन्ह भत्तीज॥
फुनि रघुवंसी राज घर। सब चौकी सजि नींज॥ छं०॥ १०६॥

---

(१) मो०--पतत।

अरिल्ल ॥ सजि चौकी अप सथ्थ सकल मिलि । चढ़त सूर भर न्रप बरज्जि[1] बलि ॥
गुरु सामंत अथनि अप्प गढ़ि । रचे सुच्चारि दुअं चौकी चढ़ि ॥ छं० ॥१०७॥
इक चौकी वर सिंघ राज सज । भर दुअ चढ़े अप्प अप्पन कज ॥
थांन थांन जकि रचे सूर बर । सज्जि सनाह रहे जु हंस नर ॥ छं० ॥ १०८ ॥

शहाबुद्दीन के सरदारों का रात को चौकी देना ।

छंद भुजंगी ॥ चढ़ो साह चौकी सुरत्तांन षांनं । टोई दीन बज्जै निसानं रिसानं ॥
चमक्कै सनाहं उपंमा सु चंडी । मनो चंदनी रैन प्रति व्यंब मंडी॥छं०॥१०९॥
फिरै पंति दंती नकी कंति एमं । मनों कज्जलं कूट कंगार छेमं ॥
फिरै पष्षरी पंति कूदंत बाजी । तिनं देखतें बंदरं द्रोन लाजी ॥ छं० ॥ ११० ॥
लगे पारसी बोल्लनं मेक सथ्थं । मनो प्रब्बतं बंदरं केलि कथ्थं ॥
इकं एक चित्ते दुअं चित्त नांचौ । तिनं पंचियै[2] सार स ध्रंम सांचौ॥छं०॥१११॥
षिझै मुष्ष बोलै सुरत्तान दोही । करै भूमि हुज्जन पुर काल कोही ॥
इसी हैन जोरी सु गोरी नरिंदं । मनों बंटियं पारसं नभ्भ चंदं ॥छं०॥११२ ॥

पृथ्वीराज की सेना की शोभा का वर्णन ।

अरिल्ल ॥ सिलह सज्जि प्रिथिराज महाभर सेन सह ।
मनों प्रप्पन प्रति व्यंब प्रगट्टिय जानि ग्रह ॥
यापर ओपम और विचार लो अष्पियै ।
ज्यों बद्दर में चंद दुरै कछु दिष्पियै ॥ छं० ॥ ११३ ॥
घुरि निसांन घन सद्द स्रवंन न संभरै ।
हय गय साजिय साज हक्कतें उभ्भरै[3] ॥
भेरि भनंकिय भंकिन फेरिय नद्दयं ।
*एक तबे उस दिष्षि दल बल बद्दयं ॥ छं० ॥ ११४ ॥

शहाबुद्दीन के सेना का वर्णन ।

कवित्त ॥ षां रुस्तम तत्तार । षांन चौकी बे लग्गा ॥
षां नूरी हुजाब षां । महमद्द आसि जग्गा ॥

(१) मो०--बरज्जि । (२) मो०--पंचियं ।
(३) मो०--प्रति में 'है गै बाजिय गाज फूकतें उभ्भरै" पाठ है ।
* मो०--प्रति में ए 'हन बे उन दिष्ष' पाठ है ।

केली षां अब्बरी। रोम षोबर षां पन्नी ॥
बर भट्टी मद नंग। स्वामि मंग्यौ सा ऋन्नी ॥
बीरंग बीर बज्जर बिरज। बर चरित्त चिहुं दिसि लगे ॥
सुरतांन कांम अरि भंजनो। सुबर बीर बीरह पगे ॥ छं० ॥ ११५ ॥

सुलतान के सरदारों के क्रम से सजकर खड़े होने का वर्णन।

कवित्त ॥ अगिवांन उजबक्क। धाइ धाअड़ सुरतांनी ॥
ता पाछै साहाब। षांन बंध्यौ तुल सानी ॥
ता पाछै नूरी। हूजाब सेई संचारी ॥
केलीषां कुंजर कुलाह। किन्नी कुट वारी ॥
बानिक्क बिराह दुल्लाह बर। भाई पा भट्टी सु सिर ॥
प्रिथिराज राज आहुट्ठ तें। बर निसान बज्जै दुसर ॥ छं० ॥ ११६ ॥

घड़ी दिन चढ़े सुलतान का सामना करने के लिये पृथ्वीराज का आगे बढ़ना, दोनों सेना का साम्हना होना।

कवित्त ॥ सुलतानां रै मुष्ष। समर उत्तर्यौ नरिंदं ॥
मनों बिझि विहान। मांड म्रजाद समुंदं ॥
दोऊ सेन उत्तरिय। अंम्म अप्प अप्पन उच्चारिय[1] ॥
अरि सम्मुह कारि प्रांन। जुद्ध बर मंडि उक्कारिय ॥
पहु फट्टि निसा पह फट्टि कर। घरिय बज्जि घरियार घन ॥
प्राची सुमंत दिसि वर भिलिय[2]। अमर कित्ति चिंते सुमन ॥ छं० ॥ ११७ ॥

प्रातःकाल के समय दोनों सेनाओं की शोभा का वर्णन।

छंद गीतामालची ॥ नव नवय प्रानय विरह प्रावय[3] संष दिव धुनि बज्जियं।
झलकंत पवनह मधुर गवनह अैसु अस्व हरज्जियं ॥
विकुरंत चंद सुमंत दंदं दिवस ता गम जानयं ॥
पह फट्टि चीरं पगि पीरं तोरि भूषन नायं ॥ छं० ॥ ११८ ॥
नव मिलहिं अलिनी चलै नलिनी सद्द मंद प्रकासयं।

(१) मो०—विच्चारिय।
(२) कृ०—सिलिय। ए०—मिलिय। (३) मो०—पाटय।

नय[1] मुदिय कुमुदिय अचित प्रमुदिय सत्त पत्त सुभासयं ॥
जुग जपत अजयं धरत सजयं चित्त मरन विचारयं।
सामंत सूरय चढ़े नूरय देव तूरय तारयं॥ छं० ॥ ११९ ॥

घरि अट्ठ भानय चढ़ि प्रमानय राज सेनय सज्जियं।
उभ्भारि बीरय बंधि तीरय अप्प अप्पय गज्जियं ॥ छं० ॥ १२० ॥

कवित्त ॥ अट्ठ सूर उग्गंत। ढाल ढुक्की सुरतानिय।
ठांम ठांम मधगंध। सज्जि चल्ले अगवांनिय ॥
धर नर गिर धावत सम्रूह। जूह चतुरंग जगाइय ॥
ढिल्ली वै सुरतान। धुक्कि नीसान बजाइय ॥
जा कथ्थ कथ्थ कविचंद कहि। अख्खर देइ सुणाइयै ॥
तत्तार षांन निसुरत्ति षां। सुबर सेनरि गाइयै[2] ॥ छं० ॥ १२१ ॥

रावल समरसिंह का सब सरदारों से पूछना कि क्या हाल है कौन दृढ़ है और डरता है। सभों का उत्साह पूर्ण वीरता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ प्रात समर रावर नरिंद। साहस गत पुच्छिय ॥
कहै सब्ब सामंत। मत्ति जंपौ मति अच्छिय ॥
कोन वीर को धीर। कोन साहस को कातर ॥
कवन दूत अवधूत। जोग कावंध समातर ॥
बंधनह कोन कौ बंधियै। अरु किन बंधन तन छुट्टयौ ॥
चित्रंगराज राजंग गुर। रहसि मंत बर कुट्टयौ[3] ॥ छं० ॥ १२२ ॥

रावल का कहना कि ऐसे समय में जो प्राण का मोह छोड़कर स्वामी का साथ देता है वही सच्चा बीर है।

इहै बीर अवजोग। प्रांन पति सथ्थ न छुट्टै ॥
चुक्कै न बीर अवसर प्रमांन। जिहि जोग अछुट्टै ॥
इक बंधन बंधियै। छुट्टत तन बंधन अग्गै ॥

(१) मो०—नव।
(२) ह०—को०—क०—रंगाइए।
(३) मो०—छुट्टयौ।

स्वांमि संकरैं छांड़ि। स्वांमि छक्कारनि भग्गै ॥
सोई बीर धीर साहस सुई। सुइ रन बीर सुबीर हुई ॥
चिचंग राव रावल चवै। जल बुडतं रन कीर सोइ ॥ छं० ॥ १२३ ॥

दोनों सेनाओं का उत्साह के साथ बढ़ना।

दूहा ॥ उदित अर्क दिसि पुब्ब पहुं। जगे सेन दोइ जंग ॥
अस्व अप्प बल बद्धए। बल बज्जंगी[1] अंग ॥ छं० ॥ १२४ ॥

पृथ्वीराज का सेना के साथ बढ़ना।

कवित्त ॥ तब प्रथिराज नरिंद। समर उत्तरिय चढ़ाइय ॥
सज्जि सेन चतुरंग। बाम कोर[2] दाब लगाइय ॥
स्यांम सेत धजबंधि। नेत निक्कारि निक्काइय ॥
बंदि बीर बिभ्भत। लुम्मिय लिल्लाट लगाइय ॥
नारद्द दद्द तुंबरै सुचिर। सिव समाधि जग्गाय बसि ॥
अदभुत जुद्ध दोउ दीन कौ। अप्प आन दिष्षै रहसि ॥ छं० ॥ १२५ ॥

सुलतान का रणसज्या से सजकर सवार होना।

दूहा ॥ सुनि ह बत्त सुरतांन चढ़ि। सजि नषसिष अपसिद्ध ॥
अरुभर सकल सनाह कसि। चढ़ि अवधूत सनद्ध ॥ छं० ॥ १२६ ॥

हिन्दुओं के तेज के आगे मीरों का धीर छूटना।

दूहा ॥ जब हिंदू दल जोर हुअ। छुट्टि मीर धर भ्रंम ॥
*असमय आर बषांन चलि। करन उद्दसा क्रंम ॥ छं० ॥ १२७ ॥

एक ओर से पृथ्वीराज और दूसरी ओर से रावल समर सिंह का शत्रुओं पर टूटना।

दूहा ॥ इत राजन उत समर बर। दुअ दल सज्जि असंष ॥
तन तुरंग तिन बर करन। नमिय तेज छय नंष ॥ छं० ॥ १२८ ॥

---

(१) मो०--बज्जंगिय।
(२) मो०--कोटं।
* मो० प्रति में "असमस मय साह करि आलखां प्राक्रंम" पाठ है।

युद्धारम्भ, युद्ध वर्णन, अरब खां का मारा जाना ।

छंद भुजंगी ॥ मिले लोह बथ्थं सु बथ्थं हकारे । मनों बाहनी मत्त मै गंध भारे ॥
दिठी दिठ्ठ दूनं भरं आतुरानं । पलं कूह कज्जै उभै मिध जानं ॥छं०॥१२९॥
जपै इष्ट मंत्रं मुषं राम नामं । कहै मेच्छ दीनं ग्रहै मुठ्ठि वामं ॥
छुटै तीर भारं द्रुमं कै निसानं । मनों भाद्रवं गज्जियं मघ्घवानं ॥ छं० ॥ १३० ॥
वजै भेरि तूरं बजै संष नद्दं । मनों सज्जई बीर अनहद्द रुद्दं ॥
भिरें मेच्छ हिंदू लरै लोह तत्ते । सचै ईस सीसं षहं देव पत्ते ॥ छं० ॥ १३१ ॥
छुए षंड षंडं भरं हो अलग्गं । मनों देव दानैं विहथ्थें बिलग्गं ॥
षिजै लोह आरब्ब बाहै कहरं । हनी फौज चहुआंन गय सूर नूरं ॥छं०॥१३२॥
तवें आइ ठढ्ढौ भरं सिंघ हेनं । ननं आवरे वीर रूपं पथेनं ॥
दिठं दिठ्ठ लग्गी समं षांन षानं । हयंती हयंती मुषं आतुरानं ॥ छं० ॥ १३३ ॥
तुरी छंडि राजं सहे संग पानं । छण सेल सथ्थं प्रछे षान थानं ॥
छुटे सेल संम्हो बचै षग्ग भद्दं । परै टहरी[1] भद्द लग्गै सुघद्दं ॥ छं० ॥ १३४ ॥
भई भीर सिंघं अनुद्धं अपारं । कहै बीर धीरं मुषं मार मारं ॥
रह्यौ आइ अड्डौ पतीधार स्वामं । हयौ षग्ग षानं सु पंमार रामं ॥ छं० ॥ १३५ ॥
ढह्यौ आरबं षांन दो दीन साषी । जिनै दीन के ध्रंम की लाज राषी ॥छं०॥१३६॥

पाँच घड़ी दिन चढ़े वीरता के साथ लड़ कर अरब ख़ां का मारा जाना ।

कवित्त ॥ पंच घटी दिन चढ्यौ । उभरि आरब्ब षांन लरि ॥
हिंदुअ सेन समुद्द । कोह छंड्यौ सुकंक अरि ॥
असि प्रहार चढ़ि धार । मन तुट्यौ तब तुट्टिय ॥
अस्त्र वस्त्र बज्री कपाट । दह्नीवन जुट्टिय ॥
पग पगति जिंभ पग पग मुगति । भुगति भूमि किन्तिय चल्लिय ॥
धनि सेन साह सुरतांन दल । दरिय बीर मुक्ती पुल्लिय ॥ छं० ॥ १३७ ॥

खुमान खां का क्रोध करके लड़ने को आना ।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध । उमड़ि आरब्ब षांन जुरि ॥

(१) मो०—टट्टरं ।

बल घट्यौ पतिसाह । षबरि षुम्मांन षांन सुनि ॥
परि अरिष्ट सु बिहांन । भए सब हथ्थ उतारै ॥
अप्प अप्प मुष छंडि । मंडि करि वार करारै ॥
घरियार सघन समघाइ बजि । लरत लोह भए लस्करिय ॥
दोइ दीन दुंद दारुन दरिय । करैं बर गुन गल्हरिय ॥ छं० ॥ १३८ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद मोतीदाम ॥ सुअंत कमंत बढै रुनदोस । परै घन बत्त सरोसिय रोस ॥
लटै जनु सांड भयानक भंति । करै घन गज्ज घनं बन कंति ॥ छं० ॥ १३९ ॥
बचै असि अंक निसंक नि नारि । उतारत भाजन सूर कुंआर ॥
तकै सिर छंन तकप्पिय घाउ । बचै करि बार मनो बचि बाउ ॥ छं० ॥ १४० ॥
जहां तहां धुक्कन उट्ठत एक । सरफै तरफै रत नच्चिय नेक ॥
*हलमल होत अभार फीर । बहै असमान अनु द्रुय नीर ॥ छं० ॥ १४१ ॥
बहै सर पष्पर निक्करि जात । तकै तन घट्ट करंत निघात ॥
परैं बर बज्र गुरज्ज सिरंन । बहै रिर रत्त कै पब्ब झिरंन ॥ छं० ॥ १४२ ॥
अटभ्भुत आवध बज्जिय मार । ढहै जिमि हच्च सुनद्द किनार ॥
हलंमिल है दल पैदल एक । भयं इम युद्ध घरी भर एक ॥ छंद ॥ १४३ ॥

ग्यारह दिन युद्ध होने पर सुलतान की सेना का निर्बल होना । रावल समरसिंह का तिरछी ओर से शत्रु सेना पर टूटना ।

कवित्त ॥ एकादस दिन जुद्ध । रुबर रुघट[1] पंच घटि ॥
बल घट्टिय पतिसाह । षग्ग परभरिय षांन जुरि ॥
छाइ छाइ आरिष्ट । सकल हिंदून सेन करि ॥
समर सिंघ मुष छंडि । जाइ भंज्यौ तिरछौ परि ॥
घन घाइ बजाइ सु फौज फिरि । लरन लोह कढ्ढै भिरन ॥
दोउ दीन दीन उप्पम बिसल । मद मैगल छुहे लरन ॥ छंद ॥ १४४ ॥

---

* यह पंक्ति मो० प्रति में नहीं है ।
(१) मो०--संपच ।

युद्ध वर्णन।

छंद त्रिभंगी॥ मद मोष कि कुहं दो बर जुहं सकर तुहं आहुहं।
भर भर भू भालं बूथर चालं कर बजि तालं तर तुहं॥
करि कर बर कुंतं सजि बलवंतं गिरि गज दंतं चढ़ि दंतं।
करि घन संमा ं बीर भरानं उप्पम जानं करि नंतं॥ छं०॥ १४५॥
तज्जे सब सस्त्रं बीर सुमित्रं बजि अनुरत्तं उत्तंगे।
उर उर बर घट्टे रुधि रस लुट्टे कवि बल पट्टे रंग रंगे॥
धर धरनि फुरक्कं चलन न दिष्यं अंतर रुष्यं अवरुष्यं॥
बग्गं अघ जानं को किरवानं गिल चिन थानं जत्त भष्यं॥ छं०॥ १४६॥
है वै हिंदवानं नजै न थानं द्रोन समानं गुर पिंडं॥
रितु राज बसंतं दीपनि चिंतं संकुचि जंतं भिन्न षंडं॥
नेजे बर पानं बलि नक्षि ध्यानं मीर धरानं भमि ढुंढं॥
सब सेन समाइं सुरपति काइं को गिग राइं सि चंदं॥ छं०॥ १४७॥

खुरासान खां का घोर युद्ध करना।

कवित्त॥ षां षुरसांन ढचाइ। षांन षुरसांन गजन पति॥
सत्त दून भर समर। समर आहुन्नि मंडि क्षिति॥
सेन नवत भिन नवत। नवत गजराज साज नव॥
ते समस्त नव मंच। यंच तंच नव्वंत सब॥
दिन अदिन हंस इक सध्य उड़ि। रन आहुट्टिय बीर बर॥
दिष्षहि सुजध्य गंध्रव गुननि। जुबर कित्त बित्तो सुभर॥ छं०॥ १४८।

समर सिंह की बीरता का वर्णन।

कवित्त॥ पस्यौ समर षावास। समर जित्तै सुरतानी[1]॥
परि भट्टी मच नंग। सस्त्र बाहै सुत्रिचानी॥
पस्यौ गौर केहरी। रेह अजमेरां रष्षिय[2]॥
स्वामि भ्रम जस रत्त। क्षित्ति भारथ भर भष्षिय॥
रघुबंस पंच पंचौं मिले। बर पंचानन नाम क्रमि॥
चिषंग बीर पंचो परत। चच्यौ भान मध्यान नमि॥ छं०। १४९॥

(१) मो०—षुरसानी। (२) मो०—रष्षिय।

चढ़न भान मध्यांन । बीर गष्षर उग्गरि घर ॥
सुमरि सेन सामंत । चोट मत्तार षांन भर ॥
बज्ज घात आरिष्ट । बीरमा रिष्ट मरिष्हिय ॥
लुथ्यि लुथ्यि आलुहि । लुथ्यि लुथ्थन पर लुहिय ॥
धारंग कुहि अन कुद्दिचै । ढंक बज्जि बज्जी विपल ॥
चरवंत देखि उभ्भै चसव । उघरि सिंभ दिष्षै सुपल ॥ छंद ॥ १५० ॥

बड़े बड़े बीरों का मारा जाना ।

पल उघघरि दिषि सिंभु । ब्रह्म दिष्षौ ब्रह्मासन ॥
प्रकृति पुरुष दिष्षीन । प्रकृति दिष्षौ गुरु षासन ॥
थान थान भ्रम पुच्छि । रंभ पुच्छै पच्छ ग्रच फिरि ॥
भौ अचंभ कविचंद । लोक मंगै सु लोग सुरि ॥
लभ्भी सु मुगति मग करि । जोग मग्ग जिन मुक्कयौ ॥
सामंत सूर मिलि सूर ग्रच । फिरि न तिनन तन चुक्कयौ ॥ छं० ॥ १५१ ॥

गष्षर ख़ां और तांतार ख़ां दोनों का मारा जाना ।

दूहा ॥ उभय सहस गष्षर परिग । थल बिंध्यो सुरतान ॥
समरसिंघ रावर सिमुख । परिग बीर[1] बिय षांन ॥ छं० ॥ १५२ ॥

याकूब ख़ां का घोर युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ पच्यौ षांन आकूब मुष्षं समाई । बजे टोप टंकार के तार साई ॥
कटै कंध कामंध नंचे विभंगं । मनों अग्गि लग्गी समीपं न दंगं ॥ छं० ॥ १५३ ॥
करै बीर भंगं सुभट्टं करं कं । मनो उच्छरै मीन जल मभ्भ पंकं ॥
करे दोच दोची समं षिच कोटं । परे बीर बीरं सुरत्तान जोटं ॥ छं० ॥ १५४ ॥
मथी सेन दूनं भई घोर घोरी । मनों वारिजं पंति दंती झकोरी ॥
बजै घाइ अघघाइ निघघाइ घट्टं । पढ़ै वेद विप्रा वकै ग्यान भट्टं ॥ छं० ॥ १५५ ॥
परै ढाल मालं बिराजै कला की । मनों भीति गौषं भिदै नीर जाकी ॥
जिनैं नीर मुष्षं पगं नीर भख्खै । मनों माधवं मास वे बंक फुल्लै ॥ छं० ॥ १५६ ॥
खिरख्वान कुंतं भरै पेसु कक्की । मनों बीज बट्टी कुलट्टा मनक्की ॥ छं० ॥ १५७ ॥

---

(१) मो०—बीय ।

जब आधी घड़ी दिन रह गया तो निसरत ख़ां और तातार ख़ां ने सेना का भार अपने ऊपर लिया।

दूहा॥ रहिग जाम तन अद्ध घटि। टरिन बीर जुध धार॥
खां निसुरत्ति ततार खां। लयौ सैन सिर भार॥ छं०॥ १५८॥

घोर युद्ध होना, पृथ्वीराज का स्वयं तलवार लेकर टूट पड़ना।

छंद भ्रमरावली॥ जयं जय सद्द सु सद्दिय सूर। जु अच्छरि पुक्क उक्कारत दूर॥
बहा हुहु गंध सुगंध्रव गान[1]। षच्यौ घरि एक उभै रथ भान॥ छं०॥१५९॥
भवं[2] रुंड मुंडय सुगुंथय माल। अमीय उपावहि ढुंढहि व्याल॥
जु षिभ्भै चहुवांन कृपान कसी। सुमनो दुति दोभर सी निकसी॥ छं०॥१६०॥
तुटि पट्टन गौ उपमाहि लह्यौ। सुपह्यौ जनु मेर सुरंग कह्यौ॥
नव जंपि नवै रस बीर नच्यौ। भमरावलि छंद सु छंद रच्यौ॥ छं०॥ १६१॥
नव नंचिय रुंडति मुंड हस्यौ। तिन ठौर विभच्छ भयानक सौ॥
परि लुथ्थिअ लुथ्थि तहां सरसं। सुभयौ रह संकर रुद्र रसं[3]॥ छं०॥ १६२॥
रुधि सों गज राजति दांन झरै। कवि चंद तहां उपमां उचरै॥
छबि भो घन स्याम रत्त परी। मनों विंब बर्त्ते नदि ह्वै उमरी॥ छं०॥ १६३॥
उपमा दुसरी रंग देषि कहै। जमुना जल में सरसत्ति बहै॥
घन अच्छरि अच्छ कटाच्छ करै। रस भेद स्त्रिंगार पनाह हरै॥ छं०॥ १६४॥
तिन आरन गाड़न को न बचै। रनसं[4] रस तीय सु सत्य नचै॥
धरकै धर काइर चित्त वियं। करुना रस केलि कुलान कियं॥ छं०॥ १६५॥
वर बीरन जुद्ध इतौ सँपज्यौ। तिहि ठौर भयानक सौ उपज्यौ॥ छं०॥ १६६॥

रावल की वीरता का वर्णन।

दूहा॥ अति प्राक्रम रावर सुभर। कूरंभ नरसिंघ जग्गि॥
रघुवंसी अति क्रम्म गुर। कथ्य करन कलि लग्गि॥ छं०॥ १६७॥

शाह का प्रबल पराक्रम करना। हिन्दू सेना का घबड़ाना।

गाथा॥ जब मचि रीठ अपारं। किय अति क्रम्म जवनयं साई॥

---

(१) मो०—जान। (२) मो०—भवो।
(३) मो०—हसं। (४) को०—कृ०—रंसर।

भर धर हिंदुश्च भग्गं । कर धरि षग्ग धाय कूदंभं ॥ छं० ॥ १६८ ॥

रावल का क्रोध कर स्वयं सिंह के समान टूट पड़ना ।

कवित्त ॥ जवहि सेन चतुरंग । साहि अरि जंग आइ जुरि ॥
तवहि राज रघुवंस । झुकित वर षग्ग अप्प गहि ॥
हनिय मत्त गजराज । सिंघ कर मध्य सिघ्र[1] वहि ॥
मनो बसत रंगरेज । मह फुथ्यौ सुरंग ढहि ॥
दौरे मसंद किलकार करि । धुज समान साहस धरै ॥
वज्जे वद्दन असिवर सवर । सुकवि चंद कीरति करै ॥ छं० ॥ १६९ ॥

दोनों सेनाओं का लथ्थ पथ्थ होकर घोर युद्ध करना ।

छं० विराज। जुरे हिंदु मीरं वहे षग्ग तीरं। मुषें मार मारं वचे सूर सारं ॥ छं० ॥ १७० ॥
भिरै दूश्र भारं तुटै* षग्ग तारं। अकथ्थं करारं कहे देव पारं ॥ छं० ॥ १७१ ॥
जुटै पंच षानं कग्क्के कमानं। रघुवंस रायं धरै षग्ग धायं॥ छं० ॥ १७२ ॥
नरं सिंघ रूपं जुरै नेरू जूपं। महम्मद षानं रघुवंस रानं ॥ छं० ॥ १७३ ॥
चयौ सेल मीरं पर्थौ मध्ये वीरं। कढी फौज साई वचे कक्कवाई ॥ छं० ॥ १७४ ॥
दुश्रं तीन षानं चयं तीहि यानं। वचै षग्ग भट्टं सुदा हिंम घट्टं ॥ छं० ॥ १७५ ॥
वचै धार धारं करै मार मारं। चलो चल्ल मीरं नयौ नाग पीरं॥ छं० ॥ १७६ ॥
सिरै तुट्टि तारं मिले षांन सारं। अनुज्जं अपारं ……… ॥ छं० ॥ १७७ ॥
ढलावंत घायं मनो वृष्य वायं। गए सूर भेदं बरी अच्छ मेदं ॥ छं० ॥ १७८ ॥
दुश्रं फौज राजं जु साचाव गाजं। रचै दोस सामं करै सामि कामं ॥ छं० ॥ १७९ ॥
करै देव साषी सबै कित्ति भाषी। ………………………… ॥ छं० ॥ १८० ॥

रावल के क्रोध कर लड़ने का वर्णन ।

कवित्त ॥ हूं तत्तो रघुवंस। भीर भंजन चहुआनिय ॥
भयौ दुलह तिन वेर। बरन बरनौं सुरतानिय ॥
बीर मंच उचार। लोच अक्किन उक्कारै ॥
गिलि भक्करि करि गांन। लोन गिद्धनि उच्चारै ॥
पुव्वंत[2] कलस थपि धवल सिर। कलह केलि भावरि फिरहि ॥
मंडप्प पेत मांनिनि सुगल। सल्ल कटाछ सु झुकि करहि ॥ छं० ॥ १८१ ॥

१ मो०—सिंघ ।　　* यह पंक्ति मो०—प्रति में नहीं है ।　　(२) मो०—पूवंत ।

युद्ध की शोभा का वर्णन।

छंद चोटक॥ दोउ दीन सु दुंदुभि घोर भिले[1]। अँग अंग करक्कत[2] अंग पिले॥
सधनाद्द नफेरिय नैंक बजं। सु मनों घट भद्दव मास गजं॥ छं०॥ १८२॥
घन टोप सु रंगिय तेज धुले। जनु पंतिय बग्ग चवेक मिले॥
घन पाइक पंति झनंकत यों। मनों मोर कला करि नाचत यों॥ छं०॥ १८३॥
धुँधुरी दिस दिस्स* सबंग दिसा। दिग्घि पीत सु पत्तिय अद्ध निसा॥
गज बंधि सनैन चमंकति यौं। सुमनो लगि ऊक परव्वत ज्यौं॥ छं०॥ १८४॥
किरवान कढंत कला दुसरी। सुमनों झर चौरिय सी पसरी॥
कटिकंध[3] कमंधन कुट्टि जुरी। मनों बीज कला कुय कूटि परी॥ छं०॥ १८५॥
असवार सु पष्पर कट्टि नवै। सुमनों घर बंटन[4] बंधव है॥
करि फुट्टि बगत्तर रत्त रयो। मनुं जावक मैं जल बंटन ज्यौ॥ छं०॥ १८६॥
असकंत भसुंडन रुंड परी। बढि पावक ज्वाल मनों निकरी॥†
दुहु बीच भसुंडन देव लसी। मनों बाल गनेस ष पूजि हंसी॥ छं०॥ १८७॥†
सिर फूटत भेजिय उड्डि चली। सु मनों दधि मट्ट उपट्टि चली॥
तरफै घन घंटन घट्ट सुधं। सु फिरै जल सुक्कय मीन उधं॥ छं०॥ १८८॥
गज उप्पर ढाल गिरै बर तें। सु गिरैं गिरि केलि मनो जरतें॥
गिरि केलि कमंधन चंत धरे। मनों भेष पिसाचन सांच करे॥ छं०॥ १८९॥
बढ़ि बट्टि घनं घट सीस जरै। जनु बद्दल बद्दल बीज झरै॥
जु सनाचन घाइ सुभै तन मैं। झर होरिका सी प्रगटी घन मैं॥ छं०॥ १९०॥
चवसट्ठियों तारिय दै किलकी। सु नचै जनु गोपिय पेम छकी॥
घन घाव सु बिद्दल[5] यों घुरकैं। मनों बोलि कबूतर है गुरकैं॥ छं०॥ १९१॥
दुतियं उपमा कविता सुर कै। मनो पूर नदी चय ज्यों फुरकै॥
तरवारनि तेज परै तरसी। घन घुम्मघि मध्य मनों झरसी॥ छं०॥ १९२॥
तिन उप्पर पंषिय बंधिय पंति। मनो धन इंद्र धनैंकिय पंति॥
पिलवान चले करि पील गिरै। कलसा मनो देवल के विधरै॥ छं०॥ १९३॥

---

१ मो०—मिले। २ कृ०—परक्कत।
* को०—ए०—प्रति में "दिग्घि जोतिय नीति" पाठ है।
३ कृ०—को०—ए०—कंध। ४ मो०—"बंधव बंटन"।
† ये दोनों पंक्तियां मो०—प्रति में नहीं है। ५ ए०—बद्दिल।

घन छिंछ उपंम करै सुरषे । मनो मेघ प्रवालनि कै वरषे ॥
घन नाइ रची घन घुघघरियं । सु नचै मनों बालक बिझरियं ॥ छं० ॥ १९४ ॥
इक सूरह की उपमा बरनों । हर मध्य गरज्जत सिंघ मनों ॥
सुर तीन हजार सु जोह मिलें । तिन में दस तीन कमंध विलें ॥ छं० ॥ १९५ ॥
दस रावर हैं वर षेत चक्यौ । टुक की टुकरा नव टूक बक्यौ ॥
दोइ हीन रचै इतनै उनमान । मनों नारक प्रात[1] विचंद समान ॥ छं० ॥ १९६ ॥

रावल का शत्रु सेना को इतना काटकर गिराना कि सुलतान और उसके सेनानियों का घबड़ा जाना ।

कवित्त ॥ दसवै बर कटि समर । कोरि गज गाह हथ्य लिय ॥
छिंछ श्रोन सब अंग । पुहप जनु दृष्टि देव किय ॥
किल किंचित रस भयौ । लुथ्थि पर लुथ्थि अरुझिय ॥
सीसं चक्कि .. जुहि । कुहि अरियन फिर जुझिय ॥
बिडुर्यौ देषि सुरतान मन । सेन सब्ब मन बिडुर्यौ ॥
कटि धार कोइ पुज्जै नहीं । बल अभूत आतम कर्यौ ॥ छं० ॥ १९७ ॥

पृथ्वीराज का अपनी कमान संभाल कर शत्रुओं का नाश करना ।

कवित्त ॥ तब पृथिराज नरिंद । साह सन्हौ गज साहिय ॥
पंच बान कम्मान । साहि गोरी झुकि बाहिय ॥
सरकि सेन सब धरकि । पक्कह जंगल भव ठट्ठे ॥
पथ्थ जेम भारथ्थ । कृष्ण सारथ समर[2] गट्ठे ॥
बर करकि करकि कमान कर । पंच तेज कुप्यौ सबल ॥
नट डोरि आनि पइह चढ्यौ । रुधिर कोरि मंडी तिलक[3] ॥ छं० ॥ १९८ ॥

सुलतान का अपनी सेना को ललकारना कि प्राण के लोभ से जिसको भागना हो सो भाग जाओ मैं तो यहीं प्राण दूंगा ।

कुंडलिया ॥ तब जंपै सुरतान चप । जीवन आइ सु जाउ ॥

---

१ ए०–को०–प्रात ।
(२) ए०–मन । (३) मो०–तलक ।

हूं जीवन रन रक्खिहों । सो मति हूवै सुभाउ ॥
सो मति हूवै सुभाउ । नाहि निरधन बल रष्षी ॥
कर तारी घन छांह । तून अग्गै जिम देषी ॥
बीज छटा जिम प्रांन । नट्टु काया मिल ढंपै ॥
ग्रह लोभी ग्रह जाउ । साहि आलम इम जंपै ॥ छं० ॥ १९९ ॥

सब लोगों का सुलतान की बात सुन बड़ाई करना ।

कवित्त ॥ सुबर बीर गज्जनेस । अंग चौरंग बात सुनि ॥
राज रंक पिल्लै विचार । नर नाग देव मुनि ॥
तुम गज्जन वै साह । दाव दिज्जै नहिं दुज्जन ॥
जस अपजस भै मरन । जहु बंधै सज्जन इन ॥
दिसि अदिसि और दुष सुष्ष गति । ए सरीर लग्गा रचै ॥
उच नीच चंपत चक्क गति । पति विपत्ति जिय सब सचै ॥ छं० ॥ २०० ॥

दूहा ॥ का काया मायातिका । का ग्रहनी ग्रह कोंन ॥
अप्पन अंपिय मिच्चतें । जो देषियै सुलोन ॥ छं० ॥ २०१ ॥

सुलतान का तातार ख़ां से कहना कि संसार में सब स्वार्थी हैं मरने पर कोई किसी के काम नहीं आते ।

कवित्त ॥ सुनहि षांन ततार । अप्प स्वारथ सब लग्गे ॥
पसु पंषी बर जिते । तत्त सोइ तत मग्गे ॥
त्रियं बंध सेवक सुमंत । तन पें तन चाहै ॥
सुर नर गनधर और । जग्य जापह अवगाहै ॥
आचेत अवर परवसि परे । भूषन बिन मरदंग कह ॥
जम हथ्थ जीव पंजर परै । पंच सबाकह तुक्क सह ॥ छं० ॥ २०२ ॥

दूहा ॥ जमर काल सो व्याल भ्रम । पंजर तुट्टत तेम ॥
षां ततार अरदास सुनि । सो आलम मति एम ॥ छं० ॥ २०३ ॥

शाह का कहना कि सच्चा सेवक, मित्र, स्त्री वही है जो स्वामी के गाढ़े समय मुंह न मोड़े ।

कवित्त ॥ सो सेवक सुनि स्वामि । स्वामि संकटै छुड़ावै ॥

* सो सु मित्र अप्पनौ । चित्त मित्तें न दुरावै ॥
* सो बंधव अप्पनौ । दसा अवदसा न कथ्यै ॥
सोइ त्रिया अप्पनी । त्रास मुक्कै अंसु सथ्यै ॥
मति सोइ जोइ पग उप्पजै । तत्त सोइ ततह मिलै ॥
श्रम परत भिरत सुरतान सुनि । गज्जन वै गज्जन चलै ॥ छं० ॥ २०४ ॥

सुलतान की सेना का फिर तमक कर लौट पड़ना और लड़ाई करना ।

कवित्त ॥ तमकि तेज गोरी । नरिंद चित डोलै बल[1] साझौ ॥
अधम भ्रत्त बिन श्रब्ब । पुट्ठि गोरी न समाझौ ॥
सुबर बीर सुरतान । सेन चहुआँन ढँढोरिय ॥
पगी जानि पारथ्थ । जेम दरियाव बिलोरिय ॥
पच्छिलो बत्तइ सुरतान दिषि । सिंघ लोक अविकारकयौ ॥
मुरि गयो सेन सुरतान कौ । छच सीस तब नंषयौ ॥ छं० ॥ २०५ ॥

पांच ख़ाँ और पांच ख़वासों का घोर युद्ध मचाना ।

कवित्त ॥ पंच षान सुरतान । पंच षावास सु चक्किय ॥
पासवान सुरतान । पास बाजू दोइ ठड्डिय ॥
रन रुंध्यौ सुरतान । सेन चहुआन ढँढोरिय ॥
मनु पलट्यौ नट भेस । बीर करुना रस सज्जिय ॥
भर भीर तीर कुट्टिय दिषिय । तब सु ओट[2] आलम गष्षिय ॥
ततार षांन षुरसान षां । मंत मंडि सब दिषि कष्षिय ॥ छं० ॥ २०६ ॥

कविता ॥ जब सुषान षावास । भरर लग्गिय भय तप्पन ॥
बष्षिय सार मुष मार । छंडि गोरिय बल अप्पन ॥
लाल डंड सिर छत्त । देषि सुरतान साषि पर ॥
तब दौरे भैर सुभर । चलै चल चल्ल धराधर ॥
बिचल्लिय सुफौज सुरतान लषि । तब कुट्टिय धर धीर सषि ॥
षानह सुपंच षावास भिरि । सिर पर आवध रीठ मषि ॥ छं० ॥ २०७ ॥

---

(१) मो०—मौचलै ।
(२) ए०—कृ०—ओल ।

कवित्त ॥ इन सुवान पावास । उनह सामंत सिंघ भर ॥
रिस रिन मत्ती रीठ । तुट्टि नाइय मसंद घर ॥
गज गडंत उच्चार । कवी राजेंद्र राज गुर ॥
नवह पांन रिस अच्च । कथ्थ बाइंत ईस धर ॥
जै जै सुसद्द जुग्गिनि करषि । कर षप्पर उनमंत मत ॥
दुअ षरै दीन बल स्वांम कें । धुरन चंब चंवान पत ॥ छं० ॥ २०८ ॥

युद्ध का वर्णन ।

छंद रसावला ॥ हिंदु मेछ्छंभरी । ताल वज्जै षरी ॥
घाय घायं घुरी । मत्त छक्के परी ॥ छं० ॥ २०९ ॥
साचि साद्दावरी । षान झुम्भै परी ॥
राज रावत्तरी । कंध कंधे धरी ॥ छं० ॥ २१० ॥
सीस तुट्टे तुरी । उक्क नद्दं करी ॥
ईस सीसं जुरी । नंचि नारद्दरी ॥ छं० ॥ २११ ॥
थेइ थेई भरी । गिद्ध सिद्धं करी ॥
जस्स जंगल्लरी । षांन षावासरी ॥ छं० ॥ २१२ ॥
जंग जुद्धं भरी । भीर राजं परी ॥
मार मारुअरी । हिंदु सामंतरी ॥ छं० ॥ २१३ ॥
षल्ल षल्लं धरी । मन्न टूटं[१] मुरी ॥
फौज पिछ्छी फिरी । राज राजंगरी ॥ छं० ॥ २१४ ॥
भीर कुट्टै धरी । बोलि रावत्तरी ॥
षत्री मीरव्वरी । अस्त्र छंडे परी ॥ छं० ॥ २१५ ॥
घाय घायं सुरी । बढ्ढियं बंबरी ॥
काल दिट्ठं सुरी । मद्द घट्टं करी ॥ छं० ॥ २१६ ॥
दिष्षि राजंतरी । छंडि ईसं चरी ॥
कंक बंकं करी । मीरषांनु नरी ॥ छं० ॥ २१७ ॥
ढाल षानं ढरी । अप्प छोरैं अरी ॥
कढ्ढि कीरं भरी । बाधि टूषां नरी ॥ छं ॥ २१८ ॥

सेस विच्छेदरी । रंभ थंभं ढरी ॥
देषि दाडिम्मरी । पीप सा निद्धुरी ॥ छं० ॥ २१९ ॥
अल्ह सारौ सरी । दूर राजं बरी ॥
देषि लोहं जरी । षग्ग षग्गं भरी ॥ छं० ॥ २२० ॥
जुद्ध भूतं करी । काम सामंतरी ॥
भीर पक्की परी । चढ्ढि हंसे सुरी ॥ छं० ॥ २२१ ॥
भाल भल्लै सुरी । राज किन्नं करी ॥
श्रद्ध षानं गिरी । दूश्र रावल्लरी ॥ छं० ॥ २२२ ॥
श्रौर सब्बं सरी । षांन ढाहे धरी ॥
किन्ति चंदं करी । नाम ले अन्नरी ॥ छं० ॥ २२३ ॥
दीह दस्सं बरी । सेष सेषं परी ॥
संक सुक्कं सुरी । भान थानं परी ॥ छं० ॥ २२४ ॥
भेद चल्ले सुरी । हर सें अंबरी ॥
बिंद ढुंढै फिरी । जैत राजंगिरी ॥ छं ॥ २२५ ॥
किप्ति देवं करी । फौज चल्लै धुरी ॥
चल्ल बिचल्लरी । कुस्स कुस्सं मरी ॥ छं० ॥ २२६ ॥
.... । देव नंषे षरी ॥ २२७ ॥

कन्ह का खुरासान खां को मारना ।

छंद मोतीदाम ॥ पच्यौ जहँ सेन सुरावर सार । मनों मदमत्त कँठीर गुँजार ॥
नयौ सिर नाग सुमंडिय जंग । घुरैं सुर जोरय[1] चंबक संग ॥ छं० ॥२२८॥
बचैं करि वार सु संगिय सूर । परे पर नार असूर पनूर ॥
गह्यौ बर सिद्ध रु सूर समंत । भयौ जनु आंनि कै ईसर अंत ॥छं०॥२२९॥
नचै दय तारिय चौसठि नारि । बरैं बर सूरय देय धमारि ॥
मिले सम कन्ह अनी षुरसान । बकै दुइ ईसह आन समान ॥छं० ॥ २३०॥
दुश्रँ बर धारिय संग गुमांन । हय हिय कन्ह सुषान उरांन ॥
पच्यौ षुरसान सु बंधव नेत । बढी अति देषि प्रथी पति जेत ॥ छं० ॥२३१॥

(१) मो०—जोरतु ।

खुरासान खां के गिरते हिन्दुओं की सेना का फिर तेज़ होना ।

दूहा ॥ परे षेत षुरसान षां । ढहि घन घाय अचेत ॥
फिरि दल हिंदू जोर हुअ । बजि वरनाई षेत ॥ छं० ॥ २३२ ॥

पृथ्वीराज का ललकारना कि सुलतान जाने न पावे इसको पकड़ो । सब सरदारों का टूट पड़ना ।

छंद मोतीदाम॥ मिले बर हिंदु तुरक्क सुमार । कटक्कट बज्जिय लोह करार ॥
उडै बर षग्ग न टूक निनार । मनों कुटि सूर किरन्न प्रचार॥ छं० ॥ २३३
कढै[1] बर कुहि सुबोल उचार । जपै उर राम कहै मुष मार ॥
भिरें भर मीर सु सामंत सुद्ध[2] । कहै कवि कथ्थ सु अंषिन लुद्ध ॥छं०॥ २३४
बहै स्वर[3] संग दोऊन अपार । ढहै बर मंगर सुअंग अगार ॥
चंपे दल साहि जके चहुआंन । गहै सुरतान चले षग पान ॥ छं० ॥ २३५ ।
फुले मनो साइप भ्रम्म सुरत्त । बढौ मन सांहि गहंन सुवत्त ॥
चवै चहुआन अचों बर सूर । करै सबसोर षरग्गय चूरि ॥ छं० ॥ २३६ ॥
तपे गहि राज सु संग विभाग । कुटे धर मीर सु धीरज नाग ॥
चवै मुष मार सुचावंड राइ । दलों सुरतान करों इक घाइ ॥ छं० ॥ २३७॥
सुने बलिभद्रय पीप सु अल्ह । नरां सिर[4] निडुर रघ्घन गल्ह ॥
चंपे चव सामंत धाइ परेस । बहै बर सेल कियौ इक भेस ॥ छं० ॥ २३८ ॥
लगी बर सेल कमद्ध निमास । फुले मधु[5]माधुअ केसु पलास ॥
कटे बर षग्ग कमद्ध निसार । तुटै वर ढेवल अंड अधार ॥ छं० ॥ २३९ ॥
थकी बर सामंत जुद्ध अनुद्ध । परे असि टेकत उट्ठि कमंध ॥
चले बर मालय हड्डि प्रमाल । नचै बर सूर अपच्छर माल ॥ छं० ॥ २४० ॥
कुर्यौ धर धीरज मीर अभंग । बढ़ी बर जैत सु दिष्षिय जंग ॥
फटी बर फौज अनंधिय जाल । अघाइय गिद्ध र सिद्ध सुमाल ॥ छं० ॥ २४१
नचे बर नारद बीर बिसाल । थेई थेइ कहत वै थिरताल ॥

(१) मो०--बहै । (२) मो०--शुद्ध । (३) ए०--कृ०--को०--बर ।
(४) ए०--कृ०--को०--ढहे बर । (५) मो०--मधु माधव ।

रिसै[१] अति ताइ तुनार सुढांन। मिलै मुह जोर हुए मरदान॥ छं० ॥२४२॥
हुए छिय तेज ततार सुतंन। पछौ धर मुच्छि कछौ धनि धंनि॥
करै मुष किक्ति नपै कुसमंन। चलौ वर फौजय साहि सुतंन॥ छं०॥ २४३॥
ढचै वर मीर सु साहिज मंन। ....॥ छं० ॥ २४४॥

घोर युद्ध होना, शाह और पृथ्वीराज का सम्मुख युद्ध।

दूहा॥ अति संकर वर जुद्ध हुअ। इत राजन उत साहि॥
दोऊ नैंन अंकुरि परे। बजि बीरा रस ताहि॥ छं० ॥ २४५॥

शहाबुद्दीन का तलवार से और पृथ्वीराज का कमान से लड़ना।

उअ रुष आइ सुहावदी। इय रुष आइय राज॥
इय कर षोले षग्ग वर। उअ कमान कर साज॥ छं० ॥ २४६॥

दोनों नरेशों का युद्ध वर्णन।

कवित्त॥ जदहि साह आलम्म। झुकि[२] कम्म न अप्पगहि॥
तवहि राज प्रथिराज। तेग पक्करिय अप्प रहि॥
वह बरषत वर तीर। पंचि बरषंत सार ढहि॥
हुचै तेज षग झमहि। करी तुट्टे कमंध वहि॥
आलम्म राज दुअ जुद्ध हुअ। नह दिष्या दानव रु सुर॥
वर दाय चंद इम उच्चरें। करत किक्ति गैनह अमर॥ छं० ॥ २४७॥

घोर युद्ध वर्णन। शाह की सेना का भागना।

छंद त्रिभंगी॥ पढ़ मंदह रत्तनं[३] अट्ठह रत्तनं[४] पुनि वसु चरनं रस रच्चनं।
त्रभंगी छंदं पढ़ सु चंदं गुन वहि दंदं गुन सोई।
अंतै गुर सोहै मधि लघ मोहै सिंह समोहै षय होई।
विज्जु वर षग्गं असि मर लग्गं भिरि भिरि जग्गं रजि रंगं॥ छं०॥ २४८॥
वज्जै रिन तालं मारो मालं षग्ग सु षालं भिरि चालं।
राजा प्रथिराजं असवर भ्रालं सहि सु साजं भिरि भाजं।

(१) मो०–रचै। (२) मो०–झुकित। (३) ए०–कृ०–को०–हरयं।
(४) ए०–कृ०–को०–हरयं।

किरवान हकंतं सजि बलवंतं भिरि भय अंतं कलमंतं ।
षप्पर अधिकारी चौसट्ठि नारी दैदै तारी किलकारी ॥ छं० ॥ २४९ ॥
उक ईसर नहं नचि उन महं रजि रज सहं जुरि जंगं ।
अद्भुत रस अंगं षग्ग उनंगं हार सुभंगं परि रंगं ॥
सामंतं सूरं चढ़ि विस्सूरं बजि रन तूरं असि चूरं ।
तुट्टै धर मीरं साह गुहीरं गजि गंभीरं भिरि बीरं ॥ छं० ॥ २५० ॥
नचि मीर कमंधं हसै नसिद्धं भिरि भिरि जुद्धं षग षद्धं ।
नंषै हय हंसं तेज तरंसं सचित सरंसं करिगंसं ॥
बुल्लिय सुविहानं हिंदुअ रानं कढ्ढि क्रपानं गहि पानं ॥
झारे षग झहं विज्जल कुट्टं वाहि बिकहं नचि नहं ॥ छं० ॥ २५१ ॥
हनि हनि सामंतं जानि जुगंतं भिरि भर जंतं अरि अंतं ।
चव्वर चहुआनं गह गह बानं साहि सुतानं बलपानं ॥
छंडे सिर छत्रं साहि सु तत्रं गोधीरत्रं मनमं ॥
बहरी तजि बाजं रुहि गजराजं लरि षग साजं कह काजं ॥ छं० ॥ २५२ ॥
तत्ते परि राजं साहि सु साजं जै जुग काजं रस साजं ॥
आलम अरु राजं दुअ दे हाजं[1] हनि हनि वाजं भिर वाजं ॥
दिषयी मह्वा राजं तजि गज राजं हैंवर साजं गुर गाजं ॥
गहि कर कंम्मानं तीर सुतानं लगि असमानं बहि वानं ॥ छं० ॥ २५३
चिस झल्लर टोपं राजन धोपं असि वर जोपं बहु कोपं ॥
है हनि सु विहानं कर अप्पानं ग्रहि सुरतानं बलवानं ॥
उड़ि दिसि दिसि भाजं मीर अकाजं पष्षि सहाजं गहि बाजं ॥
भग्गी बर फौजं साहि सु जौजं मन करि मौजं धरि धौजं ॥ छं० ॥ २५४

शाह की सेना का भागना और शाह का पकड़ा जाना ।

दूहा ॥ भगी अनी षुरसान षां । छुट्टि मीर धर भ्रंम ॥
गह्यौ साह आलम कर । विचल्लि सुभर तजि भ्रंम ॥ छं० ॥ २५५ ॥

सुलतान की सेना के भगेड़ का वर्णन ।

छंद भुजंगी ॥ कुसादे कुसादे कहै षानजादे ।

(१) मो०—राजं ।

ग्रह्यौ हथ्य गोरी अबें साथि बादे ॥
भग्यौ चिच कोटी सुरत्तान राद्यौ ।
वजे वे निसानं सजित्यौ सराद्या ॥ छं० ॥ २५६ ॥
गयौ भग्गि कूरंभ मरहट्ठ वाली ।
गयौ सत्त मुक्के न्रपं वे पँचाली ॥
सबें सेन बंधी रहे सेन मुक्के ।
गयौ हब्बसी रोमसा भ्रंम चुक्के ॥ छं० ॥ २५७ ॥
बरा रीत गौरं भगे रुंड मुंडं ।
पद्यो मभ्भक्ष सामंत गोवाल कुंडं ॥
भग्यौ कंनरी हत्त वे हत्त बानं ।
भग्यौ बेदरी बल कढ़ी छंडि पानं ॥ छं० ॥ २५८ ॥
बढ़ं वे कुसाढ़ी पद्यौ कासमीरं ।
मुलत्तान बहू कुद्यौ हथ्य तीरं ॥
भग्यौ प्रब्बती एलुंबी भारषंडी ।
जिनै भुज्ज गोरी ग्रहं लाज मंडी ॥ छं० ॥ २५९ ॥
भग्यौ वै बंगाली करंनाट वाली ।
भग्यो भागि सांद्रोह कूरंभ वानी ॥
पद्यौ भूभिं सा वहरी वह तीनौ ।
जिने ठेलि चहुआन सब सह दीनौ ॥ छं० ॥ २६० ॥
बयं विंद वाली भग्यौ सथ्य सब्बं ।
जिने लोहची लग्गि अंची[1] न कब्बं ॥
मयं मेक बड्डु मयं मक्क राया ।
जितें भागतें बार लागी न काया ॥ छं० ॥ २६१ ॥
भग्यौ ब्रह्म जा पुच अबी कुचीरं ।
जिनें भग्ग तें भग्गि सुरतान धीरं ॥
भग्यौ गज्ज पीरा उसा हत्त नाथं ।
भग्यौ अग्गिवानं सु मानं सु साथं ॥ छं० ॥ २६२ ॥

(१) मो०—अंचन ।

पच्यौ षांन आलूब संसार साषी ।
जिने दीन बंदेन की लाज राषी ॥ छं० ॥ २९३ ॥

रविवार चतुर्दशी को समरसिंह का यह युद्ध जीतना और धन निकालने को चलना ।

कवित्त ॥ गहि लीनौ सुरतान । समर लिन्नौ जसुभारी ॥
चामर छत्र रषत्त । बषत लुट्टे रन रारी[1] ॥
चित्र कोट चव रंग । साहि दिन्नौ चहुआनं ॥
चतुर दसी रवि वार । वीर बज्जे परवानं ॥
बुल्लयौ बीर कैमास तब । धन कढ्ढन चल्लो समुह ॥
आरब्ब राव भीरा सुबर । चंपि सु रष्यौ गंज उह[2] ॥ छं० ॥ २९४ ॥

पृथ्वीराज के सुलतान को पकड़ने पर जय जयकार होना ।

दूहा ॥ परे सेन गोरी गहत्र । गहि लीनौ सुरतान ॥
सोमेसर नंदन सुकर । जै लिन्नौ जय पान ॥ छं० ॥ २९५ ॥

इस विजय पर चारों ओर आनन्द ध्वनि होना ।

कवित्त ॥ गह्यौ साहि आलम्म । सुजस लीनौ चहुआनं ॥
षलक षांन भग्गिय विहाल[3] । परे है गै धर थानं ॥
मीर मसंद मसंद । कटे सामंद हथ्थ भर ॥
दुअ राजन भर जुरे । सुबर लिन्नौ सु अप्पकर ॥
जै जै सबद्द जुग्गिनि करै । सीस गहै ईसन समथ ॥
कवि कहै चंद भारथ्थ बर । करिय राज्य प्रारंभ कथ ॥ छं० ॥ २९६ ॥

राजगुरु का कहना कि अब विजय कर के एक बेर दिल्ली चलिए फिर मुहूर्त बदलकर आइएगा ।

दूहा ॥ करिय जैत राजन सु बर । चलिय लच्छि बर साज ॥
तब बिचार राजंन गुर । कही राज सिरताज ॥ छं० ॥ २९७ ॥
तब रावर बर राज गुर । कहिय राज प्रथिराज ॥

(१) मो०—नारी ।
(२) मो०—बह ।
(३) ए० कृ० को—विहान ।

ढिल्ली दिसि अब चल्लियै । फिरि सु मुहूरत साज ॥ छं० ॥ २६८ ॥

राजा का पूछना कि पीछे लौटने को क्यों कहते हो इसका कारण कहो ।

फिरि राजन इम उच्चरिय । सुनौ अहुट्ठ नरिंद ॥
का कारन पीछै फिरै । सो कारन कहि नंद ॥ छं० ॥ २६९ ॥

उनका उत्तर देना कि इस विजय का उत्सव घर पर चलकर करना चाहिए ।

तबै सिंघ फुनि उच्चरिय । अहो समंतन राज ॥
साह गह्यौ तुम जैत हुअ । अब करि मंगल काज ॥ छं० ॥ २७० ॥

यहां राव दाहिम के साथ सेना चन्द भट्ट और सामंतों को छोड़कर शुभ काम कीजिए ।

रषैं अध्ध सेना सु[illegible]ग । अरु दाहिम्म सुराज ॥
भट्ट चंद सामंत सथ । करि सुभ मंगल काज[1] ॥ छं० ॥ २७१ ॥

वहां से लौट कर तब धन निकालना चाहिए ।

जनन लछि बर किज्जियै । रषौ सुभर अप्पानि ॥
जब रह फिर इरजिंद इत । तब कढ्ढ लछि आनि[2] ॥ छं० ॥ २७२ ॥

पृथ्वीराज का दाहिम का मत मानकर दिल्ली चलना स्वीकार करना ।

गाथा ॥ कहि प्रथिराज नरिंदं । जु कछु कहै सिंघ दाहिमं ॥
सोइ थप्पिय द्रढ मंतं । चलि राजिंद ढिल्लि मग्गेयं[3] ॥ छं० ॥ २७३ ॥

फागुन सुदी तेरस को दिल्ली यात्रा करना ।

ढिल्ली मग्गं सु चलयं । फागुन सुदि त्रयोदसी दिवसं ॥
क्रमे सु दस दिन मग्गं । अवरं रष्षि सब्ब भार तथ्थं ॥ छं० ॥ २७४ ॥

(१) मो०-करि चल दिल्ली साज ।
(२) मो० प्रति में "जब आंऊ दिल्ली सुजे तब कढ्ढ लछियान" ।
(३) ए० कृ० को०-मग्गाए ।

रावल के साथ दाहिम आदि सरदारों और सेना को छोड़कर और कुछ सामंतों और सेना को लेकर दिल्ली यात्रा करना।

दूहा ॥ सकल सथ्य रावर सुभर। अरु दाहिम गुर राज ॥
भट्ट चंद बर दाइ बर। आनि समंत सकाज ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ बड़ सामंत सु काज। अचल पुंडीर मंच गुर ॥
राम रैन पावार। चंद चालुक्कि सेन वर ॥
रष्षि पास न्टप सिंघ। रहै थष्ष लच्छि सुभट्टं ॥
और सकल सम रुथ्य। जुड्ड जस लष्षन सुघट्टं ॥
ता मद्धि राज संबोधि थपि। सु गुर मंच बरदाइ थिर ॥
चढि चले राज दिल्ली दिसा। लै जद्दू पज्जून भर ॥ छं० ॥ २७६ ॥

राव पज्जून, कन्ह आदि राजा के साथ चले।

दूहा ॥ जाम देव पज्जून नर। वल्लि भद्र जैत अरु सिंग ॥
कन्ह काय चहुआन वर। चले राज गुर संग ॥ छं० ॥ २७७ ॥

शत्रु को जीत कर होलिका पूजन के निकट राजा चले।

अरिय जीति ग्रह दिसि चले। आइ निकट हुतास ॥
चलत पंथ राजंन नें। पूजा करनह जास ॥ छं० ॥ २७८ ॥

होलिका की पूजा विधि से करके शाह को लिए घर की ओर चले।

कवित्त ॥ निकट सुदिन हुतास। पूजि इन भंति राज नर ॥
चंदन कुमकुम अगर। नंषि श्रीफल असंष फर ॥
फिरि परदष्षिन राज। मांनि बर विप्र बेद धुर ॥
घुरै नद्द नीसांन। गांन नर नर्क नचैं बर ॥
ज्वालनिय माल तृप्पय न्टपति। अति सुदेव नइवेद जुत ॥
दिन बीच चले जोगिन पुरह। असिय मेछ संग्रहनि भति ॥ छं० ॥ २७९ ॥

कुमार का पैदल आध कोस आगे बढ़कर मिलना।

दूहा ॥ असिय साहि ग्रेहं गवन। आइ मिले सुकुमार ॥
मधुसाह अध कोस पर। छंडि तुरिय पै पारि ॥ छं० ॥ २८० ॥

राजा का कुमार के सवार होने की आज्ञा देना ।

चढन राज बर हुकुम दिय । रेंन सुमंतहु साज ॥
अैंन हुई आनंद करि । अह जित्तम सुभ काज ॥ छं० ॥ २८१ ॥

चैत बदी सप्तमी के महलों में पहुंचे ।

गाथा ॥ ग्रहन जित्त अरि ग्रहियं । चैच बदी सत्तमी दिवसं ॥
गुरुवारं सुभ जोगं । राजा संपत्त धवल मझ्झेनं ॥ छं० ॥ २८२ ॥

महल में सब स्त्रियों ने आकर निछावर किया ।

आये राज सुधामं । गए ग्रह मद्धि साल सुभ तथ्यं ॥
बोल्लि आइ सब वामं । निवछावरं करि गई ग्रेहं ॥ २८३ ॥

स्त्रियां अपने अपने घर गईं । राजा ने विश्राम किया और वे नाना भोग विलास कर सुखी हुए ।

गई ग्रेह ते चीयं । राजन सुख बिस्रमियं तथ्यं ॥
अति मादक उनमादं । करि सुष सेंन रमन रस क्रीडा ॥ छं ॥ २८४ ॥
दूहा ॥ क्रीड़ि वांम न्रप रंग करि । नेह संपूरन काज ॥
दीय बचन रष्यन सुजन । डोली साह सुराज ॥ छं० ॥ २८५ ॥

शहाबुद्दीन की डोली मंगाकर उसे भोजन कराया और आज्ञा दी कि इन्हें सुख से रक्खा जाय ।

डोली साह सहाब की । दोइ रकेब बर सथ्य ॥
सो डोली कज दस असुर । करि हुकंम मर मथ्थ ॥ छं० २८६ ॥
दस आदम साहाब कज । रषि भोजन न्रप पास ॥
सुष सचाब तुम रष्षियै । रहै राज सुभ भास[1] ॥ छं० ॥ २८७ ॥

शाह के पकड़े जाने और दिल्ली पहुंचने का समाचार पाकर उसके अनुचरों का आतुर होना ।

सुनिय बत्त गज्जन पुरह । ग्रहन साह की घत्त ॥
अनुचर आतुर अति भयौ । उर जानी अविगत्त ॥ छं० ॥ २८८ ॥

(१) ए०—कृ०—पास ।

एक बीर ने दौड़ आकर यह समाचार तातार ख़ां को दिया

डर जांनी अविगत्त जब । भजि आयौ भट मज्झि ॥
कथर चक्कि पानीय चढि । कहि ततार अग गुज्झ ॥ छं० २८९ ॥

ततार ख़ां ने खत्री को तुरंत पत्र देकर दिल्ली भेजा कि आप बड़े भारी राजा हैं अब कृपा कर शाह को छोड़ दीजिए ।

गाथा ॥ सुनिय ततार सु तब्बं । रष्यनं तुछ दिल्लीपुर राजं ॥
षिषी आतुर पटयं । बेगं साहि दंड कज्जेनं ॥ छं० ॥ २९० ॥

दूहा ॥ तुम आहु सु चहुआन प्रति । कहु सलाम सब सथ्य ॥
तुम सु बडे हिंदून में । छुटै साहि सुभ बत्त ॥ छं० ॥ २९१ ॥
तब ततार अरदास लिषि । प्रति पठई राजान ॥
तुम छंडौ पतिसाह कौं । तुम सुं बडे चहुआन ॥ छं० ॥ २९२ ॥

खत्री का पांच सौ सवार लेकर दिल्ली की ओर चलना ।

षिषी चलि चहुआन पै । करिके सवन सलाम ॥
पंच सत्त असवार लै । कोस सत्त मुक्काम ॥ छं० ॥ २९३ ॥

खत्री शकुनों का विचार करता, बारह कोस नित्य चलता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ा ।

छंद पद्धरी ॥ धर मग्ग चल्यौ षचीस हिंदु । अति चिंत सुरतान बंद ॥
द्वादसह कोस प्रति चलै मग्ग । निज मंच दृष्ट चित बन सु लग्ग ॥ छं०॥
अपसगुन सगुन चितै विचार । दिषि बाम सिंघ दिष्षो दुवार ॥
उल्लूक सबद दिय गिरह सीस । दाहिन सुपत्त मृग मृगी ईस ॥छं०॥
मृतक रथी सनमुषह आइ । फुनि समुष ग्राम लग्गी स लाइ ॥
अति उभ्भर षिषि आनंद जग्ग । आतुरह चल्यौ दिल्ली समग्ग ॥ छं०॥

खत्री लोरक का दिल्ली के पास पहुंचना ।

॥ तब षिषी लोरक्क । चले दिल्ली पुर मग्गं ॥
पंच सत्त असवार । उर सु चिंता मन भग्गं ॥
बामी देव चवंत । तार उक्कव सिर उप्परि ॥
मृग सब्बह दाहिने । चल्यौ पछु पिंगी मिक्कारि ॥

बंदेव चित्त मन मत्त हुअ । चल्यौ कूच पर कूच धरि ॥
आय निकट दिल्ली सु नट । मन चिंता अंदेस हरि ॥ छं० ॥ २९७ ॥

लोरक खत्री का दिल्ली के फाटक पर एक बाग में ठहरना और वहीं भोजन करना ।

गाथा ॥ मन चिंता अंदेहं । पिषी आइ दिल्ली मझ्झेनं ॥
अवनि सिरह मे क्रमियं । आयं डाक चौकि लोरष्यं ॥ छं० ॥ २९८ ॥
तहां उतरि लोरष्यं । बाग निरष्यि उत्तिमं ठाइं ॥
भोजन करि बहु भंतं । आहारे अन्न तथ्याइं ॥ छं० ॥ २९९ ॥

दो घड़ी दिन रहे दिल्ली में प्रवेश किया ।

दूहा ॥ दोइ घरी दिन पछ्छ रहि । चल्यौ दिली पुर मांहि ॥
अति उज्जल वस्त्रंग वर । प्रावर पिचि उछाह ॥ छं० ॥ ३०० ॥

नगर में घुसते ही फूल की डाली लिए मालिन मिली । यह शुभ शकुन हुआ ।

नैर प्रवेस सगुन्न हुअं । मालनि फूल उछंग ॥
लिय बंदि पिषी सुमन । मुक्कि महुर सुभ नंग ॥ छं० ॥ ३०१ ॥

खत्री का पृथ्वीराज की सभा में पहुंचना ।

चलि पिषी दरबार मग । जहां राज प्रथिराज ॥
अवर सूर सामंत सुभ । बेठे सभा विराज ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

ड्योढ़ी पर से समाचार भिजवाया कि तातार खां का भेजा वकील आया है । राजा ने तुरंत साम्हने लाने की आज्ञा दी । लोरक ने दर्बार में आकर सलाम किया ।

कवित्त ॥ गय पिषी दरबार । दार पालक सम अष्षिय ॥
कूरम केहरि कहौ । साहि उक्कील सुभष्षिय ॥
गय केहरि न्रप निकट । कह्यौ गज्जन पुर दूतं ॥
पठयो षान ततार । साह कंडावन बत्तं ॥
न्रप बोलि कह्यौ हज्जूर तिहि । हका हकी मध्य लिय ॥
सनमुष्ष आइ चहुआन को । सीस नाइ तसलीम किय ॥ ३०३ ॥

सभा में बैठे सामंतों का वर्णन। राजा की आज्ञा से लोरक का सलाम कर के बैठना॥

कवित्त॥ सभा विराजत राज। आइ बैठे सुब्बर भर॥
कन्ह काइ चहुवांन। जैत बलिभद्र सिंह नर॥
जाम देव पज्जून। बड़े सामंत लज्जभर॥
और सकल भर राज। बैठि तहां मद्दल रंग जुरि॥
आए सुनाम लोरक्क तब। मिलि सलाम राजन करिय॥
बैठन्न हुकम राजांन किय। करि सलाम बैठा नरिय॥ छं०॥ ३०४॥

लोरक ने तीन सलाम करके तातार खां की अर्जी राजा को दी।

दूहा॥ तब षित्री प्रथिराज कों। करि सलांम तिय वार॥
लिषि अरदास ततारषां। समपी बीर विचार॥ छं०॥ ३०५॥

मद्धु शाह प्रधान को पत्र दिया कि पढ़ो।

मधू साह परधांन कर। दिय पत्ती पचीस॥
किय हुकम्म बर राज नें। बंचे साह जगीस[1]॥ छं०॥ ३०६॥

तत्तार खां की अर्जी में शहाबुद्दीन के छोड़े जाने की प्रार्थना।

साटक॥ स्वस्ति श्री राजंग राजन बरं धम्मोधि धर्मं गुरं॥
इंद्रप्रस्त सु इंद्र इंद्र समयं राजं गुरं वर्तते॥
अरदासं तत्तार षांन लिषियं सुरतांन मोच्चं करं॥
तुम बड्डु बड्डाइ राजन सुरं राजाधिपो राजनं॥ छं०॥ ३०७॥

राजा ने अर्जी सुनकर हँस दिया और खत्री को विदा किया।

दूहा॥ तब षित्री अरदास किय। बंचि सुनाइव[2] राज॥
तब राजंन प्रसन्न हुअ। दई सीष यह काज॥ छं०॥ ३०८॥
उठि राजन दीने बहुरि। यह षित्री गय अप्प॥
मन चिंता लग्गी घनी। राजन देषत तप्प॥ छं०॥ ३०९॥

(१) ए०-कृ०-को०-गुहीर। (२) मो०-कृ०-को०-ए०-बर।

दूसरे दिन लोरक फिर दर्बार में आया।

बहुरि सु आव दिन अवर। मिलि राजन किय बत्त॥
संमुष राजन उच्चरिय। मन सु अमोचर तत्त॥ छं०॥ ३१०॥

लोरक का पृथ्वीराज की बड़ाई करके शाह को छोड़ने की प्रार्थना करना। पृथ्वीराज का पूछना कि गोरी नाम क्यों पड़ा?

छंद पद्धरी॥ पचीस बेंन सम अष्षि राज। चहुवांन वंस तुम हिंदुलाज॥
चौतीर स्वांमि कै संभरेस। चालुक्क राज जिहि षग्ग षेस॥ छं०॥ ३११॥
कमधज्ज संगि तिहि व्याहि अप्प। जैचंद उरहि[1] दिय अनुज सप्प[2]॥
कइ बार साहि बंधयौ पांन। दीनो केवार जिहि जीव दांन॥ छं०॥ ३१२॥
तब लोरक सम[3] पुछै नरेस। गोरी सु नांम किहि विधि कहेस॥
सम राज अष्षि पुच्छी निवार। न्रप राज एह अदभुत विचार॥ छं०॥ ३१३॥

लोरक का इतिहास कहना कि असुरों के राज्य पर शाह जलालुद्दीन बैठा, वह बड़ा कामी था। पांच सौ दस उसके हरम थीं पर संतान न हुआ, तब शाह निज़ाम की टहल करने लगा।

कवित्त॥ बैठि पाट असुरांन। साह जल्लाल प्रमानं॥
अनंत तेज षग ताप। अनंत दातार दिवानं॥
पंच सत्त दस हरम। साह कामी तप भारी॥
हमल हरम निज जांनि। *हनै कर असि बर नारी॥
सुत ताप राज डरनें गवन। कांम षैर निसि साह मन॥
सुरतांन षैर अग्गें धरिग। सेष निजांम सु हुअ प्रसन॥ छं०॥ ३१४॥

शेख़ निजामुद्दीन ने प्रसन्न होकर आशिर्वाद दिया कि तुम्हें

(१) को०-कृ०-ए०-सुधार। (२) कृ०-ए०-साथ।
(३) मो०-समह।
* मो०-प्रति में "हनै कर बर कर नारी" पाठ है।

ऐसा प्रतापी बेटा होगा कि चारों ओर असुरों का राज्य फैलावेगा और हिन्दुओं को जीत दिल्ली पर तपैगा।

प्रसंन निजाम सुसेष[1]। लेष साईं इमलेषं ॥
अहो साह जल्लाल। आखि तुझ समथ सदष्षं ॥
मग्ग प्रबल तप तीन। दीन हिंदू दल[2] आलम ॥
धरि करिहै निज पांन। जोर जुग्गिनि पुर जालम ॥
अज्जाव नारि तिहि पाप तें। असुध कित्ति दुनियां रचै ॥
दस दिसा दप्प असुरांन दल। तिहि लिल्लाट तिलौ लचै ॥ छं० ॥ ३१५

शाह घर आया। चित्त में चिन्ता हुई कि जो यह लड़का प्रतापी होगा तो मुझे मार कर राज्य लेगा। इतने ही में बेगम को गर्भ रहने का समाचार मिला। शाह ने सिर ठोका और उस बेगम को निकाल दिया। पांच वर्ष बीते शाह मर गया, वजीर लोग सोच में पड़े किसे गद्दी पर बैठावें। एक शेख़ ने गोर में रहने वाले एक सुन्दर बालक को दिखलाया।

छंद चित्रअष्षरी ॥ आयो निज सुरतानह गेहं। बेन निजाम उवर दुष लेहं ॥
जौ मुझ सुत ह्वैहै बल कारी। तौ मुझ मारि लेइ धर सारी ॥ छं० ॥
तितें नारि इक ग्रभह धरयौ। दासी कांन साह अनुसरयौ ॥
ततषिन साह सीस हनि नारी। समह गरभ धर मंड[3] सुधारी ॥ छं० ॥
बरष पंच अनि ऊपर बीतं। हुअं साह सुरतान सुअंतं ॥
सबै षांन मिलि मंच विचारं। कवन सीस अब छत्र सुधारं ॥ छं० ॥
सेष एक मधि गोर निवासी। तिहि अद्भुत रस दिष्षि प्रकासी ॥
अष्षिय आइ जहां मिलि षानं। कुदरति[4] कथा एक परमानं ॥ छं० ॥
झूठी होइ तौ सजा लहीजै। सची हूवै निवाजस कीजै ॥
सबै षांन मिलि पूछै बत्तं। कहिवे सेष सु क्या कुदरत्तं ॥ छं० ३२० ॥

[१] मो०—प्रसनि कानि हंसेष।
[२] ए०—कृ०—को०—बलि।
[३] मो०—मंडह।
[४] ए०—कृ०—को०—कुद्दरति।

बीबी फतेसाह की घरनी । कुदरति गोर मद्धि एक धरनी ॥
गोरि मद्धि एक बेलक बासं । देव सरूप कोटि रवि भासं ॥ छं० ॥२२१॥
सबै षांन मधि गोर दिषाए । करि अंगुरी तिहि सेष दिषाए ॥ छं० ॥२२२॥

उस बालक का प्रताप सूर्य के समान चमकता दिखाई दिया ।

दूहा ॥ गोरि दिखाई षांन तिहि । ततषिन भंजी पाज ॥
निकस्यौ सूरति सरस कै । जोति भांन महराज ॥ छं० ॥ २२३ ॥

ज्योतिषी को बुलाकर जन्मपत्र बनवाया उसने कहा कि यह जलालुद्दीन से भी बढ़कर प्रतापी होगा । इस की जाति गोरी है । यह हिन्दुस्तान पर राज्य करेगा ।

कवित्त ॥ जोति रूप महराज । साहतें प्रगट सवायौ ॥
षांना षांन जिहान । वेगि निज्जूमि बुलायौ ॥
लिषिय जनम तिय लेष । सेष तत षिन इम अष्यो ॥
नाम साह साहाब । जाति गोरी तिहि दष्यौ ॥
बहुतेज तपत तप जग्गि है । धरा हिंद सम लग्गि है ॥
दस दिसा साह दौरो फिरै । घन बीरा रस भुग्गि है ॥ छं० ॥ २२४ ॥

लोरक ने शाह की पूर्व कथा इस प्रकार कह सुनाई ।

दूहा ॥ जातें बहु दिन भग्गि है । फुनि तिहि गहि है पांनि ॥
पुब्ब कथा षिची कहै । सुनहु राज चहुआंन ॥ छं० ॥ २२५ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि शाह के पास एक महा बलवान शृङ्गारहार नाम का हाथी है उसको शाह बहुत चाहता है । उसको और तीस हजार उत्तम घोड़े दो तो शाह छूटे ।

कवित्त ॥ तब सुराज प्रथिराज । कहै षिची सुनि बत्तं ॥
हम आलम गति कहै । सोइ मानै करि सत्तं ॥
गज सु एक सिंघली । नाम स्रंगारहार गज ॥
अति पीव साह साहाब । लषै निसि दिन आलम सुज ॥

अप्पौ सु मोहि वर डंड करि। तीस सहस हय नेक बल ॥
छुट्टै जु साहि साहाब तब। हम तुम रहै सु प्रेम भल ॥ छं० ॥ ३२६ ॥

खत्री ने कहा कि जो आप मांगेंगे वही दूंगा पर शाह छूटना चाहिए।

दूहा ॥ तब षित्री हम उच्चरै। सुनौ राज प्रथुराज ॥
जो मंगो सो देउ तुम। छुटै साहि बर आज ॥ छं० ॥ ३२७ ॥

पत्र लिखकर दूत को दिया कि जो इक़रार हुआ है वह भेजो।

थप्पि वत्त इह पत्र लिषि। दियौ दूत के हथ्थ ॥
जो कछु कियौ करार कर। सो पठवो तुम अथ्थ ॥ छं० ॥ ३२८ ॥

पत्र पाते तातार खां ने हाथी घोड़े भेज दिए जो दस दिन में रात दिन चलकर पहुंचे।

तब ततार षां मुक्कि दिय। रजत हयग्गय संग ॥
अहि निस आतुर आइचर। उभय सु दस दिन संग ॥ छं० ॥ ३२९ ॥

दण्ड पाने पर सुलतान को छोड़ देना।

कवित्त ॥ दिय सु दंड सुरतांन। गय सु इक्कति पंचह हय ॥
ईराकी वर उंच। उभय पष्पैं सु निरम्मय ॥
नाम पट्ट स्रृंगार। षह रिति मद्द पट्ट भर ॥
अलि गुंजत मकरंद। वास भज्जंत अवर डर ॥
है सहस तीस अनि साज भल। दिय सु दंड सुरतान तय ॥
मुक्यौ सु राज प्रथिराज तब। चल्यौ साह गज्जन पुरय ॥ छं० ॥ ३३० ॥

सुलतान का ग़ज़नी पहुंचकर अपने उमराओं से मिलना।

दूहा ॥ चल्यौ मेच्छ गज्जन पुरय। दै सुदंड प्रति दिथ्थ ॥
मिलिय उम्मरा अप्पने। करिय मैर सम सथ्थ ॥ छं० ॥ ३३१ ॥

शाह के महल में आने पर तातार खां खुरासान खां का बड़ा आनन्द मनाना।

गयौ साहि आलम महल। करी मैर बर अप्प ॥
मिलि ततार षुरसांन षां। बड़ वधाए मिलि तप्प ॥ छं० ॥ ३३२ ॥

पृथ्वीराज का शृङ्गारहार को सामने रखना। हाथी की बड़ाई और राजा की सवारी की शोभा का वर्णन।

कवित्त ॥ बंध सु पट्ट स्रंगार। मत्त गज राज पटा भार ॥
रचै नरिंद मुष अग्ग। रास रेसंम फंद पर ॥
जब राजन चढ़ि चलै। तबहि मुष अग्ग निरष्षै ॥
जे अनंत गज प्रबल। ते सु प्रंमल सब षष्षै ॥
जब चढ़ै राज टामंक करि। तब अजब्ब सोभा लहै ॥
आतस चरित्त अद्भुत लिषि। दुभ कपोल बूंदन बहै ॥ छं० ॥ ३३३ ॥

हाथी के रूप और गुणों का वर्णन।

कवित्त ॥ सत्त हथ्थ उरद्द। हथ्थ नव देह लँबाइय ॥
दस हथ्थां परिमांन। पीठ कत्ती गिर दाइय ॥
भद्र जात उतपंन दुरद्द बद पाट स्रंगारं ॥
जो रावर कहि चंद। कोट गढ़ ढाहन वारं ॥
च्यालीस कोस चालंत मग। लियें लोह च्यालीस मन ॥
दिन प्रति गुलाल थानं करज। संभारें डारंत घन* ॥ छं० ॥ ३३४ ॥

सब सामंतों को साथ ले एक दिन शिकार के लिये राजा का जाना। वहां कन्ह चौहान का आना।

एक सुदिन राजन्न। चढ़िव सिक्कार प्रपत्ते ॥
और सकल सामंत। जाइ सथ पच्छ मिलंते ॥
सत्त सहस असवार। मिले मुष राज सुरत्ते ॥
जांम देव पज्जून। भान मरदन मरदत्ते ॥
सिंघह पवार सुभ सथ्थ तहँ। जैत राव बलिभद्र सम ॥
चहुआन,कन्ह नर नाह वर। आतुर चरि आयेव अम ॥ छं० ॥ ३३५ ॥

गाथा ॥ चरि कार सकल सिकारं। कीने सब राजनं राजं ॥
अवर'सूर सामंतं। चरियं साज अप्प सा काजं ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

एक अनुचर का आकर एक सूअर के निकलने का समाचार देना।

* छन्द ३३४ मो० प्रति में नहीं है।

दूहा ॥ तब प्रथिराज नारिंद प्रति । कही सु अनुचर एक ॥
सुभ बराह एकल्ल प्रबल । कही षबरि सु बिबेक ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

राजा का आज्ञा देना कि उसे रोको भागने न पावै ।

तब प्रथिराज सु उच्चरिय । अरे सिकारी साज ॥
मति एकल्ल बन जाइ भजि । करि रोकन को साज ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

चारों ओर से नाका रोक कर सूअर को खदेरना और उसके निकलने पर राजा का तीर मारना ।

कवित्त ॥ एक दिसा कूकरह । एक दिसि म्लल्लह धारिय ॥
एक दिसा षेदा अनंत । एक दिसि और प्रचारिय ॥
एक दिसा राजंग । एक दिसि अनि अनुचारिय ॥
एक दिसा सामंत । एक बहु भांतिय तारिय ॥
यौं ब्यौंत सब्ब राजन करिय । धक्कि सोर उच्चारि भर ॥
निकसंत सु सूकर अप्प रह । हने तीर पंचे सु कर ॥ छं० ॥ ३३९ ॥

सूअर का मरना सरदारों का राजा की बड़ाई करना ।

दूहा ॥ लग्यौ बांन बाराह उर । पर्यौ षेत धर मुच्छि ॥
मिले सकल्ल सामंत तब । कही सबन धन[1] अच्छि ॥ छं० ॥ ३४० ॥

बड़े आनन्द से राजा राज को लौटता था कि एक पारधी ने एक शेर निकलने का समाचार दिया ।

घन अनँद राजन भरिय । चल्यौ राज चढ़ि बाज ॥
तब सु एक पारधि कही । नाहर घात सु राज ॥ छं० ॥ ३४१ ॥

राजा का आज्ञा देना कि बिना इसको मारे तो न चलैंगे ।

तब सुराज से मुष्ष कहि । सुनौ सबै प्रति सूर ॥
बिन सुघान अग्यार में । आन राज हूँद नूर ॥ छं० ॥ ३४२ ॥

एक नदी के किनारे वृषभ को मारकर सिंह खाता था राजा ने पारधी को आज्ञा दी कि तुम उसको हांको ।

(१) मो०--परिकर ।

कवित्त ॥ नदि सु एक जल किंदु। तहं सु एकह सुभ कोहर
बहु तर वर जल छीन। थान सोभंत मनोहर ॥
ता नीचे केहरी। हनिव इक हषभ अहारै ॥
अति अरिष्ट आभून। कोइन पग अग संचारै ॥
उच्चरै राज दिल्ली धनिय। पारद्धी हक्कौ तुमैं ॥
वड़ सुभट आंन सोमेस की। बिन अग्या घातन रमै ॥ छं० ॥ २४३ ॥

राजा का शृङ्गारहार गज पर चढ़कर सिंह को मारने चलना और सिंह को हंकारने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ तब सु राज प्रथिराज। पाट श्रृंगार मंगि गज ॥
बग पष्षर[1] तन रज्जि। दंति कहारि बंधि सज ॥
उभय पष्ष असवार। गिरद रष्षे करि राजन ॥
तीरंदाज अभूत। मूल रष्षे करि ताजन ॥
सें मुष्ष राज यों उच्चरे। हक्कारौ केहरि सकल ॥
सो वचन सुनत करि कूह भर। गज्ज सु केहरि अप्य बल ॥ छं० ॥ २४४ ॥

कोलाहल सुन सिंह का क्रोधकर निकलना। राजा का तीर मारना और तीर का पार हो जाना। कूरम्भ का बढ़ कर तलवार से दो टूक कर डालना। सब का प्रशंसा करना।

निसांनी ॥ सुने गहव्वह केहरी उट्ठो हक्कारे।
कंपि धरद्धर मेदिनी गल्हन गल्हारे ॥
कोहक काल अभूत कैं पचायन भारे।
गात सु दीरघ हथ्थ गुर जीहा जक झारे[2] ॥ छं० ॥ २४५ ॥
नष तिष्षा गिर वज्ज कै पुंछन तिष्षारे।
कंध सु जड्डा केहरी नैनों ज्यों तारे ॥
दिष्षौं मरद महाबली कंधा उप्पारे।
गज्जत गज्जत आइया अरियन कों थारे ॥ छं० ॥ २४६ ॥

(१) ए. कृ. को.—घत। (२) मो.—जीहा झक झारे।

सिंघ सु सम्हा षग्निया मनराज संभारे ।
नव राजन गज चंपिया डिंबर उट टारे ॥
तीर सनंमुष नंषिया कोइ लग्गै न्यारे ।
नेरां आयां जैत राव सिंगनि उभ्भारे ॥ छं० ॥ ३४७ ॥
छोड़े मोह सु षग्निया नाहर ललकारे ।
पारधि एकें चंपिया षघ्घल पक्कारे ॥
राज कमान सु षंचि कर तरीन निष्पारे ।
फूटि हुवा सूवार पार गज्जन जिभ्भारे ॥ छं० ॥ ३४८ ॥
करिषै तत्ता कूरंभ भुक्या असि भारे ।
बाहे बब्बर वीषल्लै है टूक निनारे ॥
मनों सवन विच सुभ्भि थावषि तंतू धारे ।
भल भल सब सेना कहै कूरंभ करारे ॥ छं० ॥ ३४९ ॥
धनि माता अरु धनि पिता पज्जून पचारे ॥ छं० ॥ ३५० ॥

राजा के शिकार करने पर बाजे बजने लगे ।

दूहा ॥ घन सिकार राजन करिय । हनि बराह अनि घट्ट ॥
बाजे बज्जन सुबर[1] बजि । करि राजन पहु पट्ट ॥ छं० ॥ ३५१ ॥

सब सरदारों में शिकार बँटवा दिया ।

हनि सिकार बाराह बर । दीए सब सामंत ॥
बंटि सु दीनौ अवर भर । करि उच्छाह अनंत ॥ छं० ॥ ३५२ ॥

राजा का दिल्ली लौटना, कवि चन्द का आकर फूलों की वर्षा करना ।

कवित्त ॥ तब प्रथिराज नरिंद । आइ दिल्ली पुर मझ्झं ॥
अप्प चिंत बर अवर । बैठि सिंघासन रज्जं ॥
अवर सूर सामंत । सकल सभ्भा भर मंडे ॥
तब सु चंद बरदाइ । आइ कुसुमावलि छंडे ॥
बैठे सु सबनि उच्चार करि । सुनिय गान गायन सकल ॥
दिल्लीय नैर दिल्लीय पति । करि अनंद दंडे सुवल ॥ छं० । ३५३ ॥

(१) मो०-सुरस ।

राजा का गुरु से धन निकालने चलने का मुहूर्त पूछना।

दूहा ॥ एक सुदिन देवंग सों। बोलिय राज नरिंद ॥
देउ मुहूरत दुज सु गुर। निधि चम करैं अनंद ॥ छं० ॥ २५४ ॥

राजगुरु का बैसाख सुदी तीज को मुहूर्त निकालना।

तब दुजराज सु उच्चरिय। सुनि सामंत सु नाथ ॥
सेत चतिय बैसाख दिन। सुभ दिन चल्लौ समाथ ॥ छं० ॥ २५५ ॥
सुभ सँजोग अंतर घरी। कथ्थन बचन देवग्गि ॥
सोइ सुदिन आनंद करि। चल्लौ सुराज गुनग्गि ॥ छं० ॥ २५६ ॥

पृथ्वीराज का मुहूर्त पर धूमधाम से यात्रा करना।

कवित्त ॥ चढिय राज सुभ जोग। करि सुमंगल अनंद गुर[1] ॥
दै सु विप्र धन चंड। दीन अनि दान लोक कर ॥
बढि सामंत ह सूर। करै उच्छव उमत्त पर ॥
बजन नद्द नीशांन। चवै जै जया देव नर ॥
सेनच सु सथ्थ है पंच सय। नैर निकरि बाहिर चले ॥
मत्तह सुक्क कुसाल घट। भरि बाहन मैं मन मिले ॥ छं० ॥ २५७ ॥

एक वेश्या का शृङ्गार किए मिलना। राजा का शुभ शकुन मानना।

दूहा ॥ नैरनाइका एक चलि। तन आधन अलंकि ॥
देखि निपति रथ सिर मिले। दुअ आनंद असंकि ॥ छं० ॥ २५८ ॥

रात दिन कूच करते हुए राजा का चलना।

गज राजन द्वादस रहे। सुभ सँयेग सुभ साथ ॥
करिग कूक उनिम प्रचर। पडि लसकर प्रथि माथ ॥ छं० ॥ २५९ ॥
कूच कूच राजन चले। सथ सामंत अभंग ॥
पंच सत्त असवार संग। पडि मिलि सावँत संग ॥ छं० ॥ २६० ॥

रावल और सामंतों तथा सेना का आगे बढ़कर राजा से मिलना।

(१) मो-–वर।

दीह निसा चहुआंन चलि । आइ अचानक राज ॥
तब जानी जब दिष्षि न्रप । मिलि सब सेन समाज ॥ छं० ॥ ३६१ ॥

सब सरदारों और रावल के मिलने से बड़ी प्रसन्नता का होना

कवित्त ॥ मिले सुभर अप्पान । जांनि आतुर चलि राजं ॥
चालुकि रा पुंडीर । अचल चौहान सु साजं ॥
राम रैंन पावार । सु गुर गुरराज समाजं ॥
अवर सुभर सामंत । बहुत परिकर सम राजं ॥
इत्तने आइ सब बैठि मिलि । तब जानी जब दिष्षि न्रप ॥
सुनि बेंनि षबरि आतुर तुरत । मन प्रमोद आनंद वप ॥ छं० ॥ ३६२

गाथा ॥ आतुर चलि[1] राजानं । मिलियं सेना सु अप्प भर मग्गं ॥
हुअ आनंद अपारं । मिलियं सिंघ राज सामंतं ॥ छं० ॥ ३६३ ॥

रावल से मिलकर राजा का प्रेम पूर्वक शिकार और शाह के दण्ड का समाचार कहना ।

कवित्त ॥ मिले राज बर सिंघ । प्रेम पूरन राजन भर ॥
घरी दोइ बैठे सुतथ । बत्त सिकार कहिय गुर ॥
अरु सु दंड पतिसाह । छत्य कारन कहि राजन ॥
सुनि दाहिम्मरु चंद । सुभट[2] सब कही सभा जन ॥
चल राज सिंघ प्रति सब कही । अरु कट्ठन लच्छी गहिय ॥
आयौ सु राज थह अप्पनै । एक निसा राजन रहिय ॥ छं० ॥ ३६४ ॥

शाह के पकड़ने और दण्ड देकर छोड़ने आदि का सविस्तार समाचार कहने पर बड़ा आनन्द उत्साह होना ।

कवित्त ॥ बजि नरिंद जय पत्त । बीय बज्जा घन बज्जै ॥
माइप घर गजराज । राज दरबारन गज्जै ॥
चामर छत्र रषत्त । तषत लीनौ सुरतानी ॥
उत्तर वै साहाब । गयौ मुलतानह पानी ॥
छंडयौ छत्र सुरतांन सिर । राज छत्र सिर मंडयौ ॥
बाजंत नद्द नीसान घन । बंधि साह दँडि छंडयौ ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

(१) ए० कृ० को०—चरि । (२) ए०—सुनि ।

गाथा ॥ जित्ते बज्जान वज्जं। सज्जे सेन सब सुभहायं ॥
सुड्डे षेत सु सूरं।। उप्पारियं कोक सुभहायं ॥ छं० ॥ ३६६ ॥

राजा का गुरु से लक्ष्मी निकालने के विषय में अरिष्टों का प्रश्न करना।

कवित्त ॥ बर बंध्यौ सुरतान। लच्छि कठ्ठन क्रम दिन्ना ॥
भई षब्बरि कै मास। राज अग्गै होय लिन्ना ॥
सत्त मंत जोतिगी[1]। सब्ब जोतिग उच्चारै ॥
द्रिष्टि राह ग्रह दुष्ट। मंच जंचह बर टारै[2] ॥
पुच्छयौ बीर चहुआंन तब। धन अरिष्ट गुन संभवै ॥
लच्छिन्न लच्छि अरु बंधि विधि। तब बहि मंतन सुन्नवै ॥ छं० ॥ ३६७ ॥

धन निकालने के विषय में राजा ने कैमास को बुलाकर परामर्श किया। कैमास ने कहा कि मैं चौहानों की पूर्व कथा सब जानता हूं, आप को देवी का बर है यह निश्चय जानिए। इस धन के निकालने के समय देव प्रगट होगा, उससे लोग डर कर भागेंगे।

कवित्त ॥ धन कठ्ठन चहुआंन। बोलि कैमासह पुच्छिय ॥
बहु अदभुत जस सुन्यौ। आइ कठ्ठन बर लच्छिय ॥
पुव्व कथा चहुआंन। हों जु आगम सब जानो ॥
देवी सुर बरदाई। कहों सु उर अंतर आनो ॥
अदभुत वत्त धन निक्करत। दोइ बीर दानव जगे ॥
सो सूर धीर धीरज्ज जिय। छंडिय सत्त काइर भगे ॥ छं० ॥ ३६८ ॥

पृथ्वीराज शिकार खेलते खट्टू बन में चले वहां एक पत्थर का शिलालेख कैमास को दिखलाई दिया।

दूहा ॥ सो षट्टू रहै थांन बर। द्रव्य अजै जै राज ॥
ता देषन चहुआन फिरि। गौ आषेट बिराज ॥ छं० ॥ ३६९ ॥

(१) मो०--जोतिषी। (२) मो०--बर वारै।

उस शिलालेख को देखकर सब प्रसन्न हुए और आशा बँधी।

अति आदर आखेट न्रप। पति पुर पहू पास॥
पावन एक पयाल में। संपेष्यो कैमास॥ छं०॥ ३७०॥

कवित्त॥ संपेष्यो कैमास। आस बंधी मन संनी॥
ज्यों बाल चंद निसि करक। मकर दिन मास बसंती॥
यों उद्दिम न्रप सेव। सेव न्रप सेव सुमंती॥
ज्यों कन कर्षक लगि अंक। सुबर बर बीर अमंती॥
बच क्रम्म क्रोध अम्मर अरस। सुमन बास ज्यों वायवर॥
लछिनह लछि अह बंचि विच। कुबेर कीर नत्तह सुनर॥ छं०॥

कैमास उस बीजक को पढ़ने लगा।

दूहा॥ मंत्री न्रप सामंत सम। परी सु पाहन पास॥
रास थंभ जनु ग्वाल लिखि। लगि बंचन कैमास॥ छं०॥ ३७२॥
ऊरध अंगुल सठ विसठ। तीर कहन चवसट्ठि॥
तथां अक्कर लिष्यौ सु इम। सरमै द्रव्य अनिट्ठ॥ छं०॥ ३७३॥
भरि प्रसंक अंगुल भरिग। निय अंगुल सत[1] अंक॥
अंगुल अंगुल अंक में। एकादसी प्रसंक॥ छं०॥ ३७४॥
भवतव्यह जो दुज लषै। घरी दीह पल मास॥
हृदय क्रोध ज्यों द्रिग लषै। त्यों लष्यौ कैमास॥ छं०॥ ३७५॥

उसे पढ़कर उसी के प्रमाण से नाप कर खोदवाना आरम्भ किया।

बंचि उचारि सुमंत निधि। सरमय[2] मध्यिय बांह॥
मंडि सु अंगुल विगुलह। द्रव्य निरत्तिय ताह॥ छं०॥ ३७६॥

दुष्ट ग्रह और अरिष्ट दूर करने के लिये रावल समरसिंह पूजा करने लगे।

ग्रह सु दुष्ट दूरी करन। धन अरिष्ट न्रप जोर॥
सोइ पूजा क्रन चित्र पति। तिन पर बज्जन घोर॥ छं०॥ ३७७॥

(१) मो०—सत। (२) मो०—सर्मे।

चन्द यह पहिले ही कह चुका था कि व्यास जगजोति कह गए हैं कि पृथ्वीराज सब अरिष्टों को दूर करके नागौर बन के धन को पावेंगे।

पहिलै अष्षिय चंद बर। कहिय व्यास जग जोति ॥
बीर सघन नागौर धन। * सुभ अरिष्ट प्रथु होत ॥ छं० ॥ ३७८ ॥

राजा ने रावल से कहा कि अरिष्ट दूर करने के लिये पूजा करनी चाहिए, रावल ने उत्तर दिया मैं पहिले ही से पूजा कर रहा हूं।

कवित्त ॥ पुछि राजा गुर सिंघ। सु गुरु देवग्गि सत्ति पति ॥
धन अरिष्ट गुन होइ। तास मेटन्न रचौ मति ॥
होइ सुभ काज सु राज। सुजस संग्रहौ सक्क भति ॥
सुर सुकाज सुद्धरै। अप्प उद्धरन कज्ज गति ॥
बुल्लिय सु राज सम चित्त पति। तुम कारन पुज्जौ सुग्रह ॥
अरिष्ट सु गुन दूरी करन। या मंगल कज्जै सुग्रह ॥ छं० ॥ ३७९ ॥

तब चन्द को बुलाया, उसने कहा कि आप लक्ष्मी निकालिए, जो ध्रुव हो चुका है उसे मिटाने वाला कौन है।

गाथा ॥ बुल्लिय भट्ट सु चंदं। हो राजन लछि कढ्ढिज्जै ॥
ज्यों बंध्यौ निरमांन। मेटन कवन सोइ बिधि पत्रं ॥ छं० ॥ ३८० ॥

रात को सब सामंतों को रखकर रखवाली करो।

दूहा ॥ थांन निरष्षिय राज बदि। अछिर द्रव्य सु अछ ॥
सुबर सूर सामंत मिलि। निसि सथ रष्षा अछ ॥ छं० ॥ ३८१ ॥

कुछ सरदार साथ रहे कुछ सोए। सवेरे वह स्थान खोदा गया, वहां एक पुरुष की मूर्त्ति निकली उस पर कुछ अक्षर खुदे थे, उनको कैमास ने पढ़ा।

कवित्त ॥ सथ्थ तथ्थ निसि रष्षि। दीन बासन ग्रह थानह ॥
अवर सब्ब सामंत। कीन पारस विश्रामह ॥

* मो०—प्रति में "लभहिं अरिष्टं होत" पाठ है।

रैनि मध्य विन चंद। जगे सामंत स्वामि तँह॥
नीद सयन हुअ सुध्य। धनिय सम द्रव्य राज यह॥
षोदंत पुरष इक्काह प्रगट। मिलह षत्त सत्तह सुमय॥
नहि सकय अंक लिष्यौ सुपर। बंचि राज कैमास तय॥ छं०॥ ३८२॥

उस पर लिखा था कि हे सूर सामंत सब सुनो जो मुझे देखकर तुम न हँसो तो पाखान को देखो (?)

दूहा॥ सुनो सूर सामंत सब। सु हृदय सकल रजान॥
जो न हसै मुहि बबर[1] कोइ। तौ दिष्यौ पाषान॥ छं०॥ ३८३॥

सब लोग कैमास की बड़ाई करने लगे।

न्याय नाम कैमास तुअ। दुज दीनौ सुबाइ॥
ज्यों बेली फल भारतें। न्याइन मैं सुभाइ॥ छं०॥ ३८४॥

शुभ मुहूर्त आतेही कमान की मूठ में ताली थी वह देखी (?)

भयौ समय इमरत्तरी। ज्यों वय संधि सुबाल॥
मध्य मुष्टि कंमांन की। रही रत्ति तिन ताल॥ छं०॥ ३८५॥

उसे शस्त्र से तोड़ते ही एक बड़ा भारी सर्प दिखलाई पड़ा जिसे देख सब भागे।

तब दिष्यो षह थान तिन। सस्त्र अनी छिति भंजि॥
अप सु दिष्यो षब सुबल। रहे दूरि सब भज्जि॥ छं०॥ ३८६॥

विक्रम संवत ग्यारह सौ अड़तीस को सोमेश्वर के बेटे पृथ्वीरज ने असंख्य धन पाया।

साक सुविक्कम इक्क दह। तीसह अट्ठ संपत्त॥
चहुआनां न्रप सोम सुअ। लभ्भि वित्त अनमित्त॥ छं०॥ ३८७॥

चन्द ने मन्त्र से कीलकर सर्प को पकड़ लिया तब धन देखने लगे।

(१) ए० कृ० को०—सकल।

षप्प मंच बंध्यौ सु कवि। द्रव्य निरष्यौ जाइ॥
चिहूं दिसा जौ देखियै। दिष्ट न आवै ठाइ॥ छं०॥ १८८॥

कवित्त॥ दिष्यौ जीयउ प्रमान। मध्य राजा रघुवंसिय॥
वाचन सोसन पुत्त। तात अग्यान न गंसिय॥
दुष्ट देह दिन मान। राज अग्या सुन मानै॥
सोक अग्गि तन दभ्भ। गयौ सुरलोक निधानै॥
रचि मंच जंच पुत्तलि करिय। होम दिष्ट दानव जलिय॥
चिंतै सु चित्त कविचंद तहं। करयि बात इह षम भलिय॥ १८९॥

चन्द की बात मानकर धन निकालने के लिये स्वयं राजा वहां आए।

गाथा॥ सुष वरदाइय वत्तं। कहन लछि भयं कमयं॥
मुक्क अंतर भर सेनं। आए लछि ठाइयं राजं॥ छं०॥ १९०॥

राजा ने आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काटकर धन निकालो।

दूहा॥ थच्च आय बर राज धर। दिय हुकम्म सिल कढि॥
हुअ हुकम्म राजंन कौ। कढै सिला सिर कढि॥ छं०॥ १९१॥

शिला काटकर भूमि खोदने की आज्ञा दी कि इतने में पृथ्वी कांपने लगी।

कढि सीस सिल कढ्ढि करि। दियौ बचन षोदाय॥
तव सु कंपि भुअ धर धरिय। धांक सुनी न्रप कान॥ छं०॥ १९२॥

शस्त्र की नोक से तीस अंगुल मोटा, बारह अंगुल ऊँचा खोदा तब ख़ज़ाने का मुंह खुल गया।

कवित्त॥ सस्त्र अनी. छिति षनी। सेन सुत्तौ चावद्दिसि॥
सपत धात पाषान। तीस अंगुल दल बल कसि॥
द्वादस अंगुल उंच। मिट्ठ करि ग्रीवह[१] लाइव॥
उघरि मुष्ष धर द्रव्य। कही कवि चंद न आइय॥

(१) ए. कृ. को.—ग्रावह।

सिव तरति सलंतल धम्म रुचि । द्रव्य परष्षिय मध्य ग्रसि ॥
सामंत सूर इम उच्चरै । भयौ बीर कैमास लसि ॥ छं० ॥ ३९३ ॥

बारह हाथ खोदने पर एक भयानक देव निकला ।

सुनिय बत्त चहुआन । भयौ आचिज्ज सव्वघन ॥
भूमि किज्जि संजुत्त । ग्रहे आवै अभंग धन ॥
पुर सु तिष्ष धर मध्य । क्रोध जाजुल्य नैन रत ॥
मुर लंगर विच बंधि । ग्रीव[1] लीनो उकंग तन ॥
षोद्यो भूमि द्वादस सु हथ । हंकि बीर दानव गजिय ॥
कवि चंद दंद मन मद्दि बँध्यौ । चित्त चिंत अंह्लाद लगिय ॥ छं० ॥ ३९४ ॥

उस राक्षस ने निकल कर तरह तरह की माया करके लड़ना आरम्भ किया ।

छंद भुजंगप्रयात ॥ प्रकारे सुचारे भुजंगं प्रयातं । षगप्पत्ति गायं अषप्पत्ति गातं ॥
स्वयं वीर दानव्व हक्यो हकारं । बरं बंध रक्षी परक्के प्रहारं ॥ छं० ॥ ३९५ ॥
बरं व्योम ग्रब्बं षई पत्ति संक्यौ । करे कोटि माया निसा पत्ति हंक्यौ ॥
पयं पाइ उट्ठै मषा रोम[2] झुम्मी । मनों चक्र फेरै कुलालं स भुम्मी ॥
छं० ॥ ३९६ ॥

षिनं रत्त दीसै षिनं मत्त माया । षिनं रत्त पीतं षिनं स्याम छाया ॥
षिनं मेघ रूपं षिनं अग्गि सीसं । षिनं कोटि रूपं षिनं एक दीसं ॥
छं० ॥ ३९७ ॥

षिनं बाल वृद्धं षिनं वै किसोरं । भयं भीम भीतं षिनं दिव्य गौरं ॥
षिनं मोह माया षिनं दुट्ठ बज्जै । षिनं मोहनी मोह रूपंति सज्जै ॥
छं० ॥ ३९८ ॥

षिनं मै बिडाली षिनं बिप्र माया । षिनं मेक रूपं षगं षथ्य धाया ॥
षयं ग्रीव रूपं षिनं मझ्झ दीसै । षिनं गज्जियं सिंघ आरत्त रीसै ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

(१) ए· कृ· को·—ग्राव । (२) मो·—रोम ।

जब बहुत उपद्रव मचाया तब चन्द ने देवी की स्तुति की कि मा अब सहाय हो कि लक्ष्मी निकले।

कवित्त ॥ तोरि बीर संकर समुद्द। छंडि गजराज थांन गय ॥
भयौ समुद्द अरिष्ट। ढुंढि लभ्भी न मत्ति हय ॥
सत्त मत्त छुट्टयौ। रुप्प अप्पन संभारै ॥
भो अचिज्ज सामंत। व्यास बचनं न बिचारै ॥
कविचंद मंच आरंभ बर। उमा उमा कहि बंचयौ ॥
अप्पियै बचन सुचि मात हुव। तुम्ह काली कलजचयौ ॥ छं० ॥ ४०० ॥

दूहा ॥ करि अस्तुति कविचंद बर। अहो मात बरदान ॥
इह माया मैं बहु तन। कढ़ै लच्छि तुम पान ॥ छं० ॥ ४०१ ॥

देवी की स्तुति।

छंद बिराज ॥ सुनो देवि बानी। चढ़ी सिंघ रानी ॥
मयं मत्त माया। तुंही तूं उपाया ॥ छं० ॥ ४०२ ॥
अरी जुद्ध भष्यं। प्रकत्ती पुरष्यं ॥
निराधार बंधी। निसंधे निसंधी ॥ छं० ॥ ४०३ ॥
चिहूं चक्र षंडी। हूकं पाइ मंडी ॥
जपौं तोहि तोही। जगचक्र मोही ॥ छं० ॥ ४०४ ॥
निसा पत्त मारै। दया बज्ज तारै ॥
तूही मंच मंची। तनं जा पचिषी ॥ छं० ॥ ४०५ ॥
तुही आसमानं। तुही भूमि थानं ॥
तुही बाग बानीं। कला निद्धि रानी ॥ छं० ॥ ४०६ ॥
कवी चंद चंदं। करै दूरि दंदं ॥
कलं अग्ग धारै। प्रनेता उचारै ॥ छं० ॥ ४०७ ॥
निसा बीर बढ्यौ। हुवां आइ ठढ्यौ ॥ छं० ॥ ४०८ ॥

देवी ने प्रसन्न होकर दानव को मारने का बरदान दिया।

दूहा ॥ मात प्रसंनन गुन गहिर। दियौ हुंकि हुंकार ॥
दियौ बर सु दानव मलन। क्रियौ देव जयकार ॥ छं० ॥ ४०९ ॥

बर पाकर पृथ्वीराज ने राक्षस को ललकारा और घोर युद्ध हुआ। दानव मारा गया।

कवित्त ॥ तब प्रथि राज नरिंद। बीर दानव चक्कारिय ॥
सबद द्रुग्ग संभर्यौ। पच्छ दीनौ हुंकारिय ॥
दिषत सथ्थ सब तथ्थ। कथ्थ कोइ बैन न मंडै ॥
भीत सीत भय अंग[1]। रंग[2] रस रोस सु चंडै ॥
अरु नाइ प्रान सम ग्रेह तिह। कज्जल कूट समान सुइ ॥
मन चिंत चंद प्रारथ्थनह। जबै देवि डर आन उइ ॥ छं० ॥ ४१० ॥
बल उत्तंग सुमेर। रुक्कि संकिन मग मुक्किन ॥
छिनक मंत नियं संत। तेज आहुटि बल तक्किन ॥
सबर बीर कविचंद। मष दुरगा तब पक्यौ ॥
करी नषनि कर जोर। जाइ अग्गै भयौ ठक्यौ ॥
अस्तुति अनेक उच्चार मुष। चरन चंपि द्रढ कर गहिय ॥
धन जोग कथा पूछी सुहित। उचित चंद अप्पन कहिय ॥ छं० ॥४११॥

चन्द ने स्तुति करके इस राक्षस और धन की पूर्व कथा पूछी

दूहा ॥ करि अस्तुति द्रढ चरन गहि। पूछी भट्ट विगत्ति ॥
जु कछु आदि पुच्छै सहित। कहत सु बीर बिमत्ति ॥ छं० ॥ ४१२ ॥

देवी ने कहा कि जी लगाकर तू इसकी पूर्व कथा सुन।

कहै बीर कविचंद तुम्ह। पूब कथा कहुं मंडि ॥
जिन लच्छी धर मुक्कियै। धर रष्यै धन छंडि ॥ छं० ॥ ४१३ ॥

सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है।

जुग सु आदि हुअ मंत्र गुर। त्रेता जुग हुअ सत्त ॥
द्वापर जुग पूजा प्रसिध। कलि जुग बीर रत्त ॥ छं० ॥ ४१४ ॥

रघुवंश में आनन्द नामक एक राजा हुआ है उसकी कथा कहती हूं।

(१) ए० कृ० को०-अंग। (२) मो०-रार।

गाथा ॥ हुअ आनंद सु बीरं। बुझिय सु प्रसंन चोइ कल बानी ॥
सुनि उतपत्ति सु कव्वी। कहि अब रघुबंस आदि संकेतं ॥ छं० ॥ ४१५ ॥

वह राजा बड़ा अन्यायी था धर्म विरुद्ध काम करता था।

कवित्त ॥ *तिहि तजिय सु रघुबंस। पुच मारंत इह विज्जि ॥
चिन कीनो चरचित्त। मरन अंग आगम लषिज्ज ॥
जो बरजै बहु बार। ध्रंम मानै न भयंकर ॥
होक अग्गि तिन दभिक्ष। प्रान छंडो रनियंकर[1] ॥
† सत बरस राज तय अंत करि। किप्ति ध्रंम संगह यइय ॥
आध्रंम किप्ति ज्यों मंडनह। सो उब्बरि बीरनि रचिय ॥ छं० ॥ ४१६ ॥

यज्ञ विध्वंस करता था ऐसे बुरे कर्मों को देख ऋषियों ने शाप दिया कि जा तू राक्षस हो जा।

कवित्त ॥ तिहि वाहन बल सूर। धरम रष्यो रघुबंसी ॥
वेद ध्रंम उथ्थापि। काल कंटक बल कंसी ॥
सज्जि तेज जाजुल्य। जग्य विध्वंसिय सव्वल ॥
कमल समह अरिष्ट। जीति दगपाल ध्रंम पल ॥
मारग्ग हत्ति उथ्थापि करि। द्विव सराप सब रिष्षि मिलि ॥
जा वीर दांन दानव सु बरि। अमर सिंघ बल जीति हलि ॥ छं० ॥ ४१७ ॥

उसका शरीर भस्म हो गया और वह दैत्य होकर यहां रहने लगा।

मिलि अयास आयास। आप मिलि आप अछुट्टिय ॥
मिलि समीर संमीर। धरा धर धार आछुट्टिय ॥
तेज जोति चहु पीर। सुबर मंगल फिरि आइय ॥
विहि अध्रंम जरि तास। मांहि सो कछु न समाइय ॥

---

* मो०—"तिहि तजिय डर रघुबंस पुत्र चारव पुच्छ खिज।" (१) मो०—अंकर।

† मो० प्रति में इन दो पदों के स्थान में तीन पद दिए हैं जिसमें से अंतिम पद तो चारों प्रतियों में समान है किन्तु मो० प्रति में दोनों में एक का सारांश मिलता है यथा—मो०—"सत्त वरस राजा ने सयल राजंत अंत कर, सब सौरव्य गिह अरि अंत करि किप्त धर्म संग्रह गहिय।

आकास मध्य ता मध्यनें। फटिक बीर है चीर हुअ॥
ते बीर बहुत दानव अतुल। भये काल थानय रष्य॥ छं०॥ ४१८॥

इसको बहुत काल बीता, इसके पीछे रामचन्द्र हुए, काल पुराना हो गया पर यह लक्ष्मी पुरानी न हुई।

बहु बित्त बर काव। चंद बरदाइ थान भ्रम॥
को जीवन देष्यो न। मरत देष्यौ न न जे भ्रम॥
मान मभ्भ अम निका। राम तामस करि नष्यौ॥
इक चहै अंगनै। कौन कुचै को रुष्यौ॥
जीरन सु जगा संसार भौ। लच्छि न जीरन भइय इह॥
आयंत जात धंधौ सकल। ग्यानवंत जानहि सु इह॥ छं०॥ ४१९॥

तब पृथ्वीराज और चन्द ने प्रार्थना की कि अब धन निकालने में दैत्य दुःख न दे।

दूहा॥ तब प्रथिराज नरिंद बर। अरु सुमंचि कविचंद॥
इष्ट बत्त बर संमुचै। ज्यो दानव करै न दंद॥ छं०॥ ४२०॥

इष्ट मंत्र का साधन करते यज्ञ करते हुए खोदकर लक्ष्मी निकालना आरम्भ किया।

छंद चोटक॥ कढ़ि लच्छिदिसंक्रम दीन ब्रपं। निज मंच बलं कल तच जपं॥
भुज भान सुरं भज भान दिसं। बर इष्टय चंद कविंद कसं॥
॥ छं०॥ ४२१॥

सब देव क्रमं क्रम दीन ऋपं। जय जग्यह जाप करंत तपं॥
घन गंध सुगंधन की चलितं। चलि सीत न तप्प सुभं महतं॥
॥ छं०॥ ४२२॥

घन सार मृगम्मद होम जरैं। तिन उप्पर भौरन भौंर परैं॥
उड़ि धूम चिहूं दिसि छाय घनं। करि मंच सुदेव बलिं बलनं॥
॥ छं०॥ ४२३॥

देव ने चन्द से कहा मेरे पिता रघुवंशी धर्माधिराज थे मैं उनका बेटा आनन्दचन्द बड़ा अन्यायी हुआ मैं ने अन्याय से संसार को जीता, इस लिये शाप से मैं दैत्य हुआ और मेरा नाम बीर पड़ा।

कवित्त ॥ न्टप पूजी रघुवंस। नाम धुम्माधिराज सुत्र ॥
त्रिय बाहन न्टप सूर। पुत्र आनंद चंद दुत्र ॥
सब जित्ते द्रगपाल। मान लिन्नौ अधुंम कलि ॥
राज नीति सब मुक्कि। कंत बंध्यौ अकंम कलि ॥
अदभूत मरन क्रिन भंग गति। चित वित्त क्रम अनुसरिय ॥
तप भंग[1] गच्छता जांनि नह। तम बीर दानव धरिय ॥ छं० ॥ ४२४ ॥

बीर ने कहा कि इस लक्ष्मी को मैंने ही यहां रक्खा था।
दैवगति से इसीको लेकर मेरी यह गति हुई।

दूहा ॥ कहै बीर सुनि चंद तुत्र। अप्प कथा कहौं गंडि ॥
जा मुक्की लच्छी धरनि। सो रष्यों उर संडि ॥ छं० ॥ ४२५ ॥
हों रष्यों इन भंति करि। अहो चंद बरदाइ ॥
रघुबंसी अति मोह मय। अवगति कोइ सुभाइ ॥ छं० ॥ ४२६ ॥
माया काया पुत्र री। कोधवंत हम बीर ॥
रहै छंडि हैं लच्छि यह। न्रम्मित तुम इह धीर ॥ छं० ॥ ४२७ ॥

बीर का अपने पिता रघुवंश राज की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ क्रोध लोभ जानी न। मोह माया न अलंकृत ॥
मोह गीत अरु सीत। जग्गि जा जापय सुक्कृत ॥
बहु बिबेक बिमांन। राज विस्तरचि नीति बहु ॥
नव निदर्त धुनि वेद। कर्म छेदन अभेद लहि ॥
सो बहि सांइ सेसब सुतप। जोवन बै विष अलप मन ॥
रघुवंस इह आवस्त चिय। जोग मग्ग सो छंडि[2] तन ॥ छं० ॥ ४२८ ॥

चारों युगों के धर्म का वर्णन।

श्लोक ॥ सत जुगे वंधयो देवो। त्रेतायां सोम जाधयो[3] ॥
द्वापरे वाहनो सूरो। कलिजुगे बीर भीषम ॥ छं० ॥ ४२९ ॥
सतजुगे ब्रह्मपुत्रश्च। त्रेतायां बीर भक्षय[4] ॥
द्वापरे विचि वंशश्च। कलिजुगे सूद्र ग्रहनिका ॥ छं० ॥ ४३० ॥

---

(१) मो०-भग्ग। (२) मो०-छंडि।
(३) मो०-जोधयो। (४) मो०-भक्षिय।

बीर का अपने बल का वर्णन करके अपने साम्हने धन निकालने को कहना ।

कवित्त ॥ हम सु भयंकर बन्न । भट्ट सुभटन हंकारहि ॥
हम प्रचंड प्रब्बत्त । कनिष्ट अंगुलि उप्पारहि ॥
सत्तों समुद प्रमान । सु तन छिन गिरि दिष्पहि ॥
सुनि न होइ देखी न । तोइ ब्रह्मंड सु लष्यहि ॥
दैवान दुसंकह दुष्ट गति । देव जोग को गहुवै ॥
आतम्म मनुच्छन जीव बल । मो देषत धन कहुवै ॥ छं० ॥ ४३१ ॥

चन्द ने कहा कि हे बीर तुम सब समर्थ हो तुम्हारे कहने से अब राजा धन निकालेंगे ।

अरिल्ल ॥ *बुल्लै चंद सुनो बर बीरं तुम त्रिकाल दरसी अति धीरं ॥
तुम अनंत बल रूप सरूपं । कढ्ढै धन तुम बचन सु भूपं ॥ छं० ॥ ४३२

गाथा ॥ कहै बीर चंदं बर बंदं । हो देवाधि देव बलवंनं ॥
तुम देषत गत पापं । होइ प्रसंन देहु बर बचनं ॥ छं० ॥ ४३३ ॥

चन्द की सुन्दर बानी सुनकर वीर ने प्रसन्न होकर धन निकालने की अज्ञा दी ।

दूहा ॥ सुर बानी सुन भट्ट की । मन प्रमोद बरबीर ॥
दई बाच कढ्ढौ सु धन । प्रसन देव करि धीर ॥ छं० ४३४ ॥

बीर की बात सुनकर चन्द ने राजा से कहा कि होम आदि शुभ कर्म कराओ और आनन्द से धन निकालो ।

अरिल्ल ॥ बीर बचंनति चंद प्रकासिय । कहै राज गुरजन प्रति भासिय ॥
करो होम देवान मंत्र जप । सब प्रसंन हुअ लहैं धन्न न्टप ॥ छं० ॥ ४३५

चन्द का बीर से पूछना कि हमारे राजा तुम्हारी प्रसन्नता के लिये जो कहो वही करें ।

कवित्त ॥ तुम समान कोइ आन । पान पन दान मान मन ॥
कथन श्रवन रस राग । दैव परंग अंग नन ॥

---

* मो०—प्रति में "बुल्लै धम चन्द सुनो बर बीरं" पाठ है और धन शब्द यहां विशेष है

राजस तामस सत्त। मत्त जोगिंद विराजहि॥
जीह एक गुन कोटि। रत्ति सो बोलन लाजहि॥
महदेव[1] सेव तुम चरन रत। पति पवित्र मन मोह धरि॥
छिंड्यौ सु बीर उत्तर दिसा। इह पसाव चहुआन करि॥ छं० ॥ ४३६॥

वीर का कहना कि मेरी प्रसन्नता के लिये पंडित से जप कराओ और महिष का बलि देकर धन निकालो।

॥ कहै बीर कविचंद सौं। हों सु प्रसन्नौ तोहि॥
तीन लोक में जुगति बसि। सुभझन नाहीं मोहि॥ छं० ॥ ४३७॥
पंडित बोलि रु जप करौ। होम दाम अह मान॥
महिष मोहि पूजा करौ। तौ कढ्ढौ पाषान॥ छं० ४३८॥

दानव यह कहकर स्वर्ग गया। चन्द का राजा से कहना कि शाह को तो तुम बांध चुके अब रावल के साथ धन निकालो।

कवित्त॥ सुरग गयौ दानव्व। बत्त बल महिष उचारिय॥
मंत्र तंत्र बंधयौ। बलन अप्पन सम्हारिय॥
बर गज्जनी नरिंद। बंधि छंड्यौ चहुवानं॥
धन कढ्ढन[2] तिन थांन। बज्जि निर्घोष निसानं॥
आनंद मंत्रि कैमास बल। लिष्षिय घरी बल पुच्छियर॥
जै जया सिंह आवृह पति। मिलि विभ्रुत कढ्ढौ सुभर॥ छं० ॥ ४३९॥

राजा ने रावल को बुलाकर ज्योतिषी पंडित को बुलाय, पंडित ने होम की सामिग्री मँगाकर वेदी आदि बनवाकर शुभ अनुष्ठान का प्रारम्भ किया।

चोटक॥ तव बुल्लिय राजन राज गुरं। सु मनो गुर राजत देव दुरं।
बुलि बेद सु पंडित जोतिगयं। जिन बुद्धि सु ब्रह्मय सुद्ध नयं॥
छं० ॥ ४४०॥

(१) मो०— सहदेव। (२) मो०—कढ्ढव।

तिन मंगिय होम प्रकार सयं। रचि जग्ग अकार प्रकार मयं॥
मिटई[1] जिह दोष[1] सु होइ जयं। ... ... छं०॥ ४४१॥
कढ़ि लच्छि दिसा काम देवि त्रपं। कवि चंद अनंदिय मंच जपं॥
विधि भांन सुरंभिन भांन दिसं। सब देव क्रमं क्रम होइ रसे॥ छं०॥४४२॥
जय जग्य रु जाप करै बलिता। घन गंध सुगंधन की चलिता॥
सु रची रचनीय सबै अवनी; धज छत्तन बेदिय मंडि फनी॥ छं०॥ ४४३॥
झरि चंदन पाटक पाट करी। अनुराग सु कुंकम होन जरी॥
नव रत्त कन्चा कन सान कुटे। मनुं द्वादस भान इसां प्रगटे॥
छं०॥ ४४४॥
धुनि सुनिय बेदन होत रुषं। प्रगट्यौ कमलानन तास मुषं॥
छं०॥ ४४५॥

छः प्रधानों को पास रखकर राजा ने पत्थर खोदकर हटवाया।

कवित्त॥ कढ्ढि बीर पाषान। राज षट रष्षि प्रधानं॥
चंद भट्ट गुरुराम। कन्ह रष्षिग चहुआनं॥
रष्षे अत्ता ताइ। ईस लद्धौ बर भारी॥
दैव बत्त संजोग। भोग लद्धौ रन रारी॥
रष्षिजे भीम रघुबंस बल। अरु रष्षै पुंडीर सह॥
अनबत्त अग्य लै स्यांम को। पंच दीह तिन थान रहि[1]॥ छं०॥ ४४६॥

वह स्थान खोदने पर एक बड़ा भारी पत्थर का अद्भुत घर निकला, उसमें एक सोने के हीराजटित हिंडोले पर सोने की पुतली सोने की वीणा बजाती और नाचती हुई निकली, उसका नाच देख कर आश्चर्य होने लगा।

षोदि थान पाषान। ग्रेह निकस्यौ अचंभम॥
हेम हीर हिंडोल। हेम पुत्तरी सुरंभम॥
हेम षध्य षाजिच। न्रत्य पुत्तरि जरि जंचिय॥
इह अचंभ पुत्तरी। जानि सर जीवन मंचिय॥

(१) मो॰--रहि।

आलिंग नयन करि सिथल गति। निद्दि दिष्षत मन नयन रुकि॥
आचंभ चंद देखन भयौ। रंभ कि न्रत्यन नार चुकि॥ छं०॥ ४४७॥

पुतली को देख गुरुराम का आश्चर्य करना।

दूहा॥ सुर उद्योत गुरराज निद्दि। पुत्तरि दिष्षि अचंभ॥
रति पति मन संमुह धरै। घट सु घटिय आरंभ॥ छं०॥ ४४८॥

चन्द का कहना कि यह मायारूपी है।

कहै चंद गुर राज सुनि। यह माया बल रूप॥
न करि मोह कर गहि सु दुज। म्रक्कि[1] बछोरिय नृप॥ छं०॥ ४४९॥

रावल का फिर चन्द से पूछना कि यह पुतली किसका अवतार है?

राज गुरू कहि चंद सों। हो कविराज विचारि॥
कोन रूप अवतार किय। क्यों लच्छिय पर नारि॥ छं०॥ ४५०॥

चन्द ने कहा कि ठहरिए तब कहूंगा और उसने बीर को स्मरण करके पुतली का भेद पूछा।

कवित्त॥ तन सु चंद बर दाइ। राज गुरु बचन अप्प सर॥
छिन इक धरौ विलंब। कहौं बर बीर पुच्छि नर॥
करि अस्तुति कलि बानि। बीर देवाधि देव सुनि॥
हम मनुष्य मय मोह। तास नहिं लहै अंत पुनि[2]॥
पुच्छइ सु देव आपुब्ब कथ। कोन रूप इह पुत्तरिय॥
रह लच्छि थान सुर कंम तन[3]। कोन काज बर सुद्धरिय॥ छं०॥ ४५१॥

देव का उत्तर देना कि यह ऋद्धि रानी है।

सुर बानीयं चंदं। सुप्रसन्नं देव मय कब्बी॥
इह तेजं रिधि रानी। मपेषे सु चंद गुरु कब्बी॥ छं०॥ ४५२॥

यह ऋद्धि साक्षात लक्ष्मी का रूप है इसे तुम बे खटके भोग

(१) मो०--मुरछि। (२) मो०--फुनि।
(३) मो०--तन।

सकते हो । यह देव बानी सुनकर चन्द प्रसन्न हुआ और रावल का संशय मिटा ।

कवित्त ॥ इह सु छत्य बल रूप । देव देखहु सु मोह मन ॥
माया काथा सु लच्छि । अनुरुरै सु लच्छि रत ॥
इह लच्छी बर रूप । तेज जाजुल्य प्रमानं ॥
इम बचंन इह रिद्धि । तुमहु सुप्रसंन सुथानं ॥
भोगवन काज संभरि सुपहु[1] । इह बिधिना अप कर गढ़िय[2] ॥
सुनि चंद बचन आनंद हुअ । राज गुरु संसय मिटिय ॥ छं० ॥ ४५३ ॥

इस हिंडोले को पूजन में रखना यह कहकर देव अन्तर्ध्यान हो गए । राजा फिर धन निकालने लगे ।

दूहा ॥ हिंडोलौ बर हेम करि । सिंघासन सुरराज ॥
वह प्रसंन होइ रष्षियो । पूजन घरि गुर राज ॥ छं० ॥ ४५४ ॥
षिन धरि माया अप्प दुरि । गए सु अंमर देव ॥
फिरि कड्ढन लग्गे सु द्रव । लहै सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ४५५ ॥

कुबेर के से भण्डार सा धन निकलना, सब को आश्चर्य होना और तब सुरंग को देखना ।

कबित्त ॥ कलस बंक चंबक्क । लोह संकर बर बंध्यौ ॥
रजत कलस अरु घीर । रत्त अंतर चित संध्यौ ॥
हेम कलस नग भरिग । कंति हीरन जनु भग्गी ॥
सुवर कलस पाषान । मद्धि मन तेज उपंगी ॥
आचिज्ज चंद बरदाइ भय । ग्रह कुबेर करि लष्षयौ[3] ॥
गुरराज राम भट्टह सचित । फिरि सुरंग सब दिष्षयौ ॥ छं० ॥ ४५६ ॥

पुतली का बिना कुछ बोले चन्द और रावल की ओर तीक्ष्ण कटाक्ष से देखना ।

कबित्त ॥ ता पच्छैं कवि चंद । राज गुर समुह दिष्यौ ॥

(१) मो०—सपहु ।
(२) ए० कृ० को०—घटिय । (३) मो०—लिष्षयो ।

ब्रह्म थांन शिव थान । थान पति नाक बिसट्ठौ ॥
नवति बीर ग्रह जोग । सिद्ध नव निद्ध सु अट्ठौ ॥
च्यारि अंग लच्छी प्रमान । धूम द्वादस अँग दिट्ठा ॥
सा अंग बाल पुत्तलि अचँभ । हाइ भाइ विभ्रम बद्धै ॥
लावंनि चित उत्तर रहति । टंक कटाछन चित्त चै ॥ छं० ॥ ४५७ ॥

चन्द और रावल का मूर्छित होकर गिरना । कुछ देर में सँभल कर उठना ।

कवित्त ॥ मुच्छि पस्यौ कवि चंद । मुच्छि दुजराज पस्यौ कल ॥
नाच भंग तन भंग । अंब झल्ल मलिय नैन जल ॥
उष्ट कंप तन स्वेद । भेद बल बिन [1]कवि किन्नौ ॥
चढ़िय अंग पिंडुरिय । गात सोभत जल भिन्नौ ॥
सिथल्ल चरन गति भंग ह्वै । वै विलास अभिलाष गति ॥
जग्गेव मुच्छि दुजराज सब । देव एव चिचं सुभति ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

उठने पर राज गुरु का पृथ्वीराज से पूछना कि असंख्य धन निकला अब क्या आज्ञा है ।

दूहा ॥ मुछि उठ्यौ गुर राज तब । पुछ्यौ संभरि बार ।
जु कछु सुबर अज्ञा न्रपति । धन निकस्यौ अप्पार ॥ छं० ॥ ४५९ ॥

धन के कलश आदि का वर्णन । रावल और पृथ्वीराज का एक सिंहासन पर बैठना ।

कवित्त ॥ सत्त[2] कलस चंतकिय । मत्त[3] अध मंडि रजक्किय ॥
हेम कलस सत पंच । कलस पाषान सतक्किय ॥
सत्त अट्ठ बाजिच । सहस अध पगा प्रमानं ॥
हेम हीर हिंडोल । एक आचंभ सु थानं ॥
जान्यो न देव देवाधि गति । दैव जोग सिंहासनह ॥
चिचंग राव रावर समर । सम सुराज प्रथु आसनह ॥ छं० ॥ ४६० ॥

(१) ए० कृ० को०--कंठ ।
(२) ए० कृ० को०--सित्त ।   (३) ए० कृ० को०--सित ।

एक दिन संध्या के समय देवी के मठ के पास पृथ्वीराज और रावल आए।

एक सुदिन संध्या समय। विंभ्मासनि के थान॥
एक अचंभो देखियै। जो आवै चहुआन॥ छं० ॥ ४९१॥

उभय राज बर वत्त करि। चले सुथानक देव॥
निकट देखि देवी सुभट। गए सिघ बर सेव॥ छं०॥ ४९२॥

आए नृप चित्रंग पति। अरु संभरी नरिंद॥
तब लगि राम सु विप्र ने। करिय अचिज्ज सु चंद॥ छं०॥ ४९३॥

पृथ्वीराज और रावल के शोभा और गुण का वर्णन।

छंद भुजंगी। समं चक्कियं समर रावर नरिंदं। तिनं वाम भुज्जं समं सूर नंदं॥
घनं रुध्य मध्यं दोऊ बीर राजं। तिनं देषतें वामता काम लाजं॥ छं०॥ ४९४॥
उठी मुच्छ आनं धुनी लग्गि गेनं। मनों चंद बीयं सियं[1] कीय छेनं॥
दोऊ राज राजन्नता राज सक्की। दोऊ भ्रंम षंडे जमं डंड चक्की॥ छं०॥४९५॥
दोऊ रत्त[2] माया ननं अग्ग लग्गै। मनों कंज[3] पत्तं जलं भिंटि भग्गै॥
उभै सूर नूरं विराजंत राजं। जिनै सोभियं कंठ रत्त छिंदु लाजं॥ छं०॥ ४९६॥

वेद मंत्र से दोनों राजाओं के लिये पूजा की और दस महिष बलि चढ़ाया। चतुःषष्टि देवि ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया।

कवित्त। वेद मंत्र दुज राम। उभय कारन क्रित किन्नौ॥
समर समरसन कीन। राज उनचार सुलिन्नौ॥
दस महिष्ष बल भंजि। चंद मंत्रं प्रारंभे॥
नृप आज्ञा तन दीन्। सस्त्र मंगै प्रारंभे॥
आरंभ मंत्र चवसट्ठि जगि। दै हुंकारव सद्द हुअ॥
गत दंद चंद चंदाननहु। मात प्रसंनन मत्त जुअ॥ छं०॥ ४९७॥

---

(१) ए.—सियंकी च। (२) ए—दत्त।
(३) ए. कृ. को.—कंप। (४) मो.—मग।

राजा ने सिंहासन हाथ में लेकर देवी की स्तुति की देवी ने प्रसन्न होकर हुङ्कार किया।

दूहा ॥ सिंघासन प्रिथिराज ले। मात बरंनन कीन ॥
मात प्रसन चहुआन कौं। जै हुंकारव दीन ॥ छं० ॥ ४६८ ॥

देवी पृथ्वीराज को आशिर्वाद देकर अन्तर्ध्यान हो गई।

कवित्त। तुम प्रसाद चवबट्टि। सध्य सिंघासन अप्पिय ॥
बल अप्पौ प्रथिराज। कित्ति कलसां लगि थप्पिय ॥
बिय सपत्त लभ्भै न। पुच लभ्भै सु थान तुम ॥
मन सु बंस जय लभै। सज्ज अनुहत्त चित्त जुम ॥
पूजनह थान रविवार कहि। आदिष्ट मात अंतर भइय ॥
सुभ लच्छि सुभग्गह आइ तँह। बर सुहेम सन्यौ दइय ॥

पृथ्वीराज़ ने सिंहासन और लक्ष्मी मँगाकर रावल के साम्हने रक्खी। रावल जे कहा कि यह लक्ष्मी तुम्हारे पास आई है, तुम्हारी है। पाटन के यादव राजा की कुवँरि सशिव्रता की सगाई का बिचार ॥

कवित्त। मँगि सिंघासन राज। लच्छि चतुरंग सु अप्पिय ॥
समर सिंघ रावर नरिंद। अग्गैं धरि जप्पिय ॥
रंजि राज आवुट्ठ। राज दिख्खिय दिस आइय ॥
बर पट्टन जद्दो नरिंद। लिखि दूत पठाइय ॥
ओनान राग चहुआन तुम। कथा जंपि ससिवृत्त किय ॥
पावस प्रमान कहिय बिकट। सुबर राज यों मत्त किय ॥ छं० ॥ ४७० ॥
सिंघासने सुरेसं। अह सु लच्छि सा चयं ग्रवियं ॥
सो अग्गै बर सिंघं। मुक्के राज परिकरं सब्बं ॥ छं० ॥ ४७१ ॥

रावल समरसिंह का धन लेने से इंकार करना और कहना कि यह धन तुम्हें प्राप्त हुआ है सो तुम्हीं लो।

कवित्त ॥ रंजि राज दष्षिन गिरेस। राजन प्रति बुल्लिय ॥
तुम सु बड़े राजिंद। कथा गुन कथै सु भल्लिय ॥

हम सु तुम्म सगपंन[1]। जानि आए तुम सथ्थं॥
तुम लहुए लहुआंन। मुष्ष कह्यौ सु अरथ्थं॥
तुम कहिय बत्त अब जो हमैं। तुम समान नहिं प्रीति भति॥
उच्चरौ बचन तुम राज बर। सो हम हृदय सुमत्ति गत्ति॥ छं० ॥ ४७२ ॥

पृथ्वीराज ने जब देखा कि धन लेने की बात से रावल को क्रोध आ गया तब उन्होंने अनुचरों को धन ले लेने को कहा।

दूहा ॥ अति क्रोधित रावर समर। जब दिष्यौ प्रथिराज॥
तब अनुचर प्रति उच्चरिय। लेहु लच्छि धरि साज॥ ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

पृथ्वीराज से रावल का घर जाने के लिये सीख मांगना पृथ्वीराज का कहना कि दस दिन और ठहरिए शिकार खेलिए। रावल का आग्रह करना।

कवित्त ॥ तबहि जुग्गबर समर। राज राजन प्रति बुल्लिय॥
हम सु सीष संभवैं। चलैं चित्रकोट सु थल्लिय॥
तब राजन उच्चरिय। रहौ दस दिन सब मिल्लिय॥
रमैं सरस आषेट। करैं क्रीला धर दिल्लिय॥
तब कहत राज आहुट्टपति। अहो राज राजंन[2] गुर॥
हम चलें राज काजंग गुर। भर सु सब्ब सम नेह उर॥ छं० ॥ ४७४ ॥

प्रेमाश्रु भरकर रावल ने विदा मांगी, पृथ्वीराज उठकर गले से गले मिले।

दूहा ॥ भरे सु सकल सनेह करि। रावर मंगिय सीष॥
तब सुराज राजंन गुर। उठि मिलि सज्जन ईष॥ छं० ॥ ४७५ ॥

पृथ्वीराज ने जाने की सीख देकर कहा कि हम पर सदा ऐसा ही स्नेह बनाए रहिएगा।

देत सीष प्रथिराज न्रप। इह बुल्लिय गुर राज॥
होत सगप्पन ग्रेह रह। रष्षन रहियौ[3] काज॥ छं० ॥ ४७६ ॥

(१) ए० कृ० को०—सगपन। (२) मो०—राजग।
(३) मो०—रहिऊं

रावल ने कहा कि हम तुम एक प्राण दो देह हैं, हमको तुम से बढ़कर कोई प्रिय नहीं है ।

नृप सन रावर उच्चरिय । तुम सम नेह न कोइ ॥
जीव एक पंजर उभय । कंचन लोहै दोइ ॥ छं० ॥ ४७७ ॥

रावल समर सिंह गद्गद हो बिदा हुए, और अपने देश की ओर चले ।

तब सनेह नृप नैन भरि । अंसुअ आप सु राज ॥
समर सिंघ चित्तौर कौं । दिय आया सु समाज ॥ छं० ॥ ४७८ ॥

रावल को विदा कर राजा ने चन्द और कैमास को बुलाया और रावल के यहां हाथी आदि भेट भेजा ।

जब रावर सीषह सु करि । चढ़ि दष्षिन गिर राह ॥
तब सुराज प्रथिराज गुर । बोलि चंद बिरदाह ॥ छं० ॥ ४७९ ॥

कवित्त ॥ तबहि राज प्रथिराज । बोलि कैमास चंद बर ॥
दिय आया बर सेव । कीण आनस राव गुर ॥
*जुगम सिंघ बर क्रमिय । लेहु परिकर करि वेसं ॥
गय सुपंच मद गंध । सच हय साज सुरेसं ॥
लै चले चंद बरं दाइ बर । जहां राज रावर सुभर ॥
लैषरी बसत अनेक सुर । करि अस्तुति मुष कोटि तर[१] ॥ छं० ॥ ४८० ॥

रावल ने चन्द को मोती की माला देकर विदा किया और आप चित्तौर को कूच किया ॥

दूहा । राजन बर रष्षिय प्रसन । कहिय सच्च सामंत ॥
माल मुक्ति दिय चंद कवि । चल्यौ चित्रगढ़ भंति ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

कैमास और चन्द का राजा के पास आना और राजा का दिल्ली चलना ।

मो —"मग सिंह जिहि क्रमिय" ।

(१) मो·—नर ।

अरिल्लधार ॥ फिरि आये कैमास चंद बर। मिले राज नयं पूर्न प्रेम भर ॥
ढिल्ली पुर आवन चहुआनच। अति तोरन उच्छव संमानच ॥ छं० ॥ ४८२॥

कैमास ने सब धन हाथियों पर लदवाया। राजा खट्टू बन में शिकार खेलता चला।

कवित्त ॥ बंधि राज कैमास। सोइ अंतर सिज कीनच ॥
द्रव्य ताम उभरीय। भरिय कर चासे तीनच ॥
एकादस गज पूर। पंथ संभरि पुर थानच ॥
चासुर सत संक्रमे। भरिय भंडार विधानच ॥
संचरिय राज मृगया बहुरि। पुर षट्टू पारस रवन ॥
कर पच छुट्ट जहां[1] सुबच। आइ राज भेच्या सुजन ॥ छं० ॥ ४८३ ॥

पृथ्वीराज ने बहुत से धन का बराबर भाग कर के सब सामंतों को बांट दिया। सरदारों का बांट का वर्णन।

बंटि दियौ प्रथिराज। भाग किन्ने सच अब्बर ॥
एक भाग कैमास। तीय अप्पे नरसिंघ नर ॥
पंच भाग चावंड। भाग अट्ठौ बर कन्हं ॥
द्वादस भाग नरिंद। दियौ परिगच सब छंनं ॥
प्रथिराज दिष्ट आवै नहीं। चिकट कुंभ ज्यों जल अभिद ॥
लग्गै न नीर पचच कमल। मिटै न मति कीवै उछिद ॥ छं० ॥ ४८४ ॥

दूहा ॥ एक भाग दिय विप्र कर। करै राज सुष कंद ॥
धन लभ्भिय प्रथिराज धन। कथी कथ्थ कवि चंद ॥ छं० ॥ ४८५ ॥

बड़ी धूमधाम से दिल्ली के पास पहुंचे, राजकुमार ने आगे से आकर दण्डवत किया। बड़ा आनन्द उत्सव हुआ।

कवित्त ॥ अति तोरन उच्छवह। आइ ढिल्लीय निकट बर ॥
रेंन कुमार सु आइ। सुबर सामंत मधुत्तर ॥
सत्त दूच असवार। कच्चन नामी अग्गै भर ॥
छंडि तुरिय पय लग्गि। दीय सा चढ़न सीष गुर ॥

(१) मो०— जटाजूट बद्ध।

बंदै व चढ़ै तुरियं समथ। आए नंद उछाह घर॥
जित्ते मलेच्छ लभ्यौ सुधन। अति तोरन उच्छव नयर॥ छं०॥ ४८६॥

जेठ सुदी तेरस रविवार को राजा दिल्ली आए।

गाथा॥ अति तोरन उच्छाहं। आए जेठ सुदि त्रयोदसियं॥
सुभ जोगं रविवारं। गहनं साह बढ्ढि जस भारं॥ छं०॥ ४८७॥

महल में आने पर रानियों ने आकर मुजरा किया।

॥ ग्रहन साहि जस बढ्ढिय धर। आइ धवल मधि साल॥
त्रिया सकल आई सु मद्धँ। मुजरा करन सु चाल॥ छं०॥ ४८८॥

दाहिमा, आदि रानियां न्योछावर कर राजा की सीख पा अपने महल में गईं।

गाथा॥ दाहिम्मी प्रथु भट्टी। पुंडीरी आइ नृप ढिग्गं॥
करि न्यौछावरि सकलं। नृप दी सीष गइय ग्रह अप्पं॥ छं०॥ ४८९॥

रात को राजा पुण्डीरी के महल में रहे। सबेरे बाहर आए, मन में शाह के दण्ड का विचार उठा।

राजा धवल संपत्तं। गये ग्रह रति तथ्य पुंडीरं॥
करि रस अनंग क्रीडा। बढ्ढिय सुवेलि सुमन मन मथी॥ छं०॥ ४९०॥
सुमन वेलि मन मथ्थी। करि क्रीडा कुसम बर प्रातं॥
अंतर साल पयट्टं। मन विचार साहयं दंडं॥ छं॥ ४९१॥

बादशाह से जो घोड़े आदि दण्ड लिया था सब सरदारों में बांट दिया। अपने पास केवल यश रक्खा॥

कवित्त॥ दंड सुबर पतिसाह। दीय हय बंटि राज बर॥
बीस सुभर हय कन्ह। बीस हय उंबर निठ्ठुर॥
बीस दूअ रघुवंस। बीस उभय दाहिम्मं॥
अत्तताइ अल्हन पवाड़। बीस हय जैत गुरंमं॥
औरह सु सकल भर बीस अध। बंटि बंटि दिय सबन भर॥
रष्पन सु गल्ह राजंद गुर। जस रष्यौ निज बर सुकर॥ छं०॥ ४९२

गाथा ॥ जस रष्षौ कर अप्पं। मुत्तिय माल लालयं द्रव्वं ॥
आरोही पुर दत्तं। कवि दीनौ सु अवर कर साहं ॥ छं० ॥ ४९३ ॥

दूहा ॥ सकल दंड पतिसाह कौ। बंटि दियौ सब सूर ॥
नपत राज अति षचिवर। ग्रीषम विक्रिय पूर ॥ छं० ॥ ४९४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पथिराज रासके षट्टू बन मध्ये आखेटक रमन धनसंग्रहन पातिसाहबंधनं धनकथा नाम चौबीसमो प्रस्तावः ॥ २४ ॥